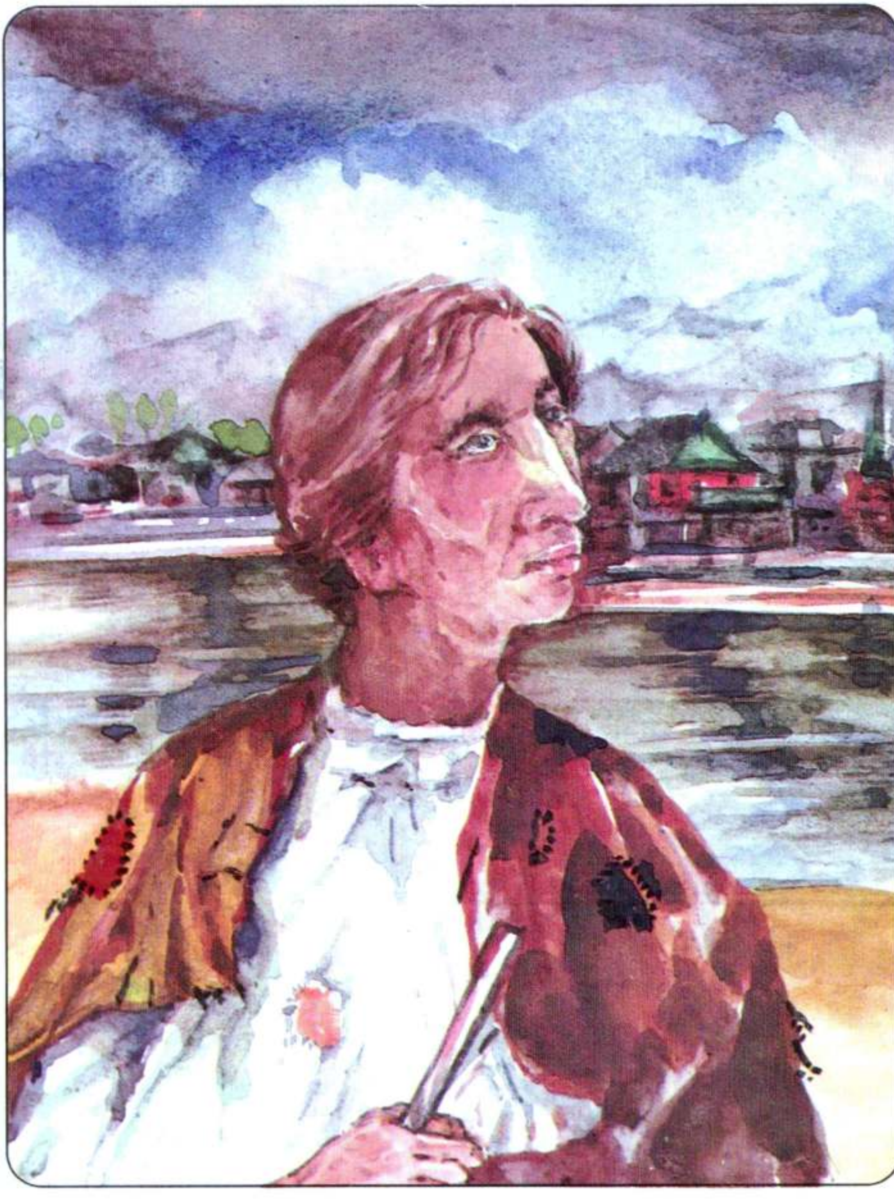
विश्व कथा साहित्य

● इटली

फ़ांटामारा

इग्नाज़ियो सिलोनी



विश्व कथा-साहित्य

देश-भर के सभी स्टॉलों पर उपलब्ध। न मिलने पर आप पत्र लिखकर वी.पी.पी. द्वारा हमसे मंगवाएं। आप कहीं से भी इस सीरीज़ की पुस्तकें लें, हमें अपना पता अवश्य भेज दें, ताकि आपको हर नई पुस्तक छपने पर सूचना दे सकें। विश्व कथा-साहित्य से चुनी हुई अमर कृतियों की इस शृंखला के स्थायी सदस्य बनकर निरंतर पठन सुख पाएं और उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह बनाएं।

इग्नाज़ियो सिलोनी

फ़ांटामारा

इटली के संघर्षशील प्रख्यात उपन्यासकार
के अमर उपन्यास का समूचा
हिन्दी अनुवाद

हिन्द पॉकेट बुक्स

विश्व कथा-साहित्य

फ़ांटामारा : इग्नाज़ियो सिलोनी
अनुवाद : श्यामू संन्यासी
सम्पादन : मोहिनी राव, डॉ. नफ़ीस आफ़रीदी
कला-पक्ष : ज्योतिष दत्ता गुप्ता

प्रथम संस्करण : 1996
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी.टी. रोड, दिलशाद गार्डन, (शाहदरा), दिल्ली-110 095
लेज़र : कम्प्यूटेक सिस्टम, मानसरोवर पार्क, दिल्ली-110 032
मुद्रक : कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110 032

FONTAMARA (Fiction) IGNAZIO SILONE

ISBN 81-216-0459-1

परिचय

इटली के महान् साहित्यकार इग्नाज़ियो सिलोनी का असली नाम यह नहीं था। यह तो उनका लेखक की हैसियत से उपनाम था। उनका अपना नाम था—सेकोन्दो त्रानक्वील्ली। वह अपने लेखकीय नाम से इटालियन समाज और सरहदों के पार तक मशहूर हुए।

उन्होंने अपने जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखे। वह संघर्ष की आग में तपा हुआ सोना बने। उनकी आवाज़ में सच्चाई थी, यथार्थ था। उनकी लेखनी में ओज था, लोक-लुभावन कला थी। एक पहलू में लेखक और दूसरे में राजनीतिज्ञ इग्नाज़ियो वास्तव में अपने जिस मार्ग पर चल रहे थे, एक ही तरफ़ जाता था; और वह था गरीब-गुरबा, मजूर-किसान के लिए आवाज़ उठाना, उसके भले, उसकी ख़ुशहाली के लिए प्रयत्न करना। इसीलिए उनका जीवन और साहित्य दोनों ही जनता को समर्पित था।

उन्हें साम्यवादी लेखक कहा गया। उन्होंने इटली की कम्युनिस्ट पार्टी के गठन में भी सहायता की। काफ़ी समय तक इसके साथ सक्रिय भी रहे। इसका मतलब साफ़ था कि वह फ़ासीवादी सत्ता के ख़िलाफ़ थे। मानव मात्र की स्वतंत्रता और उसकी अस्मिता की रक्षा की उनमें गहरी

चाहना थी। वह मानते थे कि मनुष्य का श्रम समाज के लिए उसका सच्चा योगदान है, फिर वह फ़ासीवादी गुलामी क्यों सहे ?

इन्हीं प्रखर साम्यवादी ने आख़िर एक दिन उसी पार्टी को छोड़ दिया, जिसे कुछ नेताओं के साथ मिलकर उन्हीं ने बनाया था। विचित्र दिन थे वे। उन्होंने पार्टी ही नहीं छोड़ी, बल्कि देश भी छोड़ दिया और स्विट्ज़रलैण्ड में जा बसे। वहां रहते हुए भी उन्होंने फ़ासीवाद का विरोध नहीं छोड़ा। यहां राजनैतिक सक्रियता तो नहीं थी, पर वह तो लेखक थे, फिर चुप्पी किस बात की। उन्होंने ख़ूब लिखा। वहां बैठकर भी वह इटली में सामाजिक सुधारों पर ज़ोर देते रहे और फ़ासीवाद के विरोध में उपन्यास लिखे। इन उनन्यासों ने उन्हें जन-जन में और अधिक लोकप्रिय बना दिया। साथ ही वह व्यंग लेख भी लिखते रहे, जो बड़े ही तीखे और तिलमिला देने वाले थे।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया। वह वापिस इटली लौट आए। अब नवनिर्माण का एक नया सिलसिला था। सामाजिक और राजनैतिक बदलाव के दिन थे; और वह डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट पार्टी के नेता बने, जिसका प्रमुख उद्देश्य समाजवाद की स्थापना करना और जन-सामान्य को समान अधिकार दिलाना था।

इसके बाद भी लेखन का सिलसिला जारी रहा। उन्होंने कई उपन्यास लिख डाले और फिर एक नाटक भी लिखा। इग्नाज़ियो सिलोनी ने अपनी आत्म-कथा पर आधारित एक उपन्यास भी लिखा। इस बेबाक और उत्कृष्ट उपन्यास की बहुत प्रशंसा हुई। वास्तव में वह मूलतः उपन्यासकार थे और सच्चाई के महान् योद्धा, इसलिए उनका लेखन सदा-सदा ज़िंदा रहने वाला भी है और यादगार भी।

'फ़ांटामारा' उनका अमर उपन्यास है, बल्कि केवल इसी रचना से स्पष्ट हो जाता है कि उनमें ग़रीब, मज़दूर और किसान की ज़िंदगियों को ऊंचा उठाने की असीम ललक थी तथा वह संघर्ष और स्वतंत्रता के लिए लिखते और लड़ते रहे।

'फ़ांटामारा' एक गांव था। जहां ग़रीबी, बीमारी और भुखमरी का राज था। वहां फटे कपड़ों, धूल भरे बालों और बुझी हुई आंखों वाले लोग

रहते थे। इसी गांव के बीचोंबीच एक जर्जर गिरजाघर था। एक झील थी फ़्युसिनो। इसे खेती के लिए सुखा दिया गया था। इसी के उत्तर में बसा था फ़ांटामारा।

वहां इटली की सर्वश्रेष्ठ उपजाऊ ज़मीन थी, पर उस पर भयानक शोषण और अत्याचार हुए। किसानों को रौंदा गया। कुछ किसान विदेश चले गए और नहीं लौटे। जो वहां रहे, उन्होंने बहुत अधिक दुख झेले और अंत में एक सवेरा आया, जो सारे जन-जीवन को रोशनी से भर देता है और उनके लिए नवयुग के नवगान लाता है।

❑

एक

पिछले साल एक जून को फांटामारा में पहली बार बिजली नहीं जली। दूसरी, तीसरी और चौथी जून को भी फांटामारा बिना बिजली के ही—अंधेरा—रहा।

ऐसा कई दिनों और महीनों तक जारी रहा। अंत में फांटामारा फिर से चांदनी रात का अभ्यस्त हो गया। चांद के उजाले से बिजली के उजाले तक आने में पूरे सौ वर्ष लगे थे—इन सौ वर्षों में तेल और पेट्रोल का ज़माना भी था। परंतु हमें बिजली के उजाले से फिर चांद के उजाले में ले जाने के लिए केवल एक ही सांझ काफ़ी थी।

जवानों को यह किस्सा नहीं मालूम, पर हम बड़े-बूढ़े जानते हैं। पिडमांटेसी शासन के पूरे सत्तर वर्ष हम दक्षिणी किसानों के लिए जो नए परिवर्तन लाए वे कुल दो थे—बिजली और सिगरेट। बिजली तो उन्होंने फिर से ले ली; और रही सिगरेट, सो उन्हें पीनेवालों का दम घुटे, हमारी बला से। हमारी चिलम भली और हम भले।

पहले-पहल बिजली का कट जाना हमारे लिए कोई अचंभा नहीं होना चाहिए था, फिर भी वह अचंभे से कम नहीं था।

फांटामारा में चूंकि कभी किसी ने बिजली के लिए कुछ ख़र्च नहीं किया, वह भी एक प्राकृतिक देन की तरह ही समझी गई थी। महीनों किसी ने उसका बिल नहीं चुकाया। सच तो यह है कि उगाही करनेवाला ही मासिक बिल और हिसाब न चुकानेवालों के नाम नोटिस तामिल करवाने नहीं आया था। काग़ज़ के

जो टुकड़े वह बांट जाता, उनका उपयोग हम पाइप-चिलम साफ़ करने के लिए करते थे। पिछली बार जब वह आया तो किसी तरह सही-सलामत बचकर निकल गया। यह उसका सौभाग्य ही था कि बस्ती के बाहर उसे गोली न लगी।

वह वीरता की अपेक्षा विवेक को ही ज़्यादा ठीक समझता था। फांटामारा में वह उस समय आता जब कि आदमी काम पर चले जाते और केवल स्त्रियां और बच्चे ही घर रह जाते थे। वह बेहद विनम्र था। एक मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट के साथ वह अपने कागज़ के टुकड़े बांट जाता।

"यह ले लो," वह कहता, "इससे तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। घर-गृहस्थी में कागज़ का टुकड़ा हमेशा काम ही आता है।"

लेकिन खाली विनम्रता काफ़ी नहीं थी। एक दिन नीचे, हमारे स्थानीय शहर में—फांटामारा में आना तो उसने बहुत पहले से ही छोड़ दिया था—एक गाड़ीवान ने उससे बिलकुल साफ़-साफ़ कह दिया कि यदि एक गोली उस पर छोड़ी गई तो वह इन्नॉसेंजो ला-लेग्गी—यह उसका नाम था—पर व्यक्तिगत न होकर आमतौर से करों पर होगी। लेकिन यदि गोली निशाने पर ठीक लगी तो खत्म इन्नासेंज़ो ला-लेग्गी होगा, कर नहीं। इसलिए उसने आना ही बंद कर दिया था और किसी को उसका अभाव न खटका। फांटामारावालों के ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई करना उसने बेकार समझा।

उसने कहा—यदि जुएं पकड़नी संभव हों तो क़ानूनी कार्रवाई निश्चय कारगर हो सकती है। परंतु ऐसा करने का कोई क़ानूनी साधन न होने से बिजली काट देना ही एकमात्र उपाय है।

बिजली पहली जनवरी को काटी जानेवाली थी। तब बढ़ाकर पहली मार्च कर दी गई, फिर पहली मई और तब पहली जून तक बढ़ाई गई। अंत में पहली जून को बिजली काट दी गई।

स्त्रियों और बच्चों के ध्यान में, जो कि घर पर रहते हैं, यह बात बहुत देर में आई। लेकिन काम पर से घर लौटते समय हम आदमियों का ध्यान इस ओर अवश्य गया। हममें से कुछ कारखाने गए थे और बड़ी सड़क से घर लौट रहे थे। कुछ कब्रिस्तान गए थे और पहाड़ की ओर से घर आ रहे थे। कुछ बालू खोदने गए थे और नाले की ओर से आ रहे थे। और दूसरे, जो दिन मजूरी के लिए गए थे, सब ओर से घर लौट रहे थे। अंधेरा बढ़ता जा रहा था। पड़ोस के गांवों की बिजलियां हमने जलती देखीं। लेकिन फांटामारा वृक्षों, झाड़ियों और घूरों में एकरूप हो अंधकार में खो रहा था। हम एकदम समझ गए कि माजरा क्या है। अचंभा

होते हुए भी यह अचंभा नहीं था।

बच्चों के लिए यह अच्छा खासा मज़ाक़ था। हमारे बच्चे मज़ा लूटने के अवसर बहुत कम पाते हैं, इसलिए जब कभी मौका मिलता है वे उसे नहीं छोड़ते, जैसे—मोटरसाइकिल का गुजरना, गधों की प्रणय-चेष्टा या किसी चिमनी का जल उठना।

जब हम लौटे तो बेचारे जनरल बाल्डीसेरा को निराश पाया। गर्मियों में देर तक वह अपने घर के सामने सड़क की बिजली के उजाले में जूते दुरुस्त किया करता था। बच्चों के एक झुंड ने उसकी टेबल घेर ली, उसकी कीलें, और रांपी और बटार, उसका मोम और सन और चमड़े के टुकड़े बिखेर दिए और गंदे पानी की बाल्टी उसके पावों पर उलट दी। वह पास-पड़ोस के सभी संतों—देवी-देवताओं के नाम ले-लेकर ज़ोर-शोर से शाप दे रहा था। और जानना चाहता था कि इस उम्र में उसने ऐसा क्या किया है कि आधा अंधा बेचारा वह सड़क की रोशनी से भी वंचित कर दिया जाए, और बादशाह हम्बर्ट इस उपद्रव के बारे में क्या सोचेंगे ?

यह अनुमान लगाना कि बादशाह हम्बर्ट इसके बारे में क्या सोचेंगे, कठिन था।

हां, बहुत-सी स्त्रियां भी थीं जो ज़ोर-ज़ोर से शिकायत कर रही थीं। नाम लेने से कोई फायदा नहीं। वे या तो अपने घरों के सामने ज़मीन पर बैठी थीं, या बच्चों को दूध पिला रही थीं या खाना पकाने में लगी थीं। उनमें से कुछ इस तरह बिलख रही थीं मानो हाल ही में कोई मर गया हो। वे बिजली कटने पर रो रही थीं, मानो अंधकार ने उनकी विपत्ति अधिक दयनीय बना दी हो।

मैं और माइकेल ज़ोम्पा मेरीटा सासनिरा के शराबखाने के बाहर टेबल के पास आकर रुके ही थे कि ग्यासोबी लोसुर्डो अपनी गधी के साथ। जिसे वह थान पर जनने ले गया था, आया। थोड़ी ही देर बाद पांजियो पिलाटो अपनी पीठ पर गंधक की पिचकारी लटकाए आया, और तब ऐंटोनियोरनाक्व्यो और बाल्डोविनो स्यारपा, जो क़लम कर रहे थे, और ग्यार्सिटो बारलेट्टा, बेनेर्डो सेंटो, सिरोज़ी रौंडा, पेपासिस्टो और दूसरे वे जो बालू खोदने गए थे, आ पहुंचे। आते ही हम सब वही पुरानी बातें दुहराकर, जिन्हें पहले सैकड़ों बार कह चुके थे, क्योंकि ये बातें नहीं बदलतीं—बिजली के बारे में और नए करों, पुराने करों, जिला करों, सरकारी करों—सभी तरह के करों के बारे में बातचीत करने लगे। एकाएक हमारा ध्यान एक अजनबी की ओर गया जो बाइसिकिल लिए हमारे बीच खड़ा था। उसके बारे में यह अंदाज़ लगाना कठिन था कि ऐसे समय वह अजनबी कौन हो सकता है।

वह बिजली कंपनी का आदमी नहीं था, और न ज़िला-अफ़सर ही था; न वह पुलिस थाने ही का आदमी था। अच्छी तरह हज़ामत बने हुए चेहरे और छोटे-से मुंहवाला वास्तव में वह एक बहुत ही चपल युवक था। उसका हाथ, जिससे वह अपनी बाइसिकिल का हत्था पकड़े था, छोटा और छिपकली के निचले हिस्से जैसा चिपकने वाला था। वह सफ़ेद स्पैट्स[1] पहने था।

हमने बातचीत बंद कर दी। अवश्य ही वह नाटा आदमी किसी नए कर की घोषणा करने आया था। इसमें किसी तरह का कोई संदेह हो ही नहीं सकता। न इसमें कोई संदेह था कि वह अपना समय पूरी तरह से बर्बाद करेगा और यह कि उसके काग़ज़ के टुकड़े भी इन्नॉसेंजो ला-लेग्गी के काग़ज़ों का ही अनुसरण करेंगे। अनिश्चय केवल इस बात पर था कि दुनिया में ऐसा क्या बाक़ी बचा है जिस पर नया कर लगाया जा सके ? हमने बहुत सिर खपाया, पर किसी के ख़्याल में कुछ न आया।

इसी बीच आगंतुक ने दो-तीन बार एक मूर्खतापूर्ण और बकरा की-सी आवाज़ में पूछा कि कोई उसे वीर सॉसनिरा की विधवा के घर का रास्ता बतला सकता है ?

वीर सॉसनिरा की विधवा वहीं थी। वह शराबखाने का दरवाज़ा अपने शरीर द्वारा, जो गर्भ-धारण से बेढंगा हो रहा था, रोके खड़ी थी। उसके पति की मृत्यु के बाद से यह उसका तीसरा या चौथा गर्भ था। उसका पति उसके लिए चांदी का तमग़ा और एक पेंशन छोड़ गया था, पर ये तीन-चार गर्भ उसने नहीं छोड़े थे। एक वीर पति की विधवा होने के कारण सॉसनिरा को अक्सर महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से व्यवहार करने के मौके आते रहते थे। एक बार, स्थानीय नगर में एक पवित्र राष्ट्रीय उत्सव के समय, सॉसनिरा को मंच पर बिशप (धर्माध्यक्ष) के पास जगह दी गई थी। उसकी संतानों की शकल सदा मनहूस और डरावनी हुआ करती थी। धर्माध्यक्ष अंधा नहीं था।

जब उसने उससे पूछा कि क्या उसने फिर से शादी कर ली है तो उसने इनकार किया और बोली कि नहीं, शादी नहीं की। धर्माध्यक्ष ने साश्चर्य उसके गर्भ की ओर, जिससे इनकार नहीं किया जा सकता था, संकेत किया। मेरीटा ने लापरवाही से उत्तर दिया, "यह मेरे मृत पति का उत्तर-दान है।"

इससे यह तो स्पष्ट है कि सासनिरा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ व्यवहार

---

1. स्पैट्स—पांवों को गर्म रखने के लिए जूतों पर पहना जानेवाला एक मोटा कपड़ा।

करने में कुशल थी। उसने अजनबी को मेज़ के पास बैठने की जगह दी। अपनी जेब से कागज़ों का एक बड़ा पुलिंदा निकालकर उसने मेज़ पर फैला दिया।

कागज़ों को देखकर हमारा रहा-सहा संदेह भी दूर हो गया। वे कागज़ कर-संबंधी ही थे। पर यह सवाल अभी रह ही गया था कि कर कौन-सा था ?

अजनबी ने बोलना शुरू किया। सुनकर हम एकदम समझ गए कि वह शहर का रहनेवाला है। यहां-वहां से कुछ शब्द हमने समझ भी लिए, पर हमारी समझ में यह नहीं आया कि वह कौन-से कर के बारे में बोल रहा है।

देर हो रही थी। हम अपने-अपने औजारों-सहित—कुदाली, फावड़े, दंताली (जंट्रा) और बेलचे तथा गंधक की पिचकारी और ग्यासोबी लोसुर्डो की गधी-सहित—वहां थे। हममें से कुछ चले गए। वेनेर्डी सेंटो, ग्यासिंटो बार्लेट्टा और पेपासिस्टो चले गए थे। बाल्डोविनो स्यारप और ऐंटानियोरनॉक्च्या भी थोड़ी देर तक उसका भिनभिनाना सुनकर चले गए। ग्यासोवी लोसुर्डो ठहरना चाहता था, लेकिन गधी ने, जो थकी हुई थी, उसे घर जाने को बाध्य किया।

उस शहरवाले के सिवा वहां हममें से तीन और रह गए थे।

वह बोलता रहा, लेकिन एक शब्द भी किसी की समझ में नहीं आया। मेरा मतलब है कि यह किसी के पल्ले न पड़ा कि नया कर किस पर लगा है या ऐसी क्या चीज़ है जिस पर कर लगाया जा सकता है।

अंत में वह आदमी चुप हो गया। वह मेरी ओर—क्योंकि मैं ही उसके सबसे अधिक समीप था—मुड़ा और एक पेंसिल तथा कोरा कागज़ बढ़ाकर बोला, "कृपया दस्तख़त कीजिए।"

वह हमारा दस्तख़त क्यों करवाना चाहता था ? हम उसकी बात के कुल जमा दस शब्द भी नहीं समझे थे, और अगर समझते होते तब भी ऐसा था ही क्या जिसके लिए हम दस्तख़त करते ?

उसने मेरे पासवाले आदमी की ओर कागज़-पेंसिल बढ़ाई और फिर एक बार कहा, "कृपया दस्तख़त कीजिए।"

मेरे पासवाले ने भी कोई जवाब नहीं दिया। शहरवाला तीसरे आदमी की ओर मुख़ातिब हुआ और फिर एक बार कागज़-पेंसिल बढ़ाकर बोला, "पहले तुम दस्तख़त करो। यदि तुम दस्तख़त कर दोगे तो दूसरे भी कर देंगे।"

वह मानो पत्थर की दीवाल से बोल रहा था। किसी ने हूं-चूं तक न की। हमें यह ज़रा भी नहीं मालूम था कि यह सब किस बारे में है, इसलिए हमें क्या पड़ी थी, जो अपने दस्तख़त करते ?

वह आदमी ज़रूर ही गुस्सा हो गया था। उसकी आवाज़ से हमें लगा कि वह हमारा अपमान कर रहा है। लेकिन उसने करों के बारे में कुछ नहीं कहा। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह नए कर के बारे में बोलना शुरू करे, लेकिन वह दूसरी चीज़ों के बारे में ही बोलता रहा। एक बार उसने अपनी बाइसिकिल में बंधा चाबुक खोला और उसे मेरे चेहरे के सामने हिलाते हुए चिल्लाया—

"बोलते क्यों नहीं हो ? क्या तुम बहरे हो ? जब तुमसे कुछ कहा जाता है तो जवाब क्यों नहीं देते ? दस्तख़त क्यों नहीं करते ?"

मैंने उसे समझाया कि हम मूर्ख नहीं हैं। हमारी समझ में नहीं आया कि वह कह क्या रहा है, और बावजूद उसके बोलने के हम निश्चयपूर्वक जानते हैं कि वह एक नए कर के बारे में आया है।

मैंने उससे कहा, "हम इसके बारे में पहले से ही जानते हैं। हम इसके बारे में काफ़ी अच्छी तरह से जानते हैं। पर हम यह कर नहीं दे सकते। पहले से ही मकान पर कर है, अंगूरों के बगीचों पर कर है, गधों पर कर है, कुत्ते पर कर है, और चरागाह पर कर है, सूअर पर और गाड़ी पर और शराब पर कर है, और इतना बहुत है। अब और किस नई चीज़ पर तुम कर लगाना चाहते हो ?"

उसने मेरी ओर इस तरह से देखा मानो मैं फारसी में भौंक रहा हूं। वह हतप्रभ हो गया और बोला, "हम बोल रहे हैं, पर एक दूसरे को समझ नहीं रहे हैं। हम एक ही भाषा बोलते हैं और फिर भी वह भाषा एक नहीं होती।"

यह बिलकुल सच था। यह संभव नहीं कि शहराती और किसान एक-दूसरे को समझ सकें। वह शहरवाले की तरह बोलता है, शहरवाले की तरह बोले बिना वह रह नहीं सकता, वह और किसी तरह से बोल ही नहीं सकता। और हम किसान थे। हमारे ढंग से, यानी किसानों की रीति से हम प्रत्येक बात समझते थे। अपने जीवन में मैंने हज़ारों बार देखा है कि शहरवाले और किसान बिलकुल भिन्न-भिन्न हैं। अपनी जवानी के दिनों में अर्जेंटाइन में पम्पास[1] पर था। वहां मैं स्पेन-वासियों से लेकर इंडियन्स तक सभी जातियों के किसानों से बोलता था, और हम एक दूसरे को इतनी आसानी से समझ जाते थे मानो फांटामारा ही में हों। शहर से आनेवाले एक इटालियन से, जिसका संबंध कॉन्सुलेट कौंसिल से था, मैं हर रविवार को बात करता था। बिना एक दूसरे को समझे और कई बार तो बिलकुल उलटा मतलब समझे ही हम बातें करते थे।

---

1. पम्पास—दक्षिण अमेरिका के वृक्षहीन समतल मैदान।

इसलिए जब उस अजनबी ने फिर से अपनी दास्तान शुरू की तो मुझे कुछ भी आश्चर्य न हुआ। उसने हमें समझाया कि वह करों के बारे में नहीं बोल रहा है, करों से उसका कोई भी संबंध नहीं है, और वह फांटामारा एक दूसरे ही मतलब से आया है, और पैसा देने की तो कोई बात ही नहीं है।

देर हो गई थी और इस समय तक अंधेरा बढ़ गया था, इसलिए उसने दियासलाइयां जलाना शुरू कीं। एक-एक करके उसने हमें काग़ज़ दिखलाए। वे सचमुच कोरे थे, और कर-वसूली संबंधी नहीं थे। वे सारे-के-सारे बिलकुल ही कोरे थे। केवल एक काग़ज़ के सिरे पर कुछ लिखा था। हमें वह बतलाने के लिए उस आदमी ने दो काड़ियां जलाईं।

"उपर्युक्त बात के उत्साहपूर्ण समर्थन में नीचे दस्तख़त करनेवालों ने माननीय कप्तान पेलिनो के हक़ में अपनी राजी-ख़ुशी से दस्तख़त किए हैं।"

उस आदमी के कहने से हमें मालूम हुआ कि वही स्वयं माननीय पेलिनो है और दस्तख़त हो जाने पर सब काग़ज़ सरकार को भेज दिए जाएंगे।

माननीय पेलिनो को ये काग़ज़ अपने उच्चाधिकारियों से मिले थे। ये केवल फांटामारा ही के लिए खास तौर से नहीं थे। सभी गांवों के लिए थे। ऐसे ही और काग़ज़ लेकर उसके अन्य सहयोगी दूसरे गांवों में भी गए थे। दरअसल उनका संबंध सरकार को भेजे जानेवाले एक प्रार्थना-पत्र से था, जिसके लिए कई दस्तख़तों की आवश्यकता थी। यह ठीक है कि प्रार्थनापत्र उसके पास नहीं था और न उसे यही मालूम था कि उसमें क्या लिखा है। प्रार्थनापत्र उसके उच्चाधिकारियों द्वारा ही लिखा जानेवाला था। उसे खाली दस्तख़त इकट्ठे करने थे, और किसानों को खाली दस्तख़त करने थे।

उसने हमें बतलाया कि देहातियों को तुच्छ समझने और उनकी बात न मानने का जमाना बिलकुल लद गया है। आजकल तो किसानों की राय की क़द्र करनेवाली और उन्हें प्रतिष्ठित समझनेवाली नई सरकार का राज्य है। इसलिए मैं आपसे अपने दस्तख़त मुझे देने की प्रार्थना करता हूं। आपकी राय जानने के लिए एक अफ़सर भेजकर सरकार द्वारा किए गए सम्मान की आप उचित ही क़द्र करेंगे।

हमें थोड़ा संदेह अभी था ही कि इसी बीच जनरल बाल्डीसेरा वहां आ गया और उसने अफ़सर के अंतिम शब्द भी सुने। उसने बिना अधिक बखेड़े के (इन मोचियों को तो तुम जानते ही हो) कहा—बहुत अच्छा। यदि श्रीमान् मुझे आश्वासन देते हैं कि पैसे-कौड़ी देने का कोई मामला नहीं है, तो मैं पहले दस्तख़त करता हूं।

पहले उसने दस्तख़त किए। तब मैंने दस्तख़त किए, और तब मेरे पास खड़े पांज़ियो पिलाटो ने, और तब माइकेल ज़ोम्पा और मेरीटा ने। लेकिन दूसरों के बारे में कैसे क्या करते ? रात में उस वक्त दस्तख़त कैसे लिए जा सकते थे ? घर-घर जाकर इतनी रात बीते दस्तख़त करवाना असंभव ही था। माननीय पेलिनो को एक बात सूझी। हम फांटामारा के सभी किसानों का नाम उसे लिखवा दें। और हमने ऐसा ही किया। सिर्फ़ बेरार्डो बायला का नाम लिखवाते समय ही एक गरमागरम बहस हुई। हमने माननीय पेलिनो को समझाने की भी कोशिश की कि बेरार्डो कभी दस्तख़त न करेगा, परंतु उसका भी नाम लिख लिया गया।

दूसरा काग़ज़ भी नामों से भर चुका था और अजनबी तीस या चालीस दियासलाइयां जला चुका था कि उसने मेज़ पर कोई चीज़ देखी। उसे देखकर वह चकित और भयभीत हो गया। लेकिन उसमें भयभीत तीली होने जैसा कुछ न था। एक सलाई की तीली जलाकर उसने सावधानी से मेज़ का निरीक्षण किया। वह इतना झुका कि उसकी नाक ही लगभग उस चीज़ से छू गई। तब मेज़ की ओर अंगुली से संकेत करते हुए अपनी बकरी की-सी आवाज़ में वह ज़ोर से चीख़ा, "यह क्या है ? यह गंदी चीज़ किसकी है ? किसने उसे मेज़ पर रखा है ?"

साफ़ तौर पर वह आफ़त मोल ले रहा था। किसी ने जवाब नहीं दिया। जनरल जॉल्डीसेरा ने पहले ही समझदारी से काम लिया और घर चला गया। अजनबी ने तीन-चार बार अपनी बात दुहराई और भरपूर उजाले के लिए एक साथ तीन सलाइयां जलाईं। तब हमने मेज़ पर हिलती हुई कोई चीज़ देखी।

पहले पांज़ियो पिलाटो उठा, मेज़ पर झुका, सावधानी से देखा और बोला, "यह मेरी नहीं है।"

मैंने भी ऐसा ही किया। मैंने उसे देखा, छुआ और अपने पाइप की नली से इधर-उधर घुमाया। मेरी जवानी की क़सम, वह सचमुच मेरी नहीं थी। माइकेल ज़ोम्पा ने ऐसा बहाना किया मानो वह कुछ समझा ही न हो और आसमान में ताकता हुआ तंबाकू पीता रहा। मेरीटा भी मेज़ पर झुकी। और कीड़े को, जो अब इस समय तक नाम लिखे हुए काग़ज़ पर बीचोबीच पहुंच गया था, ग़ौर से देखने के बाद अपनी हथेली पर लेकर सड़क में फेंक दिया।

"कितनी अद्‌भुत !" वह बोली, "बिलकुल ही अद्‌भुत ! लंबी, मटमैली और पीठ पर क्रासवाली एक नई तरह की जूं ..."

सुनते ही माइकेल ज़ोम्पा उछल पड़ा और चिल्लाया, "क्या ! क्या सचमुच उसकी पीठ पर क्रास था ? और तुमने उसे फेंक दिया ? क्या तुम्हारा यह मतलब

है कि तुमने सचमुच ही पोप की खास अपनी जूं फेंक दी ? शांति की जूं ? तुम्हारा बहिष्कार किया जाना चाहिए, पवित्र वस्तुओं का निरादर करनेवाली ऐ निकम्मी औरत, तू..."

हममें से कोई इस चीख़-पुकार का कारण न समझा, इसलिए माइकेल ने खुलासा किया, "मुझे पिछली शरद् में एक सपना हुआ। वह सपना मैंने डान अबाक्च्यो को सुनाया और उन्होंने मुझे मना कर दिया कि वह मैं और किसी से न कहूं। लेकिन, यदि मेरीटा का कहना सच है, तो वह अब प्रकट हो गई है। और चूंकि वह प्रकट हो गई है, इसलिए मैं तुम्हें सुना सकता हूं। सपना यह था, 'पोप और सरकार में सुलह हो जाने के बाद, तुम्हें याद होगा, डॉन अबाक्च्यो ने मंदिर में एक प्रवचन में कहा था कि किसानों के लिए अच्छा समय आनेवाला है। पोप को ईसा से यह वर मिला था कि वह किसानों को जो कुछ भी वे चाहें, दे सकते हैं। मैंने पोप को सपने में ईसा से बात करते देखा था।'

"ईसा ने कहा—शांति होने के उपलक्ष्य में फ्युसिनो की ज़मीन उस पर काम करनेवाले किसानों में बांटना ठीक होगा।

"पोप ने जवाब दिया स्वामी, राजकुमार टोर्लोनिया इसके लिए राजी न होंगे ...आप यह न भूलें कि राजकुमार टोर्लोनिया सेंटपीटर्स की निधि में काफ़ी दान देते हैं।

"ईसा ने कहा, तो इस शांति के परिणामस्वरूप किसानों को सब तरह के करों से मुक्त कर दिया जाए।

"पोप ने जवाब दिया, स्वामी, इसके लिए सरकार राजी न होगी। आप न भूलें कि किसानों से दिए जानेवाले करों की बदौलत ही सरकार से सेंटपीटर्स की निधि को दो अरब लीरा मिलता है।

"ईसा ने कहा—तो फिर इस शांति के परिणामस्वरूप सभी किसानों और छोटे-बड़े खेतिहरों को एक अच्छी फसल प्रदान की जाए।

"पोप ने जवाब दिया—स्वामी, यदि फसल ख़ूब हुई तो अनाज के भाव गिर जाएंगे। आप यह न भूलें के हमारे सभी धर्माध्यक्ष और धर्माधिकारी बड़े जागीरदार हैं।

"ईसा दूसरों को किसी तरह की हानि पहुंचाए बिना किसानों के लिए कुछ न कर सकने के कारण बहुत दुखित हुए। और इसलिए किसानों को अत्यंत प्रेम करनेवाले पोप ने कहा—

"स्वामी, हम स्वयं चलकर देखें। किसानों के लिए शायद ऐसी कोई संभावना

निकल आए जिसमें प्रिंस टोर्लोनिया, सरकार, धर्माध्यक्ष और धर्माधिकारियों को अप्रसन्न न होना पड़े।

"इसलिए सुलह की रात को ईसा और पोप सारे फ्युसिनो और मार्सिका के सभी गांवों पर आकाश में उड़े। आगे-आगे अपने कंधों पर एक बड़ा थैला लिए ईसा थे और उनके पीछे पोप जिन्हें थैले में से, किसानों के लिए वह जो कुछ भी उपयोगी समझें, लेने की अनुमति थी।

"प्रत्येक गांव में उन पवित्र दर्शकों ने एक-सी बातें देखीं। सर्वत्र किसान असंतुष्ट होकर बड़बड़ा रहे थे, गालियां बक रहे थे, लड़ रहे थे और निरंतर दरिद्र हो रहे थे और उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि अन्न-कपड़े का प्रबंध कैसे किया जाय। यह सब देखकर पोप का हृदय व्यथित हो उठा। इसलिए उन्होंने जुओं का एक बादल-का-बादल यह कहते हुए मार्सिका पर बिखेर दिया, 'मेरे प्यारे बच्चो, यह लो और खुजलाओ। ये फुर्सत के समय तुम्हारे विचारों को पाप की ओर जाने से रोकेंगी।'

माइकेल ज़ोम्पा का यह स्वप्न था। प्रत्येक अपने ढंग से स्वप्नों का अर्थ लगाते हैं, और कई ऐसे भी हैं जो स्वप्नों को बिलकुल महत्त्व नहीं देते। कई उन पर से भविष्यवाणियां करते हैं। मैं उन्हें नींद लाने के बारे में उपयोगी समझता हूं। लेकिन धार्मिक वृत्तिवाली मेरीटा सॉसनिरा का विचार और तरह का था। कुछ भी हो, वह बहुत ही करुण विलाप करने लगी थी और सिसकियों में बोली, "सच है, बिलकुल सच है। हमारे लिए यदि प्रार्थना करने को पोप न हों, तो हमें पापों से कौन बचाएगा? विनाश से हमारी रक्षा कौन करेगा ?"

लेकिन माननीय पेलिनो ने इसका और ही अर्थ लगाया। ज़ोम्पा और सॉसनिरा की ओर चाबुक हिलाते हुए वह चिल्लाया, "तुम मुझे लेकर हंसी कर रहे हो। तुम अधिकारियों की खिल्ली उड़ा रहे हो। तुम सरकार और पवित्र चर्च की—गिरजा की—खिल्ली उड़ा रहे हो।"

और इसी दौर में वह बोलता चला गया। हमारी समझ में कुछ न आया कि उसका मतलब क्या है।

वह बोला, "सरकार तुम्हारा बंदोबस्त कर देगी। वह तुम्हें सज़ा देगी। अधिकारी तुम्हें इसका मज़ा चखाएंगे।"

हमने सोचा कि वह थोड़ी देर बोलता रहेगा और अंत में चुप हो जाएगा। लेकिन वह बोलता रहा। वह चुप होता ही न था।

उसने माइकेल को डांटा, क्या तुम नहीं जानते कि यदि मैं तुम्हारी रपट-

रिपोर्ट—कर दूं तो तुम कम-से-कम दस वर्ष के लिए धर दिए जाओ ? क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि जो कुछ अभी तुमने कहा है, उससे कम विद्रोहात्मक और कम हानिप्रद बातें कहने के लिए कई दस-दस साल के लिए चक्की पीस रहे हैं ? भले आदमी, रहते किस दुनिया में हो ? तुम यह भी जानते हो या नहीं कि इन पिछले सालों में कितनी घटनाएं हो गईं ? तुम्हें नहीं मालूम, आजकल स्वामी कौन है ? नहीं जानते कि राज्य किसका है ?

ज़ोम्पा ने उसे चुप करने के लिए शांति से जवाब दिया, "देखो, शहर में बहुत-सी बातें होती हैं। कम-से-कम शहर में एक घटना रोज़ होती है। रोज़ अख़बार आते हैं और उसमें कुछ नहीं तो एक घटना तो ज़रूर ही छपी रहती है। इस हिसाब से साल के अंत में कुल कितनी घटनाएं होंगी ! कई सौ। बेचारा ग़रीब किसान सब घटनाओं को कहां से जान सकता है ? लेकिन घटनाएं एक बात हैं और राज्य करनेवाले दूसरी। दोनों में अंतर है। राज्य अधिकारियों के हाथ में है। कभी-कभी वे अपना नाम बदल लेते हैं, पर रहते वे हमेशा अधिकारी ही हैं।

"और पुरोहिताधिपत्य (धर्माधिकार ?) पुरोहिताधिपत्य के बारे में क्या ?" उस शहराती ने पूछा। जो शायद स्वयं भी एक पुरोहिताधिपति था। अब देखो कि हम इस शब्द का अर्थ अभी तक नहीं जानते। उस आदमी ने इसे बार-बार दुहराया और भिन्न-भिन्न तरीकों से समझाया। अंत में माइकेल ने जवाब दिया, "सबके ऊपर स्वर्ग का स्वामी ईश्वर है।

"ईश्वर के बाद धरती का मालिक राजकुमार टोर्लोनिया है।

"उसके बाद राजकुमार टोर्लोनिया का सशस्त्र रक्षा-दल है।

"उसके बाद राजकुमार टोर्लोनिया के सशस्त्र रक्षा-दल के कुत्ते हैं।

"उसके बाद कुछ नहीं है। उसके बाद कुछ नहीं है। उसके बाद कुछ नहीं है। तब किसान हैं। और बस।"

"और अधिकारी, वे कहां से आए ? शहराती ने बेहद ग़ुस्सा होकर पूछा। पांजियो पिलाटो इसे समझाने के लिए बीच में ही बोला, "वेतन के अनुसार अधिकारी तीसरी और चौथी श्रेणी में विभक्त हैं। चौथी श्रेणी (याने, कुत्ते) ज़्यादा तादाद में हैं !"

माननीय पेलिनो उठ खड़ा हुआ। वह ग़ुस्से से कांप रहा था। वह बोला, "तुम्हें इसका उचित जवाब मिलेगा।" और चलता बना।

दो

दूसरे दिन सबेरे एक असाधारण घटना हो जाने से फांटामारा भर में कोलाहल मच गया।

फांटामारा के प्रवेश-पथ पर पत्थरों के ढेर में से जो छोटा-सा नाला निकलता है, उसका पानी एक गंदे तालाब में इकट्ठा होता है। कुछ ही क़दम आगे उसका पानी पथरीली ज़मीन के अंदर बहकर ग़ायब हो जाता है और फिर आगे पहाड़ी के नीचे एक बड़े नाले में निकल आता है। वह नाला कई बल खाता है और अंत में फ्युसिनो की ओर बहने लगता है। फांटामारा के किसान सदा इसी के पानी से पहाड़ी के नीचे अपने कुछ खेतों को, जो उनकी एकमात्र संपत्ति हैं, सींचते हैं। हर ग्रीष्म में पानी के बंटवारे को लेकर भयंकर झगड़े होते हैं। अनावृष्टि के साल तो ये झगड़े खून-खच्चर तक पहुंच जाते हैं।

दूसरी जून को सबसे जल्दी पहाड़ी के नीचे काम पर जानेवाले फांटामारा के किसानों को शहर से आनेवाली सड़क पर कुदाली और फावड़े लिए सड़क दुरुस्त करनेवालों का एक झुंड मिला। वे (या उन्होंने हमसे ऐसा ही कहा) नाले को खेती और बग़ीचोंवाले उस रास्ते से जिन्हें पानी और धरती के आरंभ-काल से ही वह सींचता आ रहा था, बदलकर अंगूर के कुछ बग़ीचों के किनारों से होता हुआ ऐसी धरती की ओर मोड़ने आए थे जिसका फांटामारा से कोई संबंध न था। उस ज़मीन का मालिक स्थानीय शहर का डॉन कार्लो माग्ना नामक एक मालदार ज़मींदार था। वह डॉन कार्लो माग्ना इसलिए कहा जाता था कि दिन में कभी भी कोई उससे मिलने जाता और पूछता कि "क्या डॉन कार्लो घर पर हैं ?" तो दासी यही उत्तर देती, "डॉन कार्लो ? माग्ना, वह तो भोजन कर रहे हैं। लेकिन यदि आप चाहें तो श्रीमतीजी से मिल सकते हैं।"

क्षणभर तो हमने यही सोचा कि सड़क सुधारनेवाले हमसे मज़ाक़ कर रहे हैं, क्योंकि हमारी मज़ाक़ उड़ाना स्थानीय शहरवालों का एक अतिप्रिय मनबहलाव था। पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने हमारा जितना मज़ाक़ उड़ाया है, उनका वर्णन करने के लिए एक पूरा दिन भी काफ़ी न होगा। गधे और पुरोहितवाली कहानी से उनके द्वारा किए जानेवाले मज़ाक़ के बारे में एक अच्छा अंदाज़ लगाया जा सकता है।

गिरजाघर की आमदनी इतनी कम थी कि फांटामारा में कोई पादरी नहीं रखा जा सकता था। गिरजाघर खाली उत्सवों और व्रत-दिवसों पर ही, जब कि डॉन अबाक्च्यो स्थानीय शहर से इंजील बांचने या मास-प्रार्थना कहने आते, खोला जाता था।

दो साल पहले फांटामारा-वालों ने धर्माध्यक्ष के पास गांव में एक पादरी भेजने के लिए खास तौर से एक प्रार्थना-पत्र भेजा। कुछ दिनों बाद हमें सूचना मिली कि हमारी अर्जी मंजूर हो गई है और हमें गांव के सर्वप्रथम पादरी के स्वागत की तैयारियां करनी चाहिए। उसके उचित स्वागत का हमने पूरा प्रबंध किया। गिरजाघर की अच्छी तरह से सफ़ाई की गई। फांटामारा में आनेवाली सड़क सुधारी गई और कई जगह चौड़ी भी कर दी गई। गांव में घुसने की जगह एक बड़ी शानदार मेहराब बनाई गई। गांव में सभी मकानों के दरवाज़े हरी पत्तियों की बंदनवार से सजाए गए। ऐन दिन सारा गांव नए पादरी का स्वागत करने गांव से बाहर निकला। पंद्रह मिनट तक चलने के बाद हमने आदमियों का एक बड़ा समूह हमारी ओर आते देखा। भजन गाते और जप करते हम स्वागत के लिए आगे बढ़े। सबसे आगे जनरल बाल्डीसेरा था, जो एक छोटा-सा भाषण देनेवाला था; उसके पीछे गांव के बड़े-बूढ़े और उनके पीछे स्त्रियां और बच्चे थे।

शहरवालों के समीप पहुंचकर अपने पादरी का स्वागत करने हम सड़क की दोनों ओर दो क़तारों में खड़े हो गए। अकेला जनरल बाल्डीसेरा ही आवाज़ें लगाता हुआ आगे बढ़ा, "ईसा की कृपा हो ! कुमारी मेरी की कृपा हो ! गिरजा की कृपा हो !"

उसी समय शहरवालों का झुंड भी बीच से दो भागों में बंट गया और पवित्र आभूषणों से सजे एक बूढ़े गधे के रूप में नया पुरोहित लातें और पत्थर खाता हुआ आगे बढ़ा।

शहरवाले यद्यपि हमेशा कुछ-न-कुछ नई गढ़ते ही रहते हैं, तो भी इस तरह का मज़ाक़ आसानी से नहीं भुलाया जा सकता। इसलिए हमारा यह सोचना स्वाभाविक ही था कि नाले का बहाव बदलना भी एक मज़ाक़ ही है। सूर्य, हवा और पानी जैसी दैवी वस्तुओं के मार्ग में, जिसे परमात्मा ने बनाया है, यदि आदमी दखल देना और बदलना शुरू करे तो प्रलय ही हो जाएगा। यह एक ऐसा आश्चर्य है जैसा कि गधे उड़ना सीख रहे हों, या राजकुमार टोर्लोनिया अब राजकुमार न रहे हों, या कि किसान अब भूखों न मरते हों। दूसरे शब्दों में, ईश्वरीय नियम ही अब जैसे ईश्वरीय न रहे हों।

लेकिन सड़क सुधारनेवाले कोई स्पष्टीकरण किए बिना ही कुदाली फावड़े उठा नाले का नया रास्ता खोदने लगे। ऐसा लगा कि मज़ाक़ कुछ गंभीर होता जा रहा है। एक किसान खतरे की सूचना देने फांटामारा की ओर भागा।

"दौड़ो, जल्दी करो। पुलिस को ख़बर करो। मेयर को ख़बर करो !" वह चिल्लाया।

आदमी नहीं जा सकते थे। जून के महीने में खेतों में बहुत अधिक काम रहता है। इसलिए औरतों को जाना पड़ा। अब आगे जो कुछ हुआ, वह मेरी औरत सुनाएगी।

अच्छा, यह तो तुम जानते ही हो कि औरतें कैसी होती हैं। हुआ यह कि हमारे रवाना होने से पहले ही सूरज काफ़ी ऊंचा चढ़ आया।

पहले तो चलने को कोई राज़ी ही नहीं होती थी। एक को मुर्ग़ी के बच्चों की रखवाली करनी थी तो दूसरी को सूअर की। कोई इसलिए नहीं जा सकती थी कि कपड़े धोने थे। किसी को अंगूर की लताओं पर छिड़कने का घोल तैयार करना था, किसी को मड़ाई के लिए थैले तैयार करने थे, किसी को बकरों के लिए घास काटनी थी। पहले तो कोई भी जाने के लिए खाली न थी। अकेली सासनिरा स्वेच्छा से तैयार हुई, क्योंकि अधिकारियों से बोलना जानती थी, या ऐसा उसका कहना था।

साथ जाने को उसे एक औरत और मिल गई। नाम लेने से कोई फ़ायदा नहीं। उसके भी पेट था। उसके आदमी को अमेरिका गए दस वर्ष हो गए थे और यह विश्वास करना कि वह उतनी दूर से भी बच्चे पैदा कर सकता है, कठिन था।

मैंने ज़ोम्पा की घरवाली से कहा, "एक ऐसे मामले में जिसका हम सभी से संबंध हो, दो ऐसी औरतों को क्या हम फांटामारा का प्रतिनिधित्व करने दे सकती हैं, जो सच पूछा जाए तो, दो छिनालें हैं ?"

हम ऐसा कभी नहीं होने दे सकती थीं। इसलिए दोनों लिज़ाबेत्तां लिमोना और मेर्या ग्रेज़्या के यहां उन्हें साथ चलने को राज़ी करने गईं। मेर्या ग्रेज़्या अपने साथ सियामारुगा को लेती आई और सियामारुगा कानारोज़ो की लड़की को और वह लड़की अपने साथ फिलोमेना क्वातेर्ना को बुलाती लाई।

हम रवाना होने ही वाली थीं कि पांज़ियो पिलाटो की घरवाली, चूंकि हमने उसे साथ चलने को नहीं कहा था, गुल मचाने लगी, "तुम इसे हमारी पीठ पीछे निपटाना चाहती हो, अरी तुम ? दूसरों को पीछे रखकर खुद आगे रहनेवाली, अरी तुम ! क्या हमारे खेत को पानी की ज़रूरत नहीं है ?"

इसलिए उसके कपड़े पहनने तक हमें रुकना पड़ा। लेकिन कपड़े पहनने की बजाय यह फिलोमेना कास्टाना, रेक्व्युटा, गिडिटा सारपोन और फॉर्नारा को बुला लाई और साथ चलने को राजी कर लिया। अंत में बाल्डीसेरा की दूकान के आगे हम कोई पंद्रह औरतें जाने को तैयार खड़ी थीं। हमें थोड़ी देर और रुकना पड़ा, क्योंकि सॉसनिरा अभी कपड़े ही पहन रही थी। गले में मूंगों की माला पहने, छाती पर चांदी का तमग़ा लगाए, अपनी सबसे बढ़िया पोशाक में, एक नया एप्रन डाले वह बाहर निकली।

बॉल्डीसेरा ने मुस्कराते हुए कहा, "एक बढ़िया नए पेट पर एक बढ़िया नया एप्रन।" मेरीटा मुस्कराई।

जब हम रवाना हुईं तो सूरज बहुत ऊंचा उठ आया था। मारे गरमी के दम घुटा जा रहा था।

सड़क सुधारनेवालों ने हमें देखा तो डरकर अंगूरों के बगीचों की ओर भाग गए।

लिज़ाबेत्तां लिमोना ने यह देखकर वहीं से लौट जाने की सलाह दी, क्योंकि उसकी राय में हमारा मतलब पूरा हो गया था। लेकिन नए एप्रनवाली सॉसनिरा बोली, "हमें चलना ही चाहिए, क्योंकि वे आदमी कुछ अपनी इच्छा से काम नहीं कर रहे थे, वे तो हुक्म की तामील कर रहे थे। हम बहस करने लगीं कि अब आगे क्या किया जाय। परंतु मेरीटा ने ज़रा से में मामला ख़त्म कर दिया। वह बोली—

"यदि तुम डरती हो तो हम अकेली जाएंगी। यानी स्वयं वह और पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती वह दूसरी औरत, और वे दोनों स्थानीय शहर की ओर चल पड़ीं।

"हमने एक दूसरे से कहा कि दो ऐसी औरतों को, जो सच पूछा जाए तो दो छिनालें हैं, हम कभी फांटामारा का प्रतिनिधित्व नहीं करने दे सकतीं। और हम सब सॉसनिरा के पीछे हो लीं।

"जब हम शहर में पहुंचीं, दोपहर हो गया था। टाउनहॉल चौक में हमारे पहुंचते ही एकदम आतंक छा गया। निश्चय ही हमारा दिखावा भी कुछ ऐसा ही रोबदार था। दूकानदार अपनी दूकानों से बाहर निकल आए और अपनी खिड़कियां बंद कर लीं। चौक में खड़े कई फलवाले सिर पर अपनी टोकरियां उठाकर भाग गए। लोग-बाग खिड़कियों और छज्जों में जमा हो गए। कुछ डरे हुए कारकून टाउनहाल के दरवाज़े पर दिखाई दिए। सब लोग यही समझ रहे थे कि हम टाउनहाल पर चढ़ दौड़ेंगी। हर नतीजे के लिए तैयार हम निस्तब्धता-पूर्वक

आगे बढ़ीं।

उसी समय एक नगर-रक्षक ने खिड़की से सिर निकालकर चिल्लाना शुरू किया, "इन्हें भीतर मत आने दो। ये सब जगह जुएं कर देंगी !"

सब लोग ठठाकर हंस पड़े।

वे सब जो थोड़ी देर पहले विमूढ़ हो भागने लगे थे, और जिन्होंने एक क्षण पहले ही अपनी दूकानें बंद कर दी थीं या टोकनियां सिर पर रख भाग गए थे, ठहाके लगाने लगे। सब हंस रहे थे। हम टाउनहाल के दरवाज़े पर इकट्ठी हो गईं। नगर-रक्षक, बहादुरी का सेहरा बांधे, हमारे और हमारी जुओं के बारे में अविश्वसनीय कहानियां सुनाने लगा। चौक में सब लोग हंस रहे थे। छज्जे पर हमारी ओर मुंह किए खड़ी एक औरत के पेट में हंसते-हंसते बल पड़ गए। एक घड़ीसाज जो अपनी दूकान की खिड़कियां बंद कर रहा था, इतना हंसा कि उसकी आंखों में आंसू आ गए। टाउनहॉल के दरवाज़े पर और भी कई कारकून और टाइपिस्ट आ खड़े हुए थे और वे भी सब ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे।

हमारी समझ में यह नहीं आ रहा था कि अब आगे क्या किया जाय। रास्ते में सासनिरा ने कहा था कि वह सब देख लेगी, परंतु जब इतने सारे हंसते हुए आदमियों से सामना पड़ गया तो उसकी भी अकल गुम हो गई। अकेला नगर-रक्षक ही होता तो उसे जवाब देना आसान था, क्योंकि कभी उस पर भी जुएं रेंगी होंगी। लेकिन इतने सारे दूसरे आदमी भी तो थे।

एक क्लर्क ने पूछा, "तुम क्या चाहती हो ? और किससे मिलने आई हो ?"

"हम मान्यवर मेयर—नगरपति—से मिलना चाहती हैं।" मेरीटा ने जवाब दिया।

फाटक पर खड़े कारकूनों ने अचरज से एक-दूसरे की ओर देखा। उनमें से कुछ ने फिर प्रश्न किया, "तुम किसे चाहती हो ?"

हममें से चार-पांच एक साथ बोलीं, "हम मेयर से मिलना चाहती हैं।"

कारकून फिर से पागलों की तरह हंसने लगे। हमारा जवाब उन्होंने इतनी ऊंची आवाज़ में दुहराया कि जिसे सुन चौक में, खिड़कियों, बरामदों और पास के भोजन-गृहों में (इस समय तक दोपहर के खाने का वक्त हो गया था) उपस्थित सभी व्यक्ति ठहाके लगाने लगे।

चूंकि दोपहर हो गई थी। इसलिए सब कारकून टाउनहाल में से बाहर निकल आए और उनमें से एक ने फाटक बंद कर दिया।

जाते-जाते वह हमसे बोला, "क्या तुम सचमुच मेयर से मिलना चाहती हो ?

तो यहां प्रतीक्षा करो। तुम्हें थोड़ी देर तक इंतज़ार करना पड़ेगा।"

हम बाद तक नहीं समझ सकीं कि उसके कहने का मतलब क्या था। इसी बीच हमारा ध्यान पानी पीने के एक नल की ओर गया जो चौक के एक कोने में था। हम सब उस ओर झपटीं। एक घमासान लड़ाई छिड़ गई। हम सब प्यासी थीं, पर एक ही साथ सब पानी नहीं पी सकती थीं। यह किसी ने मंजूर नहीं किया कि गर्भवती होने से मेरीटा को सबसे पहले पानी पीने का अधिकार है। काफ़ी खींचा-तानी के बाद हमने पानी पीने का क्रम निश्चित किया। सबसे पहले गिडिटा सारपोन ने और उसके बाद ओठ पर घाववाली एक लड़की ने पानी पिया। हम उसे सबके बाद में पीने देना चाहती थीं, लेकिन उसने टोटी पकड़ ली थी और छोड़ती ही न थी। उसके बाद मेरीटा की बारी आई, वह जैसे ही शुरू करने वाली थी कि पानी बंद हो गया।

ज़रा-सी रुकावट आ गई होगी, यह सोचकर हम रुकी रहीं। लेकिन पानी चालू नहीं हुआ। नल बंद हो गया था। हम जा ही रही थीं पानी वापस आने की आवाज़ सुनाई दी। हम फिर लौट आईं। खींचा-तानी और झगड़ा फिर शुरू हुआ। दो छोकड़ियां एक दूसरे के बाल खींचने लगीं।

हमने फिर से पानी पीने का क्रम निश्चित किया। पर पानी एक बार फिर रुक गया। हमने थोड़ी देर राह देखी, पर वह चालू नहीं हुआ।

पानी का यह बर्ताव बिलकुल हैरान करनेवाला था। फांटामारा के बाहरवाले नाले में ऐसा कभी नहीं हुआ था। घड़ीसाज और नगर-रक्षक चौक के दूसरी ओर से हंसते हुए हमें देख रहे थे।

तुम्हें यह सब सुनाकर व्यर्थ समय गंवाना मूर्खता होगी जबकि बाद में इससे भी कहीं अधिक बुरी घटनाएं हुई थीं, लेकिन पानी का वह अजीब व्यवहार, हमारी प्यास से पहले ही ग़ायब हो जाना, मैं कभी नहीं भूल सकती। हर बार यही हुआ। जब पानी आता नहीं दीखता तो हम हट जातीं, पर हमारे हटते ही पानी आ जाता था। ऐसा चार-पांच बार हुआ। जैसे ही हम पास पहुंचीं कि पानी रुक जाता और तत्काल ही नल बंद हो जाता। हमारे वहां से हटते देर न होती कि तत्परता से पानी आ जाता। प्यास के मारे हमारे गले सूख रहे थे पर पानी पीना असंभव था। पास पहुंचते ही पानी ग़ायब हो जाता।

चार बार ऐसा हो गया तो एक दर्जन कड़ाबीन[1] वालों ने आकर हमें घेर लिया

1 कड़ाबीन—चौड़ी नली की एक छोटी बंदूक जो फ़ौजी सिपाहियों के काम आती है।

और पूछा कि हम क्या चाहती हैं।

"हम मेयर से मिलना चाहती हैं।" हमने जवाब दिया।

"मेयर ? मेयर ?" सारजेंट चिल्लाया, "क्या तुम नही जानतीं कि अब कोई मेयर नहीं रहा ? तुम्हारे खोपड़े में यह कब आएगा कि अब मेयर को 'पॉडेस्टा' कहते हैं ?"

वह किसी भी नाम से पुकारा जाए, हमारे लिए तो सब एक ही बात थी। लेकिन पढ़े-लिखे लोगों के लिए निश्चय ही यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात थी, अन्यथा पॉडेस्टा की बजाय मेयर से मिलने की बात कहने पर कारकून हंसते ही क्यों और सारजेंट भी क्यों गुस्सा होता ? लेकिन पढ़े-लिखे लोग हड़बड़िए होते हैं और न कुछ-सी बातों पर क्रोधित हो उठते हैं।

सारजेंट ने चार कड़ाबीनवालों को हुक्म दिया कि वे हमें अपने साथ पॉडेस्टा के यहां ले जाएं। दो कड़ाबीनवाले हमारे आगे हो गए और दो पीछे। राहगीर हम पर आवाज़ें कसते और हमें चिढ़ाते थे। बड़े शहरवालों को और खासकर मज़दूरों और नौसिखियों को तो सदा ही देहाती किसानों का उपहास करने में मज़ा आता है।

कड़ाबीनवाले हमें मुख्य सड़क और ऐसी कई दूसरी सड़कों से ले गए जिनसे हम अपरिचित थीं। जब पुराने मेयर डॉन सर्कोस्टांजा का घर निकल गया और कड़ाबीनवाले न रुके तो हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। और हमें यह जानकर भी कुछ कम अचरज न हुआ कि डॉन सर्कोस्टांजा अब मेयर नहीं रहा। तब हमने सोचा कि अब ये हमें डॉन कार्लो माग्ना के यहां ले जाएंगे, पर कड़ाबीनवाले उसके घर पर भी बिना रुके चलते ही रहे। हम आगे बढ़ते गए और शीघ्र ही एक बार फिर गांव से बाहर खेतों में आ गए।

हम आपस में बोलीं कि कड़ाबीनवाले हमें बेवकूफ बना रहे हैं। डॉन सर्कोस्टांजा के सिवा और कोई मेयर हो ही नहीं सकता। लड़ाई के पहले और लड़ाई के समय और लड़ाई के बाद भी वही मेयर था। और बीच में थोड़े समय के लिए जब वह मेयर न था तो डॉन कार्लो माग्ना था। लेकिन कड़ाबीनवाले उन दोनों घरों के आगे से जब बिना रुके निकल आए हैं तो इसका साफ मतलब है कि वे हमारे साथ कोई बेहूदा छल करना चाहते हैं।

अब कड़ाबीनवाले हमें इमारती सामान—ईंट, चूने, रेती, गाडरों और चद्दरों—से घिरे एक रास्ते से ले जाने लगे। इस रास्ते पर चलना हमारे लिए बहुत ही कठिन हो रहा था। अंत में हम हाल ही के बने एक बंगले के फाटक पर पहुंचीं, जिसका

स्वामी फांटामारा में ठेकेदार के नाम से मशहूर, एक रोमन था। बंगला झंडियों और रंगीन कागज़ों के छोटे कंदीलों से सजा हुआ था। कई औरतें आंगन में कालीनें झटक-पछांट रही थीं। कड़ाबीनवाले बंगले के फाटक के ठीक सामने रुक गए।

हम सब मारे आश्चर्य के चिल्ला उठीं, क्या ! क्या उस लुटेरे को मेयर बना दिया ? उसके जैसे परदेशी को ! यह असंभव है।

कड़ाबीनवालों ने हमसे कहा, "कल ही उसकी नियुक्ति हुई है। उसे 'पॉडेस्टा' नियुक्त करनेवाला तार रोम से कल ही आया है।"

तीन साल हुए, जब ठेकेदार पहले पहल रोम से आया तो उसके बारे में यह कोई नहीं जानता था कि वह कौन है और कहां का रहनेवाला है। उसने एक सराय में डेरा डाला और मई के महीने में जब कि सेब दरख़्त पर ही थे और किसानों को पैसों की ज़रूरत थी, उन्हें ख़रीदना शुरू किया। उसके बाद उसने प्याज, सेम, मसूर और टमाटर ख़रीदना शुरू किया। जो कुछ वह ख़रीदता, रोम भेज देता था। तब उसने सूअर और बाद में घोड़े पालना शुरू किया। अंत में वह हर तरह के व्यापार में हाथ डालने लगा। वह खरहे, शहद, चमड़ा, ज़मीन, शहतीर और ईंटें बनाने का व्यापार करता था। शुरू-शुरू में पुराने ज़मींदार उसे हलकी निगाहों से देखते और उसके साथ किसी तरह का लेन-देन नहीं करते थे। लेकिन एक-एक कर वह उन सब पर हावी हो गया। ऐसा एक भी व्यापार न बचा जिसमें उसने उन्हें मात न किया हो। अंत में जब उन्हें शक हुआ तो उन्होंने सचमुच ही उसे जालसाजी के लिए दोषी ठहराया। सरकारी जांच हुई और एक नोट बनानेवाली बैंक का पता चला जो उसके सभी उद्योगों के लिए पैसा जुटाती थी। नोट जाली नहीं थे, क्योंकि कारखाने का संबंध एक बैंक से था।

फांटामारा में इस विचित्र सत्य के बारे में, जिसे कोई मानने को तैयार न था, काफ़ी बहस-मुबाहसा हुआ। हम अपने निजी अनुभव और जो कुछ लोगों से सुना था उस पर से जानती थीं कि बैंक का उपयोग पैसा सुरक्षित रखने, या रुपए अमेरिका से इटली भेजने या दूसरे देश के सिक्के बदलने में किया जा सकता है। लेकिन बैंक का व्यापार से क्या संबंध ? किसी बैंक का सूअर पालने या मकान बनाने या ईंटें बनाने या चर्मोद्योग से क्या संबंध हो सकता है ?

जांच के बाद ठेकेदार की इज़्ज़त बहुत ज़्यादा बढ़ गई। वह बैंक का प्रतिनिधित्व करता था। एक टकसाल उसके हाथ में थी। पुराने ज़मींदार उसके आगे कांपने लगे। तो भी हमारी समझ में नहीं आता था कि उन्होंने उसे मेयर बनने ही कैसे दिया।

हमें देखते ही आंगन में काम करनेवाली औरतें ठेकेदार की स्त्री रोज़ालिया को बुला लाईं। वह बाहर आई तो क्रोध से आग-बबूला हो रही थी। वह प्रौढ़ उम्र की शहरवाली औरतों की तरह कपड़े पहने थी। उसका सिर शिकारी चिड़िया-जैसा और शरीर लंबा तथा झुर्रियोंवाला था।

वह चिल्लाने लगी, "जाओ ! हटो ! निकलो ! तुम क्या चाहती हो ? क्या हम अपने घर के मालिक भी नहीं रहे ? तुम्हें मालूम नहीं कि आज हमारे यहां भोज है ? एक घंटे में ही मेरे पति की नियुक्ति के उपलक्ष्य में भोज शुरू होनेवाला है। तुम्हें किसने बुलाया ? मेरे पति घर नहीं हैं और लौटने पर उन्हें तुम्हारे साथ समय ख़राब करने की फुर्सत भी न होगी। यदि तुम्हें उनसे मिलना हो तो जाकर ईंटों के भट्ठे पर मिलो।"

कड़ाबीनवाले हमें ईंटों के भट्ठे का रास्ता दिखलाकर चले गए।

कई बार रास्ता भूलकर हम भट्ठे पर पहुंचीं। वहां लगभग बीस मज़दूर थे और कुछ गाड़ीवान ईंटें भर रहे थे, परंतु ठेकेदार नहीं था। उन्होंने कहा कि उसे यहां से गए थोड़ी देर हुई है। वह इलेक्ट्रिक सॉ-मिल—बिजली के आरे—पर हो, पर शायद वहां से भी चला गया हो। अच्छा हो कि तुम चमड़ा कमाने की जगह जाओ। लेकिन वह जगह वहां से बहुत दूर थी।

हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि अब आगे क्या करें। इसलिए बिना कुछ निश्चय किए ही, हम कच्ची सड़क पर रुक गईं। गर्मी से दम घुटा जा रहा था और धूल हमारी आंखों में घुस गई थी। हमारे बाल, मुंह, गले और आस्तीनें धूल से गंदी हो गई थीं और हम आसानी से पहचानी नहीं जा सकती थीं। भूख और गरमी से हम निर्जीव हो रही थीं।

"यह सब तेरा क़सूर है, तेरा नाश जाए, तेरा !" लिज़ाबेत्तां लिमोना सासनिरा पर भभक उठी।

यह सबके लिए लड़ने का संकेत था। पांज़ियो पिलाटो की घरवाली मुझसे भिड़ पड़ी और चीख़ने लगी, "मुझे तूने घसीटा। मैं आना नहीं चाहती थी। घर पर मुझे बहुत काम है, गली-गली भटकने के लिए मेरे पास फालतू समय नहीं है।"

गिडिटा सारपोन और कानारोज़ो की लड़की आपस में एक-दूसरे के झोंटे उखाड़ने लगीं और अंत में सड़क पर लोट-पोट हो गईं। मेर्या ग्रेज़्या कानारोज़ो की लड़की की मदद पर गई तो रेक्च्युटा उस पर झपटी और चारों धूल में लोटने लगीं। मारा-पीटी की अपेक्षा उनका गाली-गलौज ही ज़्यादा ज़ोरदार थी। ज़ोम्पा की घरवाली और लिज़ोबेत्तां लिमानो के बीच में सासनिरा इस तरह चीख़ रही थी मानो

उसका गला ही काटा जा रहा हो, लेकिन थोड़े-से बाल उखड़ने और उसका नया एप्रन फटकर धज्जियां हो जाने से अधिक उसे कुछ हानि नहीं पहुंची थी। भट्ठे में काम करनेवाले मज़दूरों के बीच-बचाव करने पर ही झगड़ा बंद हुआ।

शांति हो जाने पर लिज़ाबेत्तां बोली, "इस डाइन के साथ (उसका मतलब सासनिरा से था) आकर हमने ग़लती की। मेरी समझ से तो ठेकेदार का नाला बदलवाने से कोई संबंध नहीं। फिर हमें यहां आने की आवश्यकता ही क्या थी ?"

माइकेल ज़ोम्पा की घरवाली ने सुझाया, "हमें चलकर डॉन कार्लो माग्ना से मिलना चाहिए। नाला उसकी ज़मीन की ओर मोड़ा जा रहा है। हो सकता है कि यह उसकी धींगा-धींगी हो।"

हम दो-तीन विरोधी झुंडों में फिर शहर की ओर रवाना हुईं। हम डॉन कार्लो माग्ना के घर पहुंचीं तो हमेशावाली दासी ने दरवाज़ा खोला। सदा की तरह हमने पूछा, "थोड़ी देर के लिए क्या हम डॉन कार्लो से मिल सकती हैं ?"

सदा की तरह ही हमें जवाब मिला, "डॉन कार्लो ? माग्ना, वह हाल ही भोजन करने बैठे हैं। क्या तुम श्रीमतीजी से मिलोगी ?"

श्रीमतीजी, जो हमें अच्छी तरह पहचानती थीं, ठीक उसी समय बाहर आईं। वह हमसे इस तरह मिलीं मानो हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। वह हमें बड़े रसोईघर में ले गईं जिसकी छत से लहसुन, प्याज, सेब के गुच्छे, सूअर की चर्बी-भरी थैलियां, नमक-मिला सूखा गोश्त और पुट्ठे लटक रहे थे। डोना ज़िलोला सदा पुराने ढंग के कपड़े, एक काली टोपी और ज़मीन पर घिसटनेवाला एक लंबा काला साया पहनती थी। वह बोलती थी तो ऐसा लगता था मानो रो रही है। बिना कराहे उससे बोला ही नहीं जाता था। हमारे ज़मींदारों की औरतें लेन-देन के मामले में आदमियों की तरह ही कुशल होती हैं। ज़ायदाद और विरासत के मामले में उनकी राय आदमियों से अधिक मान्य होती है। वे ही पारिवारिक संपत्ति की रक्षा करती हैं, नौकरों की देख-रेख करती हैं, मज़दूरों की मज़दूरी चुकाती हैं और अपने खेतों में होनेवाली उपज उचित मूल्य में बेचने का प्रबंध करती हैं। औरतों की बदौलत ही, जो दहेज में मिली ज़मीन की प्राणपण से रक्षा करनेवाली होती हैं, ज़मींदारों की पारिवारिक संपत्ति का एक अंश सट्टे और कर्ज से सुरक्षित रहता है।

सभी जानते थे कि यदि पत्नी का प्रभावशाली नियंत्रण न होता तो डॉन कार्लो माग्ना जैसे शराबी, मौजी, जुआरी और चटोरे की जायदाद बहुत पहले ही छिन्न-भिन्न हो जाती। डॉन कार्लो से मिलने आनेवाले सभी लोगों को दासी जो नियत उत्तर देती थी उसे कई वर्ष पहले गृहस्वामिनी ने एक सहारे के लिए, जिससे

वह अपने पति के सभी कामों पर नियंत्रण रख सके, खोज निकाला था।

हमसे नाले के बारे में सुनकर डॉना ज़िज़ोला इस तरह पीली पड़ गई मानो बेहोश ही हो जाएगी। आंसू रोकने का एक भी प्रयत्न उसका दुर्बल, रूखा चेहरा हमसे छिपा न सका।

"वह लुटेरा ! वह बटमार !" वह मन-ही-मन बड़बड़ाई। उसका मतलब अपने पति से नहीं, ठेकेदार से था।

"वह आदमी सचमुच लुटेरा है।" उसने हमसे कहा, "कोई भी क़ानून उसके लिए बाधक नहीं है। यदि वह यहां कुछ वर्ष और ठहर गया तो हमें और हमारे मकानों, जीवन, वृक्षों और पहाड़ों तक को निगल जाएगा। वह हम सबका नाश कर डालेगा। वह और उसकी पैशाचिक बैंक हमें पथ का भिखारी बना छोड़ेगी—और जब हम गली-गली भीख मांग रहे होंगे तो वह हमें मिलनेवाली भीख तक चुरा लेगा।"

"ज़मीन का वह टुकड़ा, जिधर फांटामारा का नाला मोड़ा जानेवाला है, कुछ सप्ताह पूर्व ही ठेकेदार ने हमसे सस्ते दामों ख़रीद लिया था। वह निश्चय ही उस ज़मीन को उपजाऊ बनाकर महंगे दामों में बेचेगा और काफ़ी मुनाफ़ा कमाएगा।"

"और अब उन्होंने उसे पॉडेस्टा बना दिया है। नई सरकार ने उसे पॉडेस्टा बना दिया। नई सरकार एक लुटेरे गिरोह के हाथ में है। वे अपने आपको बैंकर्स और देश-भक्त कहते हैं, पर वास्तव में वे लुटेरे हैं, जिनके दिलों में पुराने ज़मींदारों के प्रति कुछ भी ख़याल नहीं है। इस लुटेरे को पॉडेस्टा बने चौबीस ही घंटे हुए हैं और टाउनहाल से टाईपराइटर ग़ायब हो गए। एक महीने के अंदर तो वहां के दरवाज़े और खिड़कियां भी चली जाएंगी। सड़क झाड़नेवालों को तनख्वाह पंचायत से मिलती है, लेकिन काम वे कल से ठेकेदार के कारखाने में इमारती मज़दूरों की हैसियत से करेंगे। सड़क सुधारनेवाले, जिनकी मज़दूरी करों से वसूल की जाती है, उस ज़मीन पर, जिसे इस लुटेरे ने मेरे पति से उड़ा ली है, पानी ले जाने के लिए खाई खोद रहे हैं। ज़िले का हरकारा इन्नासेंज़ो ला-लेग्गी ठेकेदार की औरत का नौकर हो गया है। आज सवेरे ही उस औरत के पीछे कुत्ते की तरह सिर झुकाए, तरकारियों की एक बड़ी टोकरी लेकर जाते हुए वह मुझे मिला था। और यह तो केवल आरंभ है। शीघ्र ही वह लुटेरा हम सबको निगल जाएगा।"

उसकी उत्तेजित बात से हमें लगा कि पुराने ज़मींदारों के अंतिम दिन भी आने लगे हैं। जैसी कि पुरानी कहावत है, खोदनेवालों के लिए गड्ढे तैयार हैं।

तो एक बार फिर हम पॉडेस्टा के बंगले की ओर रवाना हुईं। चलते-चलते

मेरे पांव इस कदर दुखने लगे जैसे कि गुड फ्राइडे के दिन, घुटनों पर जब मैं क्रॉस रखती हूं तब दुखने लगते हैं।

राह में हमें फांटामारा का गड़रिया एंटानियो ज़ापा मिला, जो खुद भी ठेकेदार की तलाश में था। वह रोज़ की तरह जब सार्वजनिक चरागाह में अपनी बकरियां ले गया तो चौकीदार आया और यह कहकर कि चरागाह का उतना हिस्सा ठेकेदार के अधिकार में है, उसे निकाल दिया।

गड़रिया बोला, "यदि चरागाह ठेकेदार के अधिकार में है तो जिस हवा में हम सांस लेते हैं, वह भी उसी के अधिकार में होनी चाहिए। एंटोनियो ज़ापा कोई बहुत होशियार छोकड़ा नहीं था, लेकिन इस बार उसने बात बिलकुल ठीक कही थी। चौकीदार सिर्फ़ उसे बना रहा होगा। हमारे पहाड़ से लेकर अपुलिया तक चरागाह सदा सार्वजनिक संपत्ति रहे हैं। मई के महीने में कपड़ों के मेले के बाद, कोई एक करोड़ भेड़ें हमारे पहाड़ पर गर्मियां बिताने आतीं और अक्तूबर के अंत तक वहीं रहती थीं। कहते हैं कि ईसा के जन्म के पहले से भी यह चला आ रहा है। उसके बाद कितनी ही लड़ाइयां और हमले हुए, कितने ही पोप और बादशाह बदल गए, पर चरागाह सदा सबके उपयोग के लिए खुले रहते आए। हमने कहा—ठेकेदार का विचार यदि चरागाह को हथियाने का हो तो वह पागल ही होना चाहिए। या शायद यह उसका पागलपन न हो और चौकीदार ही हमें बना रहे हों।

जब हम पॉडेस्टा के बंगले के फाटक पर पहुंचीं तो वहां दासी बिलकुल हताश खड़ी थी।

वह बोली, "पॉडेस्टा अभी तक नहीं आए। मेहमानों को खाने पर बैठे आधा घंटा हो चुका है और खुद गृह-स्वामी का अभी तक पता ही नहीं।"

जहां हम खड़ी थीं, वहां तक पक्वान्नों की सुगंध आ रही थी। दासी ने हमें भोज के बारे में विस्तारपूर्वक बतलाया। डॉन सर्कोस्टांजा ने एक बढ़िया भाषण दिया था। तब उसने हमें प्याज, चटनी, कुकुरमुत्ते, आलू और उनके स्वाद और महक तक के बारे में—भोज के लिए पकाई हुई प्रत्येक वस्तु के बारे में—बतलाया।

भोज समाप्त ही होनेवाला था, क्योंकि शराब का असर रंग दिखाने लगा। सब आवाज़ों के ऊपर डॉन सर्कोस्टांजा की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। भीतर के वार्तालाप का कुछ अंश खुली खिड़कियों की राह कभी-कभी बाहर सुनाई दे जाता था।

एक बार सर्वशक्तिमान्—ईश्वर—के बारे में बहस छिड़ गई। डॉन अबाक्क्यो और दवा बेचनेवाला केमिस्ट एक-दूसरे के विरुद्ध थे। डॉन सर्कोस्टांजा की राय

पूछी गई।

उसने जवाब दिया, "सर्वशक्तिमान् ? क्यों, बिलकुल स्पष्ट है ! सर्वशक्तिमान् एक विशेषण है।"

सब मान गए और फिर शांति हो गई।

डॉन अबाक्च्यो बिलकुल अपनी पंडिताऊ आवाज़ में लय से कुछ गुनगुनाया।

यह उठने का संकेत था।

मेहमान लोग 'नाड़ा-छोड़'—मल-मूत्र-त्याग—करने के लिए बग़ीचे में आने लगे।

पहले डॉन अबाक्च्यो निकला। वह चर्बी से फूल रहा था। उसके गले की नसें तनी हुईं और उसका लाल चेहरा सूजा हुआ था। वह शराब के नशे में लड़खड़ा रहा था। गिरने से बचने के लिए अपना सिर एक वृक्ष के सहारे से टिका, खुली ब्रीचेज़—पाज़ामा—हमारी ओर किए वह उसी पर पेशाब करने लगा।

बाद में, कड़ाबीनवालों के सार्जेंट के साथ, जिसने उसे थाम रखा था, वकील डॉन पाम्पोनियो निकला। कम-से-कम उसने मकान के पीछे जहां उसे कोई नहीं देख सकता था, जाने की तमीज़ दिखाई।

बाद में कैमिस्ट, कलट्टर, डाकबाबू और दस्तावेज़ों का जांच-अफसर निकले, वे ईंटों के एक ढेर के पीछे पेशाब करने बैठे।

उसके बाद एक जवान आदमी का सहारा लिए वकील डॉन सिकोन निकला। उसका जी मचला रहा था। इसलिए वह डॉन अबाक्च्यो वाले वृक्ष के पीछे पेशाब करने लगा, जब कि वह युवक उसके सिर को एक हाथ से थामे रहा।

बाद में टाउनहाल का बूढ़ा कारकून निकला। वह विद्यार्थी के नाम से मशहूर था, क्योंकि बीस वर्ष की उम्र में वह विश्वविद्यालय में भर्ती हुआ था और अब तक, साठ वर्ष का होकर भी, अपनी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था। वह मकान के पीछे गया।

बाद में आनेवाला नाटा और मोटा, बैल-सी आंखों और घोड़े से जबड़ोंवाला वकील सुक्कावासियो था। उसने ईंटों के ढेर के पीछे पेशाब किया।

बाद में तारांदेला वकील निकला। सिर, भौंह, पलक और दाढ़ी-मूंछों के बाल न होने से उसे गंजा भी कहते थे। हमें यह देखने की बड़ी उत्सुकता थी कि क्या उसका दूसरा हिस्सा भी ऐसा ही बिना बालोंवाला है, पर दुर्भाग्यवश वह मकान के पीछे चला गया। बाद में विचारक निकला। ईंटों के ढेर के पीछे जाने से पहले

वह बगीचे भर में टेढ़े-मेढ़े घूमता रहा। ईश्वर जाने वह क्या सोच रहा था—बेतरतीब घूमा। वह शराब में मदहोश हो रहा था और हमने उसे ईंटों के ढेर के पीछे अपने ही पेशाब में घुटनों के बल गिरते देखा था। वह उसमें से निकलने का कोई अच्छा तरीका अभी सोच ही रहा था कि फाटक पर प्रतीक्षा में खड़ी दासी ने ठेकेदार को आते देखा।

वह कई मज़दूरों के साथ जल्दी-जल्दी बातें कर रहा था। रोज़मर्रा के कपड़े पहने, एक कंधे पर जाकिट लटकाए, हाथ में पारा-शीशी लिए और पतलून की जेब में 'दो-फुटा' चिपकाए वह मज़दूरों के साथ बातें करता आ रहा था। उसके जूते चूने से जले हुए थे और पतलून और कंधे चूने तथा प्लास्टर से गंदे हो रहे थे। किसी को भी जो उसे जानता न हो, यह विश्वास न होता कि वह प्रांत में सबसे अधिक मालदार और पंचायत का मुखिया है। यद्यपि उसने हमारी उपस्थिति देख ली थी, पर वह कारीगरी के साथ बोलता और बहस करता रहा।

वह ज़ोर से बोला, "यदि गाड़ीवान बेपरवाही से खपड़े तोड़ता रहा तो मैं उससे हर्जाना वसूल करूंगा। क्या ? वह पिछले महीने की मज़दूरी चाहता है। उसकी यह धृष्टता ! क्या वह सोचता है कि मैं भाग जाऊंगा ? इन बुरे दिनों इन्हें काम पर रखने के लिए मेरा अनुगृहीत होने की बजाय ...क्या ! सीमेंट वाले मज़दूर दस घंटे रोज काम नहीं करना चाहते ? सचमुच ? मैं रोज़ बारह घंटे काम करता हूं। मैं मालिक हूं, और फिर भी रोज़ बारह घंटे काम करता हूं।"

उसने बंगले की ओर मुड़कर आवाज़ दी, "रोज़ालिया !" सुनते ही उसकी पत्नी बरामदे में निकल आई।

"क्या राज नक़्शे ले आया ? नहीं लाया ? वह क्या समझता है कि मैं उसे फोकट की तनख्वाह देता हूं ? क्या स्टेशन मास्टर ने किराए का बिल भेजा ? क्या ? नहीं भेजा ? उसका तबादला कालाब्रिया करना पड़ेगा। क्या पुलिस अफ़सर आया था ? क्या ? तुमने उसे लौटा दिया ? तुमने उसे लौटा क्यों दिया ?... भोज ! कैसा भोज ? अच्छा, मेरी नियुक्ति के उपलक्षवाला...खेद है कि मुझे फुर्सत नहीं। मुझे अभी जाकर पुलिस अफसर से मिलना पड़ेगा...क्या ? मेहमान अपना अपमान समझेंगे ? न, नहीं समझेंगे। मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूं। उन्हें ख़ूब शराब पिलाना। वे बुरा नहीं मानेंगे...बेकार है। मैं उन्हें पहचानता हूं।

और तब वह अपने साथ वाले कारीगरों से बहस करता हुआ हमारी ओर देखे बिना ही बंगले के फाटक के सामने से साफ निकल गया। उसका बोलना और काम करने का ढंग रोबीला था।

मैंने मन में सोचा कि सचमुच यदि वह लुटेरा यहां दो साल और ठहर गया तो हर जगह वही-वही दिखाई देगा।

"तुम औरतें यहां इंतज़ार करो।" यह कहता हुआ एंटोनियो ज़ापा उसके पीछे भागा।

वह एक नए बननेवाले मकान के पीछे ओझल हो गया। हम खड़ी-खड़ी उसका इंतज़ार करने लगीं।

इसी बीच पिए हुए अतिथि बरामदे में जमा होने लगे।

ऊंची उभरी हुई बड़ी-सी नाक और बाहर की ओर फैले हुए कानोंवाला डॉन सर्कोस्टांजा दूसरे वकीलों के बीच में खड़ा था। उसकी तोंद तीसरे दर्जे पर थी। सभी जानते हैं कि हमारी ओर के वकील भोज में एक विशेष तरह की फैलाई जा सकनेवाली पतलून जिसे कान्सर्टिना या ऐकेडेमिक कहते हैं, पहनकर शरीक होते हैं। इन पतलूनों में इकहरे बटनों की बजाय तिहरे बटन होते हैं ताकि वे शारीरिक आवश्यकताओं के अनुसार घटाई-बढ़ाई जा सकें। जैसा कि नियम है, भोज के आरंभ में पतलूनें पहली श्रेणी पर, मध्य में दूसरी श्रेणी पर और अंत में, फलाहार के समय तीसरी श्रेणी पर पहुंच जाती हैं।

उस दिन डॉन सर्कोस्टांजा, डॉन पॉम्पॉनियो, डॉन सिकोन, डॉन सुकावासियो और विद्यार्थी की कॉन्सर्टिना पतलूनें तीसरी श्रेणी पर थीं।

हमें देखते ही डॉन सर्कोस्टांजा ने शोर मचाकर हमारा स्वागत किया। वह चिल्लाया, "मेरे फांटामारावासी चिरायु रहें।"

डॉन सर्कोस्टांजा फांटामारावालों की हमेशा विशेष तरफदारी करता था। हमारे सभी मुकदमे उसी के पास जाते थे। और अंततोगत्वा फांटामारा की मुर्ग़ियों के अधिकांश अंडे-बच्चे उसके रसोईघर में पहुंच जाने का कारण भी यही था। पहले जब केवल लिखना-पढ़ना जाननेवाले ही वोट दे सकते थे, एक बार एक मास्टर ने आकर फांटामारा के सभी किसानों को डॉन सर्कोस्टांजा का नाम और गोत्र लिखना सिखा दिया था। इसलिए फांटामारावाले सदा उसे ही दृढ़तापूर्वक वोट दिया करते थे, क्योंकि चाहकर भी किसी दूसरे को वोट देने में हम असमर्थ थे। बाद में जब चुनाव बंद कर दिए गए तो हममें से किसी को उसके लिए खेद भी नहीं हुआ।

लेकिन डॉन सर्कोस्टांजा ने अभी तक 'जनमित्र' की पदवी नहीं छोड़ी थी।

डॉन सर्कोस्टांज़ा ने बरामदे में खड़े अपने साथियों से कहा, "फांटामारा से आई हुई इन भली औरतों की उपस्थिति से राज्य के प्रधान को भेजे जानेवाले हमारे तार की पूर्ति हो जाएगी।"

उसने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकालकर उस पर लिखा और तब ज़ोर से पढ़ा, "जनता और अधिकारी एक साथ मिलकर नए पॉडेस्टा की नियुक्ति पर हर्ष प्रकट करते हैं।"

जब ठेकेदार लौटता नहीं दीखा, और अतिथि हमारी ओर कोई ध्यान दिए बिना ही, उसकी पत्नी से विदा होने लगे तो हम अधीर हो उठीं। हम फाटक के सामने खड़ी हो गईं और यह तय कर लिया कि जब तक हमारी बात न सुन ली जाएगी और यह आश्वासन न मिल जाएगा कि नाला नहीं बदलेंगे, हम किसी को बाहर नहीं निकलने देंगी। हम हो-हल्ला करने लगीं, "ग़रीबों के साथ ऐसा व्यवहार करते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए। चोर ! लुटेरे ! सबेरे से हम भटक रही हैं और किसी ने हमारी ओर ध्यान तक नहीं दिया। भगवान तुमसे समझेगा। वह तुम्हें दंड देगा।"

हममें से दो-तीन ने पहली मंजिल की खिड़की पर पत्थर फेंके। कांच फूट गया। कांच फूटने की आवाज़ सुनकर हम फाटक के पासवाले ईंटों के ढेर की ओर झपटीं। बाहर जाने के लिए बग़ीचे में निकले हुए शराबी मारे डर के बंगले में जा छिपे। दासी ने शीघ्रता से ऊपरी मंजिल की खिड़कियां बंद कर दीं।

यकायक हमने अपने पीछे ठेकेदार की आवाज़ सुनी, जो बिलकुल शांत थी।

उसने पूछा, "तुम मेरी ईंटों से क्या कर रही हो ? ईंटें मेरी हैं तुम उन्हें उठा नहीं सकतीं, मुझ पर फेंकने के लिए भी नहीं। इसके सिवा मुझ पर पत्थर फेंकने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी हर एक बात का जवाब देने के लिए मैं यहां खड़ा हूं।"

हमने ईंटें रख दीं और बंगले के अंदर बग़ीचे में घुसीं। एक ओर हम खड़ी थीं और दूसरी ओर ठेकेदार तथा उसके शराब पीए हुए अतिथि, जिनका डर अभी तक दूर नहीं हुआ था।

मेरीटा सॉसनिरा आगे बढ़ी, ठीक तमग़े की ऊंचाई के बराबर पर उसने अपना हाथ छाती पर रखा, और चुने हुए शब्दों में सड़क सुधारनेवालों की दुष्टता का, जो फांटामारा के नाले का बहाव बदलना चाहते थे, वर्णन किया।

मेरीटा ने अंत में कहा, "हमारा विश्वास है कि श्रीमान् सड़क सुधारनेवालों को उनकी मनमानी के लिए अवश्य सज़ा देंगे।"

ठेकेदार ने जवाब दिया, "अगर मनमानी पाई गई तो तुम निश्चिंत रहो, मैं अवश्य ही उसका दमन करूंगा। जब तक मैं पंचायत का प्रमुख हूं, कोई मनमानी, ख़ासकर फांटामारा के लोगों जैसे कामगारों के ख़िलाफ़, नहीं होने पाएगी। तुम इसका

पूरी तरह से यकीन रखो। लेकिन इस मामले में तो मनमानी का कोई सवाल ही नहीं है। कप्तान, इनको समझा दो कि मामला क्या है।

कड़ाबीनवालों का कप्तान अतिथियों के झुंड में से आगे आकर कहने लगा, "ज़बर्दस्ती का कोई सवाल ही नहीं उठता। नई सरकार के शासन में ज़बर्दस्ती असंभव है। उलटे, यह तो क़ानूनी कार्रवाई है। वास्तव में देखा जाए तो अधिकारियों ने ऐसा करने का हुक्म देकर फांटामारावालों पर अनुग्रह किया है।"

अपनी जेब से काग़ज़ों का एक पुलिंदा निकालकर वह आगे बोला, "फांटामारा के सभी निवासियों ने इस अर्जी पर हस्ताक्षर किए हैं। इस अर्जी में, जिस पर गांव के एक-एक आदमी के दस्तख़त हैं, सरकार से प्रार्थना की गई थी कि पैदावार अधिक हो इसलिए साधनहीन फांटामारावासियों की ज़मीन पर से नाला शहर के साधन-संपन्न और खेती के लिए अधिक पूंजी लगा सकनेवाले ज़मींदारों के खेतों की ओर मोड़ दिया जाए।"

कप्तान कुछ और भी कहना चाहता था, लेकिन हमने उसे बोलने नहीं दिया। हमें अच्छी तरह मालूम था कि पिछली रात कैसे एक माननीय कोरे काग़ज़ों पर फांटामारावासियों के नाम लिख ले गया था।

हम चिल्लाने लगीं, "ठग ! जालसाज ! धोखेबाज़ ! तुम केवल ग़रीबों को ठगने के लिए ही क़ानून पढ़ते हो ! झूठी अर्जियों का नाश हो !"

ठेकेदार ने कुछ कहने की कोशिश की, पर उसे सफलता नहीं मिली।

हम चिल्लाती ही रहीं, "हम कुछ नहीं सुनना चाहतीं। तुम्हारी सब बातें जाल हैं ! अधिक बहस की ज़रूरत नहीं। पानी हमारा है और हमारा रहेगा ! हम बंगले में आग लगा देंगी ! इसे जला दो ! भस्म कर दो !"

डॉन सर्कोस्टांजा ठेकेदार की मदद के लिए आया।

उसने शुरू किया, "ये औरतें ठीक कह रही हैं। ये ठीक हैं, दस बार, सौ बार, हज़ार बार ठीक हैं..."

हम एकदम चुप हो गईं। डॉन सर्कोस्टांजा हमारा बचाव कर रहा था, और हम जानती थीं कि वह एक बड़ा नामी वकील है।

जन-मित्र कहता गया, "ये औरतें बिलकुल सही हैं, दस हज़ार बार सही हैं। मैंने हमेशा इनका बचाव किया है और हमेशा करूंगा। आख़िर, ये औरतें चाहती क्या हैं ? ये सम्मान चाहती हैं..."

"सुनो, सुनो !" हम बीच में चिल्लाईं।

"ये सम्मान चाहती हैं और हमारा कर्तव्य है कि हम इनका सम्मान करें,

क्योंकि ये सम्मान के योग्य हैं। ये औरतें ढीठ नहीं हैं। ये जानती हैं कि क़ानून इनके ख़िलाफ़ है और ये क़ानून के ख़िलाफ़ नहीं जाना चाहतीं। ये पॉडेस्टा के साथ एक मैत्रीपूर्ण समझौता चाहती हैं। ये आपकी कृपा के लिए प्रार्थना कर रही हैं। ये पंचायत के प्रमुख से नहीं, प्रजा के शुभेच्छु, जन-हितैषी और लोगों के मित्र से प्रार्थना कर रही हैं, जिसने अपने देश को बिना कुछ लिए दिया ही दिया है। क्या इन शर्तों पर समझौता संभव है ? हां, अवश्य है..."

डॉन सर्कोस्टांजा के चुप हो जाने पर बहुत-से समझौते सुझाए गए। एक डॉन अवाक्च्यो ने सुझाया, दूसरा दस्तावेज़ों के जांच-अफ़सर ने, तीसरा कलक्टर ने। वे सब गैर-मुमकिन थे, क्योंकि उनमें सिंचाई के लिए लगनेवाले पानी की तादाद का हवाला नहीं था।

ठेकेदार कुछ नहीं बोला। उसने दूसरों को बोलने दिया।

डॉन सर्कोस्टांजा ने सच्चा हाल खोज निकाला।

"इन औरतों का कहना है कि इनके खेतों की सिंचाई के लिए आधा नाला काफ़ी नहीं है। यानी, यदि मैं इनकी इच्छाओं का सही अर्थ करूं, तो यह कि ये आधे से अधिक चाहती हैं। इनका कहना सही और दस बार सही है। एक और केवल एक ही हल है। पॉडेस्टा के लिए नाले का तीन चौथाई पानी छोड़ दिया जाए और बचे हुए पानी का तीन चौथाई फांटामारा वालों के लिए सुरक्षित रखा जाय। दूसरे शब्दों में तीन चौथाई प्रत्येक को मिले, यानी आधे से कुछ ज़्यादा। यही एकमात्र उपाय है। मैं महसूस करता हूं कि 'पॉडेस्टा' के लिए मेरा प्रस्ताव काफ़ी उग्र है, परंतु मैं उनकी जन-हितैषिता और देश से कुछ न लेते हुए देने की वृत्ति को ध्यान में रखकर प्रार्थना करता हूं..."

डॉन सिकोन, डॉन सुकावासियो, डॉन तारदिला, डॉन पॉम्पॉनियो जो इस समय तक अपने भय से पीछा छुड़ा चुके थे, ठेकेदार को चारों ओर से घेर कर घिघियाने लगे कि वह हमारे लिए इतना त्याग करे। थोड़ी देर ध्यान देने—सोचने—के बाद [illegible] भी उनके साथ हो गया।

काफ़ी मिन्नतों के बाद ठेकेदार राज़ी हो गया।

एक व्यक्ति जाकर काग़ज़ ले आया।

दस्तावेज़ों के जांच-अफ़सर ने समझौते की शर्तें लिख डालीं और उस पर ठेकेदार के दस्तख़त करवा लिए। कड़ाबीनवालों के कप्तान ने उस पर दस्तख़त किए और डॉन सर्कोस्टांजा ने भी फांटामारावासियों के प्रतिनिधि की हैसियत से उस पर दस्तख़त किए।

उसके बाद हम सब घर की ओर चल पड़ीं।

(वास्तव में हममें से कोई भी यह नहीं समझ सकी थीं कि समझौता क्या हुआ है।)

आगे जो कुछ हुआ, वह मेरा घरवाला तुम्हें सुनाएगा।

तीन

हमारे नाले में से ठेकेदार द्वारा ख़रीदी हुई ज़मीन की ओर पानी का एक हिस्सा ले जानेवाली खाईं पर जितने दिनों वे सड़क सुधारनेवाले काम करते रहे, उनकी हिफाजत के लिए दो कड़ाबीनवाले सिपाहियों का प्रबंध किया गया। लेकिन वह बिलकुल साफ़ नहीं था कि पानी का ठीक कौन-सा हिस्सा ले जाया जाएगा।

और न हम यह समझने लायक अधिक पढ़े-लिखे ही थे कि नाला तीन चौथाईवाले दो बराबर हिस्सों में कैसे बांटा जा सकता है। खुद औरतें भी, जिन्होंने शर्तें मंजूर की थीं, इसके कार्यान्वित होने के बारे में एकमत नहीं थीं। कुछ का ख़याल था कि पानी के दो बराबर हिस्से होंगे और कुछ का यह ख़याल था कि नहीं, फांटामारा को आधे से अधिक, यानी तीन चौथाई पानी मिलेगा। जनरल बाल्डीसेरा ने दृढ़तापूर्वक इस बात का समर्थन किया कि तीन चौथाई का संबंध चांद के अंधेरे-उजेले पाखों से है। उसके कहने का मतलब यह था कि तीन उजेले पाखों तक नाला फांटामारावालों की ज़मीन सींचेगा और तीन अंधेरे पाखों तक ठेकेदार की, और इसी तरह आगे चलता रहेगा।

हममें से प्राय: सभी ने यह महसूस कर लिया था कि ठेकेदार से झगड़ा करने में समय की व्यर्थ बर्बादी के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगेगा। हममें से प्रत्येक, दूसरों का बिना कुछ ख़याल किए, बाक़ी बचनेवाले पानी के ज़्यादा से ज़्यादा भाग पर अपना अधिकार जमाने को कहीं अधिक उत्सुक था। सिंचाई में अभी कुछ सप्ताह की देर थी, परंतु झगड़े-टंटे अभी से शुरू हो गए थे।

उन दिनों हममें से अधिकांश लोग फ्युसिनो पर रोज़ मजूरी करने जाते थे। हमें तीन बजे उठना पड़ता था और सबेरा होने से पहले स्थानीय शहर के बाज़ार में पहुंचकर, जब तक कोई दिन-मजूरी के लिए नहीं रख लेता, इंतज़ार करना पड़ता था। पहले बहुत ग़रीब किसान ही ऐसा करते थे, लेकिन अब सभी के लिए बुरा समय आ गया था। सभी किसानों के पास ज़मीन के ज़रा-ज़रा से टुकड़े थे, परंतु वे रेहन रखे हुए थे और उनकी उपज इतनी कम थी कि उससे कर्जे का ब्याज चुकाना भी मुश्किल था। बाज़ार में आनेवाले इन किसानों की ज़्यादा तादाद देखकर ज़मींदार और बड़े खेत-मालिकों ने अपने लाभ के लिए मज़दूरी की दर घटा दी थी। मज़दूरी की दर कितनी ही कम क्यों न हो, उसे मंजूर करनेवाला कोई-न-कोई भुखमरा हमेशा निकल ही आता था। उस कम-से-कम मज़दूरी के लिए भी बहुत से लोग इस हद तक उत्सुक रहते कि पहले से बिना कुछ तय किए ही साथ हो लेते थे।

फांटामारा से शहर तक तीन मील चलने के बाद बाज़ार से फ्युसिनो तक अपने काम की ठीक जगह पर पहुंचने के लिए पांच से दस मील तक और भी चलना पड़ता था। सांझ को घर लौटने के लिए भी इतनी ही मंजिल तय करनी पड़ती थी। फांटामारा से आते-जाते वक्त रोज़ पानी के बंटवारे को लेकर होनेवाली लड़ाइयां ..धिक उग्र रूप धारण करती जा रही थीं।

कई लोग बुरी तरह से घायल हो गए थे। ग्यासोबी लोसुर्डो की कैंची (क़लम करने) की चोट से माइकेल ज़ोम्पा का क़रीब-क़रीब एक पूरा पुट्ठा उधड़ गया था। बाल्डोविनो स्यारपा तरबूज़ की तरह अपना सिर ही फुड़वा बैठा था। एंटोनियो रनाक्च्यो के बहनोई ने उसकी बांह तोड़ डाली थी। पांज़ियो पिलाटो और मेरे बीच मामला बहुत बेढब हो गया था; क्योंकि हम लड़ते तो नहीं थे, पर दोनों-के-दोनों अपने लड़कों के साथ हर्बो-हथियार से लैस, डींगें हांकते हुए काम पर जाते थे। मिलने पर आपस में हम एक-दूसरे को 'राम-राम' भी नहीं करते थे, परंतु एक दूसरे की ओर मन-ही-मन समझनेवाली एक ऐसी निगाह से देखते थे कि झगड़ा अधिक दिनों तक नहीं टाला जा सकता।

एक दिन सबेरे जब मैं अपने लड़के के साथ फ्युसिनो की ओर जा रहा था, वह मुझे सड़क सुधारनेवालों के साथ बात करता हुआ मिला।

वह कह रहा था, "देखो, मेरी फलियों के लिए ज़रूर पानी बचना चाहिए। बाक़ी सब भाड़ में जाएं।"

दोनों हाथों में कैंची पकड़े मैं यह चिल्लाता हुआ उस पर झपटा, "ले, पहले

तू ही भाड़ में जा।"

बेरार्डो वॉयला और सड़क सुधारनेवालों के साथ तैनात कड़ाबीनवाले सैनिक देख रहे थे, नहीं तो उस समय फ़ौजदारी हो जाती।

पांज़ियो पिलाटो से मेरा झगड़ा बचाने के लिए बेरार्डो वॉयला कुछ दिनों तक रोज़ मेरे साथ फ्युसिनो आता रहा। खेत-पात न होने से पानी को लेकर उसका स्वार्थ किसी से नहीं टकराता था और यही वजह थी कि वह इस मामले में झगड़ों में अलग रह सका।

कुछ वर्ष पहले अमेरिका जाने के इरादे से उसने बाप से विरासत में मिली अपनी ज़मीन का एकमात्र टुकड़ा बेच दिया था। लेकिन अमेरिका जाने का हुक्म कभी नहीं आया और वह फांटामारा में ही पड़ा रहा। उसकी दशा जंजीर से छूटे हुए उस कुत्ते जैसी हो गई थी, जो अपनी नई स्वतंत्रता के सुखोपभोग में असमर्थ गंवाए हुए लाभों के लिए अधीरता-पूर्वक लालायित रहता है। यों स्वभाव से वह अत्यंत लड़ाका था।

उसका दादा हमारे प्रांत का मशहूर डाकू वॉयला था, जिसे पिड्मांटेसी ने 1867 में पकड़ा था। बेरार्डो को अपने दादा से हिम्मत और शक्ति विरासत में मिली थी। वह शाहबलूत के धड़ की तरह मज़बूत और आकार-प्रकार में एक दैत्य ही था। उसका सिर निहाई की तरह चौकोर और आंखें बड़ी-बड़ी और डरावनी थीं। साहसी, उतावला, प्रभावशाली, मदिरा-प्रेमी, अपव्ययी, मित्रों के प्रति उदार, परंतु साथ ही हठीला और ईश्वर या मनुष्य से न डरनेवाला, वह सदा लड़ने-भिड़ने को तैयार रहता था। उसकी शारीरिक शक्तियों ने उसे फांटामारा के कुछ खास युवकों में बहुत ही प्रभावशाली बना दिया था, पर इस प्रभाव से कोई व्यावहारिक लाभ होने की अपेक्षा अनिष्ट और उत्पात ही अधिक होते थे।

उसे यह निश्चित सूचना मिल जाने के बाद कि वह अमेरिका नहीं जा सकता, एक दिन डॉन कार्लो माग्ना के अंगूर के एक पूरे बग़ीचे के अंगूर तोड़े हुए मिले। गधे और पुरोहित के प्रसिद्ध मज़ाक़ के जवाब में, शहर में पानी ले जानेवाले नल कई जगह से काट डाले गए। एक बार बड़ी सड़क पर आठ मील के घेरे के अंदर के सभी मील के पत्थर तोड़ डाले गए। मोटरवालों की सहायता के लिए लगाए हुए संकेत—साइनपोस्ट—ज्यादा-से-ज्यादा तीन दिन अपनी जगह पर रह पाते थे।

जिस दिन फांटामारा की बिजली काट दी गई, बेरार्डो कुछ न बोला, परंतु दो दिन बाद पास-पड़ोस के गांवों से शहर जानेवाली सड़क पर की बिजली-रोशनी

के सब गोले फोड़ डाले गए थे।

बेरार्डो वॉयला का सिद्धांत था, "शहरवालों के साथ बहस करने से कोई लाभ नहीं !"

इसका कारण वह यह बतलाता था कि क़ानून शहरवाले बनाते हैं, क़ानून का उपयोग करनेवाले जज शहराती होते हैं और व्याख्या करने वाले वकील शहराती होते हैं; फिर किसान के लिए न्याय की आशा ही कैसे हो सकती है ?

यदि कोई पूछता कि क्या मजदूरी कम देने पर भी बहस न की जाय, तो वह तत्काल उत्तर देता, "ऐसा करना समय की पूरी बर्बादी है। रोज़-मजूरी करनेवाले का एक खेत-मालिक से बहस करना पूरी तरह से समय की बर्बादी है। हर हालत में उसे मजदूरी कम ही मिलेगी। एक खेत-मालिक अपने फायदे के अनुसार ही काम करता है। मज़दूरी कम न करने देने के लिए आवश्यक है कि उसे नुकसान पहुंचाया जाय। यह कैसे हो सकता है ? मैं तुम्हें बतलाता हूं। नाज के खेतों में निराई करनेवाले छोकरों की मज़दूरी वे पांच से सात लीरा तक कम करते हैं। छोकरों ने शिकायत नहीं की और मेरे कथनानुसार किया। घास जड़ से छीलने के बजाय उन्होंने उसे खाली मिट्टी में दबा दिया। अप्रैल की बारिश के बाद खेत-मालिक देखता है कि घास अनाज के पौधों से कहीं ज़्यादा ऊंची हो रही है। कम मज़दूरी देकर उन्होंने बचत की जितनी आशा की थी, कुछ सप्ताहों बाद मड़ाई के वक्त उन्हें इस तरह दस गुने से अधिक हानि उठानी पड़ी। यदि कटनी करने के लिए वे कम मज़दूरी दें, तो बहस या शिकायत से कोई लाभ नहीं। कटनी के एक से अधिक तरीके हैं। दसों तरीके हैं। हर एक तरीका मज़दूरी के अलग-अलग दरों से संबंधित है। अगर मज़दूरी अच्छी है तो कटनी अच्छी होगी, अगर मज़दूरी कम है तो कटनी ख़राब होगी ?"

यदि कोई उससे पूछता कि जिस ढंग से ठेकेदार ने हमारा नाला छीन लिया, क्या उसकी भी कोई शिकायत न की जाए, तो वह उसी तरह से जवाब देता, "चमड़ा पकाने के कारखाने में आग लगा दो और वह बिना किसी बहस-मुबाहसे के तुम्हारा नाला लौटा देगा। और अगर वह इतने पर न समझे तो उसकी लकड़ी के गोदाम में आग लगा दो। और यदि यह भी काफ़ी न हो तो ईंटों का कारखाना उड़ा दो। और यदि वह इतना बेवकूफ हो कि तब भी न समझे, तो एक रात जब कि वह डॉना रोज़ालिया के साथ बिस्तर में पड़ा हो, उसका बंगला फूंक दो। तुम्हारा पानी वापस पाने का सिर्फ़ यही एक रास्ता है। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो एक दिन वह तुम्हारी लड़कियां ले जाकर उन्हें भी बाज़ार में बेच देगा। और मैं उसे दोष

भी नहीं देता। तुम्हारी लड़कियां आखिर हैं ही किस योग्य ?"

बेरार्डो वॉयला का सिद्धांत इतना कटु था। लेकिन इस तरह की बहस वह सिर्फ़ इसलिए करता था कि उसके पास कोई ज़मीन नहीं थी, और उसका अभाव उसे मन-ही-मन खटकता था। उसकी यह बहस ऐसे आदमी के समान थी जिसे कुछ खोना न हो। दूसरे किसानों की हालत उससे भिन्न थी।

अमेरिका जाने के उसके मंसूबे और जमकर काम न करने का उसका ढंग ऋतुओं के अनुसार कभी रोज़-मजूरी, कभी लकड़ी काटना, कभी कोयले बनाना, कभी ईंटें पाथना आदि विभिन्न काम—प्रकट करते थे कि वह अपनी दशा से संतुष्ट नहीं था। और बे-खेत-खलिहान और इसीलिए दूसरे किसानों से हीन-स्थिति में होने से उसे यह मानने का अख्तियार नहीं था कि कोई उसकी सलाह सुनेगा। हर बार जब-जब उसने हमारी बहस में दखल दिया, हमारी गड़बड़ी ही बढ़ाई। इसलिए कोई भी दुनियाबी आदमी कभी भी उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था और न विरोध ही में कुछ कहता था। केवल जनरल बाल्डीसेरा, जिसका दृष्टिकोण सदा उससे छत्तीस पड़ता, अपवाद था। लेकिन मोची होने के कारण उसका बेकार की बहसों में रस लेना स्वाभाविक ही था।

लेकिन अपनी उच्छृंखल बातों और उदाहरण से बेरार्डो ने फांटामारा के युवकों का दृष्टिकोण ही बदल दिया था।

फांटामारा में पहले कभी इकट्ठे इतने जवान आदमी न थे। एक जमाना था जब कि सोलह वर्ष के होते ही वे घर छोड़कर परदेश चले जाते थे। कुछ रोमन कम्पाना, कुछ अपुलिया और दूसरे कुछ अमेरिका चले जाते थे। कई अपनी वाग्दत्ताओं को चार, छः या दस वर्ष के लिए छोड़ जाते थे और लौटकर तब विवाह करते थे। कई विवाह के दूसरे दिन, ठीक सुहागरात के बाद ही चार, छः या दस वर्ष के लिए परदेश चले जाते थे। घर लौटकर वे अपने लिए बड़े-बड़े बाल-बच्चे तैयार पाते थे। कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि विभिन्न उम्र के कई बाल-बच्चे हो जाते थे।

लेकिन परदेश जाने के संबंध में रोक हो जाने से यह सब बंद हो गया था, और जवानों के सामने फांटामारा में रहने के सिवा और कोई रास्ता नहीं था। और फांटामारा में प्रत्येक के लिए काम निरंतर कम पड़ता जा रहा था। परदेश जाने की असंभावना का मतलब था रुपए कमाने और बचाने की असंभावना। उस रुपए की असंभावना जिससे वे रेहन रखी हुई और कर्ज-पीड़ित पैतृक संपत्ति को बचा सकते थे, जिससे वे ज़मीन की उन्नति कर नए ढंग से खेती कर सकते थे, जिससे वे

बूढ़े या मरे हुए गधे की बजाय एक जवान गधा ख़रीद सकते थे, जिस पैसे से वे एक सुअर, दो बकरियां या शादी के लिए एक बिस्तर ख़रीद सकते थे। जवान होने के कारण वे अपना असंतोष शिकायत और बड़बड़ाहट में प्रकट नहीं करते थे। न अपने भाग्य की असामान्य कठोरता ही बाहरी चिह्नों से प्रकट होने देते थे। वे अक्सर छुट्टियों के दिनों, अपने से उम्र में बड़े परंतु बुद्धि में छोटे एक व्यक्ति के नेतृत्व में एकत्र होते और ऐसी योजनाएं बनाते और काम करते थे जिसका समझदारी से कोई संबंध नहीं होता था।

सर्दियों में सुविधा के लिहाज से वे एंटोनियो ज़ापा के अस्तबल में, जहां की हवा बकरियों की सांस से गर्म रहती थी, एकत्र होते। एंटोनियो स्पावेंटा, लुइजी देल्ला क्रोस और पालुम्मो, राफेल स्कापोंन, बेनेर्डी सेंटो और मेरा लड़का और पांज़ियो पिलाटो का लड़का और दूसरे कई वहां जाते थे। जब कभी किसी उत्पात की आयोजना होती, बेरार्डो वॉयला भी अवश्य जाता था।

इस छोटी-सी मंडली में, जिसे फांटामारा की लड़कियां दुराचार-मंडली कहती थीं, और कोई शामिल नहीं किया जाता था। पहले-पहल तो यह नाम कुछ अजीब लगा, लेकिन एक दिन जब इस मंडली की हकीकत मालूम हो गई, तो यह नाम बिलकुल मौजूं लगा। बकरियों और खासकर बॉल्डोविनो स्यारपा की एक जवान बकरी के साथ, जिसे अपने रंग के कारण रोज़ेट्टा कहते थे, ज़िना करना इन जवानों का अतिप्रिय आमोद था। ऐसा कहते हैं कि यह रोज़ेट्टा बकरी एक खास सधे हुए ढंग से प्रसन्नतापूर्वक आदमी के हवाले हो जाती थी। रोज़ेट्टा को लेकर बार-बार झगड़े हुआ करते थे। कई दिनों तक यह घिनौना व्यवसाय चलता रहा, क्योंकि बकरी के मालिक बॉल्डोविनो स्यारपा को, जैसा कि अक्सर ऐसे मामलों में होता है, इसके बारे में बहुत देर से मालूम हुआ। पर इस बदनामी की वजह से जब दूसरे किसानों ने अपनी बकरियां एंटोनियो ज़ापा के सुपुर्द करना बंद कर दिया, तो दुराचार-मंडली का भी अंत हो गया।

लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य तो यह था कि बेरार्डो जैसा तंदुरुस्त और ताक़तवार जवान जो अपनी तीसी में आ रहा था और जिसके मां-बाप नहीं थे, नब्बे वर्ष की अपनी बूढ़ी दादी के साथ रहा करे और घर बसाने की कोई मंशा प्रकट न करे। एल्वीरा ला तिन्तोरा और उसकी सगाई एक बार क़रीब-क़रीब तय ही हो चुकी थी और उससे अच्छी लड़की उसे शायद ही कोई मिलती, पर अपनी ज़मीन का एकमात्र टुकड़ा खोने के बाद बेरार्डो ने बिना किसी स्पष्टीकरण के उससे नाता तोड़ लिया था। एल्वीरा का समाचार पूछना उसे क्रोधित करने का निश्चित उपाय

था। सर्दियों की लंबी सांझों में जब कोई काम न रहता और जब बूढ़े शराब पीते और जब जवान डोरे डालते—प्रेम करते—बेरार्डो देर तक बैठा-बैठा जनरल बॉल्डीसेरा के साथ शहरातियों और देहातियों के बीच पाए जानेवाले अंतर और तीन क़ानूनों—पुरोहित के क़ानून, मालिक के क़ानून और रीति-रिवाजों के क़ानून—के बारे में बहस करता था। वह टेबल को इतनी ज़ोर से पीटता कि मेरीटा सॉसनिरा का शराबखाना कांप उठता। लेकिन बूढ़ा जनरल अपने विश्वास पर, जिसे वह समाज का अपरिवर्तित और अंतहीन क्रम कहता था, अटल रहता।

यह सोचा जाता था कि बेरार्डो ने एल्वीरा पर का अपना सब हक छोड़ दिया है, लेकिन जब एक दिन यह ख़बर उड़ी कि सड़क सुधारनेवाले फिलिप्पो इल बेल्लो ने एल्वीरा के साथ मंगनी की है, तो बेरार्डो पागल सांड़ की तरह बिगड़ खड़ा हुआ। वह फिलिप्पा इल बेल्लो के मकान की ओर लपका, पर वह घर पर न था। यह सुनकर कि वह पत्थर की खदान पर गया हुआ है, बेरार्डो उधर भागा और उसे गिट्टी के ढेर पर काम करता पाया। उसके और एल्वीरा के बारे में सच-झूठ की पूछताछ किए बिना ही उसने उसे तिनके की तरह उठा लिया और आठ-दस बार गिट्टी के ढेर पर पटक दिया। तब दूसरे मज़दूरों ने आकर उसे रोका।

उस दिन के बाद से, यद्यपि बेरार्डो उसे टालता ही रहा, लेकिन एल्वीरा से मंगनी करने की किसी की हिम्मत न हुई।

एक दिन शाम को फ्युसिनो से घर लौटते हुए रास्ते में मैंने उससे इस बारे में जानना चाहा।

"एल्वीरा अब पच्चीस से कुछ ऊपर की होगी," मैंने कहा, "और हमारे यहां, जहां लड़कियां बीस वर्ष की उम्र से पहले ही ब्याह दी जाती हैं, यह बहुत ज़्यादा है। और कुछ नहीं तो घर-गृहस्थी में मदद के लिए ही उसकी शादी हो जानी चाहिए।"

बेरार्डो ने कोई जवाब नहीं दिया।

"यदि तुम उसे ब्याहना तय नहीं करते तो उसे अधिकार है कि वह किसी और के साथ अपनी शादी कर ले।"

बेरार्डो आग-बबूला हो गया।

"चुप रहो," उसने इस तरह से कहा कि इस बारे में बातचीत ही बंद हो गई।

दूसरे दिन फ्युसिनो जाने के लिए मैं उसकी प्रतीक्षा में रुका रहा, पर वह नहीं आया। मैं उसे घर बुलाने गया कि शायद सो रहा हो। वहां बुढ़िया आंसू ढार

रही थी। वह बोली, "बेरार्डो पागल हो जाएगा। अपने दादा से भी कहीं अधिक बुरा उसका अंत होगा। कल रात क्षण-भर के लिए भी उसकी पलक न झपी। वह दो बजे उठ खड़ा हुआ। जब मैंने उससे कहा कि अभी फ्युसिनो जाने में कुछ देर है तो वह बोला कि मैं फ्युसिनो नहीं जा रहा हूं। मैंने पूछा, 'कहां जा रहे हो ?' वह बोला, 'कामारीज़।' मेरे यह पूछने पर कि जब फ्युसिनो में काम है, तो तुम कामारीज़ क्यों जाते हो ? उसने जवाब दिया कि कामारीज़ में ज़्यादा पैसा मिलता है। मेरे इस सवाल का कि तुम पैसे की कब से परवाह करने लगे हो, उसने कोई जवाब नहीं दिया और चला गया।"

बेरार्डो के लैटियम जाने की ख़बर बिजली की तरह फैल गई, जिसे सुनकर फांटामारा के सभी किसानों को अचरज हुआ, यद्यपि कोई कारण नहीं कि रोज-मजूरी करके कमाने-खानेवाला किसान अपना प्रांत छोड़कर, काम का मौसम भी क्यों न हो, दूसरी जगह जहां ज़्यादा पैसे मिलते हों, न जाए और अपने प्रांत में ही पड़ा रहे। लेकिन जब बेरार्डो उसी सांझ फांटामारा लौट आया तो हमें और भी आश्चर्य हुआ।

जनरल बाल्डीसेरा और मेरीटा-सहित हम चार-पांच बीच सड़क में खड़े उसके जाने के बारे में ही बातें कर रहे थे। तभी हमने उसे अचानक आते हुए देखा। उसका आना इतना अनपेक्षित था कि क्षणभर तो हमने उसके जाने की ख़बर को एक मज़ाक़ ही समझा। लेकिन वह अपनी बढ़िया कमीज और टोप पहने था और उसकी बगल में एक गठरी थी। वह वापस किसलिए आ रहा था ? उसने एक बहुत ही गड़बड़ी पैदा करनेवाली बात कही।

वह कहने लगा, "टिकट लेकर मैं स्टेशन पर इंतज़ार कर रहा था। कड़ाबीनवाले सैनिकों का एक दस्ता आकर प्रत्येक से परवाने के बारे में और यात्रा करने का कारण पूछने लगा। मैंने एकदम सच-सच कह दिया। मैंने कह दिया कि मैं मजदूरी करने के लिए कामीराज़ जा रहा हूं। उन्होंने पूछा, "अच्छा, तुम्हारा परवाना कहां है ?" कैसा परवाना ? मैंने पूछा। लेकिन उनसे कुछ स्पष्ट जवाब देते नहीं बना। वे मुझे टिकट-घर ले गए, मेरे टिकट के पैसे वापस दिलवाए और मुझे स्टेशन से बाहर निकाल दिया। तब मैंने दूसरे स्टेशन तक पैदल जाकर वहां से गाड़ी पकड़ने का इरादा किया। वहां जाकर मैंने टिकट ख़रीदा ही था कि कड़ाबीनवाले दो सिपाहियों ने आकर पूछा कि तुम कहां जा रहे हो ? मैंने कह दिया कि मैं मजूरी करने के लिए कामारीज़ जा रहा हूं। उन्होंने कहा, "हमें अपना परवाना दिखाओ।" कैसा परवाना ? इसका परवानों से क्या संबंध ? मैंने पूछा।

वे बोले, "बिना परवानों के तुम काम नहीं कर सकते। देश में ही प्रवास करने के लिए एक नया स्वदेश-प्रवास-क़ानून बना है।" मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि मेरा कामारीज़ जाने का स्वदेश-प्रवास से कोई संबंध नहीं है और मैं वहां केवल मज़दूरी के लिए जा रहा हूं। लेकिन उन्होंने एक न सुनी। वे बोले, "हमें ऐसे ही हुक्म मिले हैं। हम किसी भी मज़दूर को जिसके पास परवाना नहीं, दूसरे प्रांत में मज़दूरी करने के लिए ट्रेन द्वारा नहीं जाने दे सकते।" उन्होंने मुझे मेरे टिकट के दाम वापस दिलवाए और स्टेशन से बाहर कर दिया। लेकिन परवानों की बात मेरी समझ में नहीं आई। मैं एक सराय में गया और वहां कुछ लोगों से बातें करने लगा। 'परवाना ?' एक गाड़ीवाले ने मुझसे कहा, "परवानों के बारे में तुम कैसे कुछ नहीं जानते ? लड़ाई के समय हम सिवा परवानों के शायद ही और कोई बात करते हों।" और इस तरह पूरा दिन बर्बाद कर मैं फिर लौट आया।

बेरार्डो की बात का सबसे ज़्यादा असर जनरल वाल्डीसेरा पर हुआ। अपनी जेब से एक छपी हुई गश्ती चिट्ठी निकालकर, जो उसके पास डाक से आई थी, वह बोला, "इसके अंदर भी उन्होंने परवाने के बारे में ही लिखा है ?"

इसमें कोई शक नहीं था। कामगार-संघ, चमड़ा-विभाग, सूबा अपुलिया ने जनरल बाल्डीसेरा से यह निश्चित मांग की थी कि वह मोचीगिरी का परवाना ले ले।

मेरीटा ने कहा, "एल्वीरा के पास भी एक ऐसी ही चिट्ठी आई है। वह बिलकुल डरी हुई मेरे पास आई और मुझसे चिट्ठी का मजमून समझाने के लिए कहा। मेरी समझ में भी कुछ खाक-पत्थर नहीं आया। मैं केवल इतना जान सकी कि उन्होंने लोगों की काम करने की आज़ादी छीन ली है। एल्वीरा के दादे-परदादे उससे पहले रंगरेज और जुलाहे थे और कभी किसी ने उनके काम में दखल नहीं दिया, 'लेकिन अब उन्होंने उसे लिख भेजा है कि वह काम करना चाहती है तो करे और परवाना ले।'

ग़श्ती चिट्ठियों का मामला और बेरार्डो के साथ होनेवाली अजीब घटनाएं जब एक ही साथ हुईं तो मुझे शक हुआ कि यह सब मज़ाक़ है।

मैंने कहा, "रंगने और बुनने से सरकार को क्या करना है ? काम की तलाश में, यदि किसान एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जाते हैं तो सरकार हस्तक्षेप क्यों करेगी ? सरकार के लिए दूसरी बहुत-सी बातें सोचने की हैं। ये सब तो बिलकुल निजी मामले हैं। केवल लड़ाई के समय ही सरकारें जनता की व्यक्तिगत आज़ादी में हस्तक्षेप करती हैं।"

जनरल बाल्डीसेरा ने टोका, "तुम इस बारे में जानते ही क्या हो ? तुम्हें क्या मालूम कि हम लड़ रहे हैं या नहीं ?"

इस बात का सभी पर असर हुआ।

"यदि सरकार लोगों को परवाने लेने के लिए बाध्य करती है, तो इसका मतलब है कि हम लड़ रहे हैं।" जनरल बाल्डीसेरा ने विवादपूर्ण स्वर में कहा।

बेरार्डो ने पूछा, "लड़ाई किसके साथ हो रही है, इसके बारे में बिना कुछ जाने ही हम कैसे लड़ सकते हैं ?"

जनरल बाल्डीसेरा ने कहा, "तुम इसके बारे में क्या जान सकते हो ? यह ग़ैरमुमकिन है कि तुम्हारे जैसा मूर्ख, बे-खेत-खलिहानवाला किसान इसके बारे में कुछ जान सके। लड़ाई की घोषणा करनेवाले शहराती होते हैं, लेकिन लड़ाई लड़नेवाले किसान होते हैं। जब पिछली लड़ाई छिड़ी तो फांटामारा में यह कोई नहीं जानता था कि यह किसके ख़िलाफ़ है। पांज़ियो पिलाटो ने सोचा था कि वह मेनेलिक के ख़िलाफ़ है, सिम्प्ली सियानो ने सोचा था कि तुर्कों के ख़िलाफ़ है और अभी कुछ साल पहले ही हमको पता लगा कि दरअसल लड़ाई ट्रेंटिनों और ट्रीस्ट के ख़िलाफ़ थी। इतिहास की कुछ लड़ाइयों के बारे में आज तक कोई यह न जान सका कि वे किसके ख़िलाफ़ थीं। लड़ाई ? क्यों, लड़ाई एक इतनी जटिल चीज़ है कि उसे समझने की एक किसान से कोई आशा ही नहीं की जा सकती। किसान युद्ध का एक छोटा-सा भाग—उदाहरण के लिए परवाने—देखता है और इसका उस पर बड़ा भारी असर होता है। शहराती लड़ाई की बहुत-सी चीज़ें देखता है—बारकें और युद्धसामग्री के कारखाने और इससे संबंधित हर एक चीज़। बादशाह सारा मुल्क देखता है। सब कुछ देखनेवाला अकेला ईश्वर ही है।"

मैंने बाल्डीसेरा से पूछा, "अच्छा, तुम अपना परवाना लेनेवाले हो या नहीं ?"

उसने जवाब दिया, "क्यों नहीं, मैं परवाना तो ज़रूर लूंगा पर उसके लिए कर नहीं दूंगा।"

जुदी-जुदी बातें करने के बावजूद परवानों के प्रति अख़्त्यार किए जानेवाले रुख़ के बारे में हम एकमत थे।

उस रात लड़ाई के बारे में और भी बहुत-सी बातें हुईं। कोई घर ऐसा न बचा, जिसमें इसकी चर्चा न हुई हो। हरएक एक-दूसरे से पूछता था, "क्यों, लड़ाई किसके ख़िलाफ़ है ?" और यह किसी को भी मालूम नहीं था। सासनिरा के शराबखाने के बाहर बैठा हुआ जनरल बाल्डीसेरा अपने पास इस विषय की जानकारी हासिल करने आनेवालों को शान्तिपूर्वक उत्तर देता था।

वह कहता, "मुझे यह बिलकुल नहीं मालूम कि हम किसके ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। जो गश्ती चिट्ठी मेरे पास आई, उसमें इसके बारे में कुछ नहीं लिखा है। उसमें केवल इतना है कि तुम्हें अपने परवाने की फ़ीस देनी पड़ेगी।"

अधिकांश किसान कहते, "देना, देना, देना; हर बार बस पैसा देना।"

इन्नॉसेंज़ो ला-लेग्गी के अप्रत्याशित आगमन ने सबकी घबराहट और भी बढ़ा दी।

कोई बहुत गम्भीर कारण ही इन्नॉसेंज़ो को फांटामारा लाया होगा। जान जाने के ख़तरे ने ही उसे इतने महीने तक आने से रोक रखा था। वह स्वेच्छा से तो कदापि नहीं आया था। जब वह सासनिरा की सराय के सामने आया तो बेहद डर गया, क्योंकि किसानों ने लपककर उसे घेर लिया। उसका चेहरा डर के मारे मुर्दे की तरह सफ़ेद पड़ गया। सासनिरा ने यदि उसे ठीक समय पर बैठने की चौकी न दे दी होती तो वह गिर ही पड़ता।

वह एक दबी हुई धीमी आवाज़ में बोला, "मुझे माफ़ करो, मुझे माफ़ करो। ना, डरो मत, ना, डरो मत, डरने की कोई बात नहीं है, नहीं है न ? तुम मुझसे नहीं डरते, नहीं डरते न ?..."

"अच्छा, तुम आए किसलिए हो ?" बेरार्डो की आवाज अधिक उत्साहप्रद नहीं थी।

"बहुत अच्छा। सीधा विषय पर ही आता हूं। इसका करों से कुछ भी संबंध नहीं है। सभी पवित्र वस्तुओं की सौगंध यदि करों से इसका कुछ भी संबंध हो तो। करों से इसका कुछ भी लेना-देना नहीं। यदि करों से इसका कुछ भी संबंध हो तो, परमात्मा करे मैं अंधा हो जाऊं।"

कुछ क्षणों तक शान्ति रही। इन्नॉसेंज़ो अंधा नहीं हुआ।

"आगे बोलो !" बेरार्डो ने कहा।

"अच्छा, देखो, तुम्हें याद होगा कि एक रात यहां एक फ़ौज़ी अफ़सर आया था। माननीय पेलिनो उसका नाम था, था न ? तुम्हें याद है ? बहुत ठीक। अच्छा, तो माननीय पेलिनो ने अधिकारियों को वर्तमान सरकार और गिरजे के ख़िलाफ़ कुछ भाषणों की, जो उसकी उपस्थिति में यहां दिए गए थे, हूबहू रिपोर्ट करते हुए शिकायत की कि फांटामारा वर्तमान सरकार के विरोधियों की खदान है। डरो मत, इसमें कुछ नुकसान नहीं है। डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। अवश्य ही उसने तुम्हारे कहने का मतलब ठीक तौर पर नहीं समझा होगा। परंतु अधिकारियों ने फांटामारा के संबंध में कुछ कार्रवाई करनी निश्चित की है। कोई कड़ी कार्रवाई

नहीं, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि उसमें तुम्हारा कुछ भी नुकसान नहीं होगा। सब निरर्थक बातें हैं, ऐसी निरर्थक बातें जिन्हें शहर में काफ़ी महत्त्व दिया जाता है और समझदार किसान जिनकी ओर कोई भी ध्यान नहीं देते..."

अधिकारियों ने फांटामारा के संबंध में जो कार्रवाइयां की थीं, उन सबके बारे में इन्नॉसेंज़ो को कुछ भी मालूम नहीं था। वह खाली ज़िले का हरकारा था और उसे सिर्फ़ पंचायत के निर्णय के बारे में ही मालूम था, और वह निर्णय उससे संबंधित लोगों तक पहुंचा देना उसका काम था।

इसके सिवा न तो वह कुछ जानता था, और न कुछ जानना ही चाहता था। पंचायत का पहला निर्णय जो उसे सुनाना था, वह कर्फ्यू—बन्दी हुक्म—के बारे में था, जिसके अनुसार फांटामारा में कोई भी 'सांझ-आरती' के एक घण्टे बाद से लगाकर सुबह होने तक घर से बाहर नहीं निकल सकता था।

"और हमें हमारी मज़दूरी तो उसी तरह मिलती रहेगी, क्यों ?" बेरार्डो ने पूछा।

उसने जवाब दिया, "तुम्हारी मज़दूरी का भला इससे क्या संबंध है ?"

"क्या संबंध है ? क्यों, यदि हम सबेरा होने से पहले घर से बाहर न निकलें तो फ्युसिनो पर, जहां हम काम करते हैं, दोपहर के बाद तक नहीं पहुंच सकेंगे। यदि हमें कुछ घंटों की मेहनत के लिए भी उतनी मज़दूरी मिलनेवाली हो, जितनी पहले मिलती थी तो कर्फ्यू ज़िंदाबाद।"

"और यदि हम घरों से बाहर नहीं निकल सकेंगे तो रात में हमारे खेतों की सिंचाई कैसे होगी ?"

इन्नॉसेंज़ो ला-लेग्गी क्षणभर के लिए निरुत्तर हो गया।

"तुम ठीक नहीं समझे।" वह बोला, "या, यदि तुम बुरा नहीं मानो तो मैं कहूंगा कि मुझे तंग करने के इरादे से तुमने न समझने का बहाना किया है। यह कौन कहता है कि तुम अपना काम करने का ढंग बदल दो ? ठेकेदार आजकल पॉडेस्टा है और तुम उसे अपना काम करने से नहीं रोक सकते और मैं ज़िले का हरकारा हूं और न तुम मुझे अपना काम करने से रोक सकते हो। उच्चाधिकारियों की आपत्तियों और शिकायतों पर ठेकेदार ने तय किया है कि तुम्हें रातभर घर के अंदर रहना पड़ेगा। मेरा काम खाली इतना ही है कि उसका हुक्म तुम्हें सुना दूं। अब तुम्हें जो ठीक लगे, तुम करना।"

"और क़ानून ?" जनरल बाल्डीसेरा बिगड़ खड़ा हुआ। "यदि इसी तरह चलता रहा तो क़ानून और व्यवस्था का क्या होगा ? मैं तुमसे पूछता हूं कि क़ानून

क़ानून है या नहीं ?"

"कृपा करके यह तो बताओ कि तुम रात में सोते कब हो ?" इन्नॉसेंज़ो ने पूछा।

उस आधे अन्धे मोची ने जवाब दिया, "अंधेरा होते ही।"

"और सबेरे उठते कब हो ?"

"क़रीब दस बजे, क्योंकि काम ज़्यादा नहीं है।"

इन्नॉसेंज़ो ने कहा, "तो बहुत ठीक, क़ानून की बराबर पाबन्दी होती है या नहीं, इसकी निगरानी के लिए मैं तुम्हें नियुक्त करता हूं।"

सिवा बाल्डीसेरा के, जिसे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा, हम सब हंसने लगे। अंधेरा होने लग गया था, इसलिए वह अपने घर सोने चला गया। इस अनपेक्षित हंसी से इन्नॉसेंज़ो ने कुछ आत्मविश्वास प्राप्त किया और प्रसन्न भी हुआ। सिगरेट जलाकर वह जिस तरह से पीने लगा, वैसे हमने उसे पहले कभी नहीं देखा था। मुंह से धुआं छोड़ने की बजाय उसने नाक से, जैसे हम छोड़ते हैं वैसे एक साथ दोनों नथुनों से नहीं, लेकिन पहले एक और तब दूसरे नथुने से धुआं छोड़ा। हमारे प्रशंसा-मिश्रित विस्मय का फायदा उठाकर उसने फांटामारा के बारे में पॉडेस्टा का दूसरा हुक्म सुनाया। उस हुक्म के अनुसार गांव के सभी सार्वजनिक स्थानों में निम्न सूचना लगाई जानेवाली थी—

यहां राजनैतिक बहसें करने की मनाही है। —**बहुक्म**

इन्नॉसेंज़ो ने मेरीटा को, जिसकी सराय ही फांटामारा का एकमात्र सार्वजनिक स्थान थी, पॉडेस्टा की एक लिखित आज्ञा दी जिसके अनुसार फांटामारा आगे से होनेवाली राजनैतिक बहसों के लिए वह जवाबदार समझी जाएगी।

"लेकिन फांटामारा में कोई नहीं जानता कि राजनीति क्या है। कभी किसी ने मेरी सराय में राजनीति पर बातें नहीं की।" सासनिरा का यह कहना सच था।

"तो माननीय पेलीनो यहां से इतने नाराज़ होकर क्यों गए ? तुमने किस विषय पर बातें की थीं ?"

सासनिरा ने कहा, "अरे, हमने सभी विषयों की बातें की थीं। हमने कीमतों के बारे में, मज़दूरी के बारे में, करों के बारे में और क़ानूनों के बारे में बातें की थीं। आज हम परवानों, लड़ाई और यात्रा के बारे में बातें कर रहे थे..."

"पॉडेस्टा की आज्ञा से अब तुम इनमें से आगे एक के बारे में भी बातें मत करो। यह आज्ञा ख़ासतौर से फांटामारा ही के लिए नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण इटली

में लागू होती है। सार्वजनिक स्थानों में कीमत, कर, मज़दूरी और क़ानून के बारे में बहस करने की बिलकुल मनाही हो गई है।"

बेरार्डो बोला, "क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि सब तरह की बहसें बंद कर दी जाएं ?"

"यही बात है बेरार्डो, तुम बिलकुल ठीक समझे। किसी भी चीज़ पर बहस न की जाए। पॉडेस्टा के हुक्म का यही अभिप्राय है। किसी तरह की कोई बहस नहीं।"

बेरार्डो की राय अपने साथ मिल जाने से इन्नॉसेंज़ो को बहुत बड़ा सन्तोष हुआ। उसने दीवाल पर लटकाई जानेवाली सूचना में सुधार कर उसे अधिक स्पष्ट करने का बेरार्डो का प्रस्ताव तत्परता से स्वीकार कर लिया। उसने एक सफ़ेद पुट्ठे पर खुद ही लिखा—

पॉडेस्टा की आज्ञा से
सब तरह की बहसें करने की सख्त मनाही की जाती है।

बेरार्डो की देख-रेख में यह सूचना मेरिटा के शराबखाने के बाहर दीवाल पर ऊंची टांग दी गई। इस काम में बेरार्डो के आज्ञापालन ने हमें चकित कर दिया। मानो अपने रुख़ को और भी अधिक स्पष्ट करने के लिए उसने कहा, "इस हुक्म को तोड़नेवाला काफ़ी सोच-समझकर ही ऐसा करे।"

इन्नॉसेंज़ो ने हाथ बढ़ाकर उसको गले लगाना चाहा, पर बेरार्डो के स्पष्टीकरण से उसका उत्साह बहुत कुछ ठंडा पड़ गया।

बेरार्डो बोला, "मैं हमेशा तुम्हें यही कहता था न ? लेकिन पॉडेस्टा के क़ानून बनाने से पहले तुम थोड़े ही सुननेवाले थे ?"

"मालिकों से कभी बहस मत करो; हमेशा यह मेरा सिद्धान्त रहा है। बहस-मुबाहसा ही किसानों की विपत्ति का मूल कारण है। किसान एक गधा है, बहस करनेवाला गधा। यही कारण है कि हम सचमुच के गधों से, जो कभी बहस या उसका बहाना नहीं करते, कहीं बुरी दशा में हैं। तुम्हारा गधा पच्चीस, पचास या सौ सेर वजन ले जाएगा, इससे ज़्यादा नहीं। पर वह बहस नहीं करेगा। तुम्हारा गधा एक खास गति से चलेगा, उससे तेज़ नहीं, पर बहस नहीं करेगा। तुम्हारे गधे के लिए भूसे की एक तादाद निश्चित है, वह उतना ही लेगा, पर बहस नहीं करेगा। तुम गधे से गाय, बकरी या घोड़े का काम नहीं करवा सकते। कोई तर्क वह नहीं मानेगा, कोई बात वह नहीं सुनेगा। वह बिलकुल ही नहीं समझता या समझने का

कोई बहाना नहीं करता। दूसरी ओर किसान बहस करेगा। तुम समझा-बुझाकर उससे उसकी शक्ति से परे काम ले सकते हो। समझाकर तुम उसे भूखा रख सकते हो। समझाकर तुम उसे अपने स्वामी के लिए मरने को राजी कर सकते हो। समझाकर तुम उसे लड़ाई पर भेज सकते हो। तुम उसे यह विश्वास दिला सकते हो कि सचमुच नरक नाम की भी कोई जगह है। परिणाम देखो। ज़रा अपने चारों ओर इससे होनेवाले परिणाम तो देखो !"

बेरार्डो का कहना हमारे लिए कुछ नया नहीं था, परंतु इन्नॉसेंज़ो ला-लेग्गी यह सुनकर डर गया।

वह कहता ही रहा, "तुम्हारा गधा भूखा रहना बर्दाश्त नहीं करेगा। वह कहेगा, यदि मुझे खाना मिलता है, तो मैं काम करता हूं, और यदि खाना नहीं मिलता है तो काम नहीं करता हूं। पर वह ऐसा कुछ नहीं कहता है, क्योंकि वह बहस नहीं करता, लेकिन स्वभाव से वैसा ही करता है। ज़रा सोचो तो सही कि फ्युसिनो पर काम करनेवाले छः हज़ार किसान बहस करनेवाले गधों की बजाय—दूसरे शब्दों में ऐसे गधों की बजाय जो पाले जा सकते हों, समझाए जा सकते हों, कड़ाबीनवाले सैनिकों, पादरियों और जजों द्वारा तंग किए जा सकते हों—बिना बहस करनेवाले सचमुच के गधे होते तो क्या होता ? राजकुमार टोर्लोनिया को पेट भरने के लिए भीख मांगनी पड़ती। मेरे प्यारे इन्नॉसेंज़ो, तुम जिस सड़क से आए हो, वह कैसी अंधेरी है ! और थोड़ी देर बाद उसी सड़क से तुम घर भी जाओगे। तुम्हें मार डालने से हमें कौन रोक सकता है ? बोलो !

इन्नॉसेंज़ो ने जवाब में कुछ कहने की कोशिश की, पर उसके मुंह से बोल नहीं निकले। वह मुर्दे की तरह पीला पड़ गया।

"गधे न होने से हम बहस करते हैं और ख़ून से होनेवाला परिणाम जानते हैं, और यही हमें रोकता है। लेकिन इन्नॉसेंज़ो, तुमने खुद अपने हाथ से लिखकर यह सूचना टांगी है कि आज से पॉडेस्टा के हुक्म से सब तरह की बहसें बंद की जाती हैं। तुमने खुद अपना गला काट लिया है..."

इन्नॉसेंज़ो ने सप्रयास कहा, "देखो, मेरी बात सुनो। तुम कहते हो कि तुम बहस करने के ख़िलाफ़ हो, लेकिन बुरा मत मानना। मुझे ऐसा दीखता है कि तुम बहुत ज़्यादा बहस करते हो। तुम्हारी सभी बातें सिवा बहस के और कुछ नहीं हैं। मैंने इस तरह की गधेपन की बातें कभी नहीं सुनीं।"

"अगर सब तरह की बहसें अधिकारियों और मालिकों के पक्ष में हों, तो पॉडेस्टा 'सब तरह' की बहसों की मनाही क्यों करता है ?" मैंने बेरार्डो से पूछा।

थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बेरार्डो बोला, "अरे, हां, बहुत देर हो गई। फ्युसिनो जाने के लिए मुझे तीन बजे उठना है। अच्छा, राम-राम।"

और वह चलता बना।

बेरार्डो के साथ बातचीत करने का अंत हमेशा इसी तरह होता था। वह घंटों उपदेशक की तरह बिना कोई जवाब सुने जो कुछ औंधा-सीधा उसके खोपड़े में आता, बोलता रहता था। जब उसका बोलना समाप्त हो जाता और कोई ऐसा सवाल पूछ बैठता, जिसका जवाब उससे नहीं बनता तो चुपचाप बिना जवाब दिए चल देता था।

उस रात फिर इन्नॉसेंज़ो ला-लेग्गी लौटकर शहर नहीं गया। शायद बेरार्डो के धमकानेवाले शब्दों की वजह से हो या एकाएक तबीयत ख़राब हो जाने से हो, उसने वह रात सॉसनिरा के यहीं बिताई।

चार

जून के मध्य तक चारों ओर यह समाचार फैल गया कि मार्सिका के किसानों के प्रतिनिधि फ्युसिनो-समस्या पर रोम की नई सरकार का निर्णय सुनने के लिए अवेज़ानो बुलाए जाएंगे।

इस समाचार से काफ़ी सनसनी फैल गई, क्योंकि पहले की सरकारों में से किसी ने भी फ्युसिनो-समस्या को स्वीकार तक नहीं किया था, और चुनाव बंद हो जाने के बाद से तो हमारे इधर के वकील तक इसके अस्तित्व को भूल गए थे, यद्यपि पहले वे इसके बारे में ख़ूब बातें किया करते थे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि रोम में नई सरकार कायम हो गई थी, क्योंकि हमने बीच-बीच में इस विषय की बातें सुनी थीं। यह भी इस बात का एक प्रमाण था कि लड़ाई हो रही थी या होनेवाली थी; क्योंकि लड़ाई के द्वारा ही पुरानी सरकार बदलकर नई कायम की जाती है। हमारे यहां इसी तरह स्पैनिआर्ड्स को बोअरबॉन्स ने और पिड्मांटिसी ने बोअरबॉन्स को बदला था। लेकिन फांटामारा में इतना भी

कोई नहीं जानता था कि नई सरकार कहां से आई है और उसकी राष्ट्रीयता क्या है ? सरकारें शहरों में होनेवाली घटनाएं हैं।

जब कभी शासन बदलता है तब किसान केवल इतना ही कह सकता है, "परमात्मा करे हमारे हक़ में यह सरकार अच्छी हो," ठीक उसी तरह जैसे कि गर्मियों में क्षितिज पर उठनेवाले बादलों का वर्षा या ओले-तूफान का अग्रदूत होना ग़रीब किसान की नहीं, ईश्वर की मरज़ी पर निर्भर करता है।

जो हो, यह बहुत ही अनूठा था कि सरकारी प्रतिनिधि ग़रीब किसानों के साथ बिना किसी भेद-भाव के, बराबरी से, बातें करे।

जनरल बाल्डीसेरा कहता फिरता था, "पुराना जमाना फिर आ रहा है। पुराने जमाने में आजकल की तरह महल और किसान की झोंपड़ी के बीच छावनियों और छोटे-बड़े दफ़्तरों का घना जंगल नहीं था। साल में एक बार शासक ग़रीब आदमी की तरह वेश बदलकर मेलों में जाते और लोगों की तकलीफें सुनते थे। तब चुनाव आए और शासकों तथा किसानों के बीच एक दीवाल खड़ी हो गई। लेकिन अब फिर, यदि अफ़वाहें सच हैं, तो पुराना जमाना आ रहा है। पुराना जमाना, जिससे हम कभी बिलग न हुए होते..."

माइकेल ज़ोम्पा को भी ऐसी ही आशा थी। वह कहता, "चुनावों पर टिकी हुई सरकार का नियंत्रण हमेशा अमीरों द्वारा होता है और वे अपने लाभ के लिए चुनावों का उपयोग करते हैं। एक आदमी का शासन—राजा—अमीरों को डरा सकता है। एक राजा और किसान के बीच ईर्ष्या या प्रतियोगिता हो ही कैसे सकती है ? यह विचार ही हास्यास्पद है। लेकिन एक राजा और राजकुमार टोर्लोनिया का एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु होना बहुत आसान है ?"

विरोध करने की बुरी आदत होते हुए भी बेरार्डो ने दूसरों की राय का इस आशा से विरोध नहीं किया कि फ्युसिनो की ज़मीन के पुनर्विभाजन में उसे भी शायद एक हिस्सा दे दिया जाए।

बेरार्डो तर्क करता था, "सब सरकारें हमेशा चोरों की बनी होती हैं—चोर होती हैं। हां, किसानों के लिए पांच सौ की अपेक्षा एक चोर ज़्यादा अच्छा है। एक बड़ा चोर, वह कितना ही ज़्यादा भूखा क्यों न हो, पांच सौ छोटे भुक्खड़ चोरों से कम ही खाएगा। यदि फ्युसिनो का बंटवारा फिर से होने जा रहा हो, तो फांटामारा अपने अधिकारों का उपयोग अवश्य करे।"

एक दिन रविवार को सवेरे एक मोटर लारी फांटामारा आई, और ड्राइवर ने सब किसानों को जो अवेज़ानो जाना चाहते थे, सवार हो जाने के लिए कहा। किराया

कुछ नहीं देना पड़ेगा। लॉरी तिरंगे झंडों से सजी हुई थी। वह अधिकारियों ने भेजी थी और हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भाड़ा कुछ नहीं देना पड़ेगा।

संयोग से ही हम दस-बारह आदमी फांटामारा में रह गए थे। बाक़ी काम पर चले गए थे। जब काम ज़्यादा हो तो गिरजा हमें सदा गर्मियों में रविवार को भी काम करने की इजाज़त दे देता है। लेकिन जून के अंत में कटनी शुरू होती है, इसकी जानकारी न होने के लिए हममें से किसी ने नई सरकार को दोष नहीं दिया। शहरवासियों की सरकार से यह जानने की उम्मीद ही कैसे की जा सकती थी कि वह कटनी का समय है ? लेकिन जिस सभा में फ्युसिनो-समस्या तय होनेवाली थी, उसमें उपस्थित रहने के लिए हम ख़ुशी-ख़ुशी एक दिन का काम छोड़ने को तैयार थे।

हम फांटामारावासियों की हमेशा यह मांग थी कि हमें भी फ्युसिनो में ज़मीन के टुकड़े लगान से मिलने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन टोर्लोनिया-शासन इसे कभी मंजूर नहीं करता था और हमारे परिश्रम का शोषण करनेवाले डाक्टरों, वकीलों, प्रोफेसरों और मालदार खेत-मालिकों को ही प्रधानता देता था। लेकिन हमने फ्युसिनो में कुछ ज़मीन लगान से मिलने की आशा पूरी तरह से कभी नहीं छोड़ी थी। हमारी एकमात्र आशा ज़मीन वापस मिल जाने की प्रतीक्षा करनी ही थी, जिसके बारे में डॉन सर्कोस्टांज़ा ने हमसे कई बार, खासकर चुनावों के समय, कहा था।

डॉन सर्कोस्टांज़ा का नारा था, "फ्युसिनो की ज़मीन उसे जोतनेवालों की।"

उसका कहना था कि फ्युसिनो राजकुमार टोर्लोनिया और अमीर खेत-मालिकों और वकीलों और दूसरे शौकीनों से लेकर उस पर खेती का काम करनेवाले किसानों को दे देना चाहिए। यह समाचार सुनकर कि फ्युसिनो का बंटवारा होनेवाला है, खासकर उस समय जब सरकार ने फांटामारा के किसानों के लिए सभा में शरीक होने को एक अलग लॉरी भेजी तो हम बहुत ही उत्तेजित हो गए। हम थोड़े-से लोग, जो फांटामारा में रह गए थे, बिना कुछ पूछ-ताछ किए लॉरी में सवार हो गए। मेरे सिवा उसमें बेरार्डो वॉयला, एंटोनियो ज़ापा, त्योफिलो देल्ला क्रोस, बाल्डोविनो स्यारपा, सिम्प्लीसियो, ग्यासोबी लोसुर्डो, पॉज़ियो पिलाटो और उसका लड़का, एंड्री कैपोरेल और राफेल स्कामोर्ज़ा थे।

लेकिन रवाना होने से पहले ड्राइवर ने पूछा, "तुम्हारी पताका कहां है ?"

"पताका कैसी ?"

ड्राइवर ने कहा, "मुझे ऐसी आज्ञा मिली है कि किसानों के हर-एक झुंड के साथ पताका होनी चाहिए।"

"लेकिन पताका क्या है ?" हमने पूछा।

"पताका एक झंडी है।" उसने जवाब दिया।

हमने नई सरकार पर खास कर इसलिए कि सम्मेलन में फ्युसिनो-समस्या तय की जानेवाली थी, कोई बुरा असर डालना ठीक नहीं समझा। त्योफिलो ने, जिसके पास गिरजाघर की चाभियां रहा करती थीं, सुझाया कि हम अपने साथ सैनरोक्को का झंडा ले चलें, और हम राजी हो गए। इसलिए वह और राफेल स्कामोर्ज़ा उसे लेने गिरजाघर गए। लेकिन ड्राइवर ने एक संत और उसका घाव चाटते हुए कुत्ते की तस्वीरवाला सफ़ेद-नीला बड़ा-सा पंद्रह गज लंबा झंडा देखा, जिसे लेकर आने में भी उन दोनों को बड़ी तकलीफ हो रही थी, तो लॉरी में ले चलने से इनकार कर दिया। लेकिन फांटामारा में अकेला वही एक झंडा था, और बेरार्डो उसे नहीं ले चलने की कतारों में खड़े थे। किसानों के प्रत्येक समूह के बीच कड़ाबीनवाले सैनिकों के दस्ते खड़े थे। साइकिल-सवार सिपाही चौक में चारों ओर आ-जा रहे थे। जैसे ही कोई नई लॉरी आती, सिपाही किसानों को उतारकर चौक में ऐसी जगह ले जाते, जहां वे किसानों के दूसरे झुंडों से अलग खड़े कर दिए जाते थे।

ख़ूबसूरत काले घोड़े पर सवार एक कड़ाबीनवाला सैनिक अफ़सर चौराहे में होकर निकला।

उसके ठीक बाद ही एक साइकिल-सवार सिपाही सब दस्तों के पास कोई हुक्म ले गया। हर एक दस्ते में से एक-एक सिपाही किसानों के एक-एक झुंड में गया और उन्हें बैठ जाने का हुक्म दिया।

हम ज़मीन पर बैठ गए। कोई एक घंटे तक बैठे रहे होंगे। एक घंटे बाद दूसरे हुक्म ने बहुत ही खलबली मचा दी। चौक के कोने में बड़े अफ़सरों का एक झुंड दिखाई दिया। सिपाहियों ने हमें हुक्म दिया, "उठो ! एकदम खड़े हो जाओ। ज़ोर से चिल्लाओ—पॉडेस्टा ज़िंदाबाद ! ईमानदार सरकार ज़िंदाबाद ! जो ग़रीबों को नहीं लूटती, ऐसी सरकार ज़िंदाबाद !"

हम खड़े हो गए और गला फाड़कर चिल्लाए—पॉडेस्टा ज़िंदाबाद ! ईमानदार सरकार ज़िंदाबाद ! जो ग़रीबों को नहीं लूटती, ऐसी सरकार ज़िंदाबाद !"

"ग़रीबों को नहीं लूटनेवाली सरकार" के सदस्यों में से हम खाली ठेकेदार को ही पहचानते थे। जैसे ही "ग़रीबों को नहीं लूटनेवाली सरकार" के सदस्य निकल गए, हम सिपाहियों की अनुमति से फिर बैठ गए।

कुछ मिनटों बाद दूसरे हुक्म ने और भी ज़्यादा हलचल मचाई। सिपाहियों ने हुक्म दिया, "उठो ! उठ खड़े हो और ज़ोर से बोलो, प्रिफेक्ट ज़िंदाबाद ! (प्रिफेक्ट

एक रोमन सरकारी अफ़सर—गवर्नर है !)

हम उठ खड़े हुए और ज़ोर से चिल्लाए, "प्रिफेक्ट ज़िंदाबाद।"

जब प्रिफेक्ट की बढ़िया मोटर निकल गई तो हम सिपाहियों के हुक्म से फिर बैठ गए।

लेकिन हम बैठे ही थे कि सिपाहियों ने हमें फिर खड़े होने के लिए कहा।

उन्होंने हुक्म दिया, "ज़ोर से, जितनी ज़ोर से हो सके चिल्लाओ—श्रीमान् सचिव महोदय की जय।"

जब हम ज़ोर से, जितनी ज़ोर से हो सका चिल्लाए, "श्रीमान सचिव महोदय की जय ! श्रीमान् सचिव महोदय ज़िंदाबाद !" तब एक बड़ी-सी मोटर और उसके पीछे बाइसिकिलों पर सवार चार आदमी बिजली की तरह निकल गए।

तब हम सिपाहियों की आज्ञा से फिर बैठ गए। ड्यूटीवालों की जलपान की छुट्टी हो गई। हमने भी अपनी झोलियां खोलीं और अपने साथ लाई हुई रोटियां खाने लगे।

दो बजे फिर से वैसा ही अभिनय शुरू हुआ। पहले सचिव, उसके बाद प्रिफेक्ट और फिर ग़रीबों को लूटनेवाली सरकार के सदस्य निकले। हर बार खड़े होकर ख़ूब उत्साह प्रदर्शित करने के लिए हम ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाए।

अंत में सिपाहियों ने हमसे कहा, "अब तुम्हें छुट्टी है। तुम जा सकते हो।"

सिपाहियों ने हमसे फिर कहा, "सब काम ख़त्म हो गया है। अब तुम जा सकते हो या एक चक्कर अवेज़ानो में घूम लो। तुम्हें एक घंटे का समय दिया जाता है। एक घंटे के अंदर तुम्हें यहां से चले ही जाना चाहिए।"

"सचिव की बात और फ्युसिनो समस्या का क्या हुआ ?" लेकिन किसी ने हमारी ओर कुछ ध्यान नहीं दिया।

जो कुछ हुआ था, उसे मालूम किए बिना हम घर लौट जाने को तैयार नहीं थे।

बेरार्डो ने जो अवेज़ानों के रास्तों से परिचित था, कहा, "मेरे साथ चलो।"

वह हमें झंडियों से सजे हुए एक महल के फाटक पर ले गया।

फाटक पर खड़े संतरी से उसने कहा, "हम सचिव से बात करना चाहते हैं।"

संतरी उस पर इस तरह टूट पड़ा मानो उसने कोई बहुत ही अपमानजनक बात कही हो और उसे फाटक के अंदर खींचने का प्रयत्न करने लगा। हमने उसे पकड़ लिया और उसे लेकर दोनों में ज़रा-सी खींचातानी हो गई। बहुत-से लोग

महल के अंदर से बाहर दौड़ आए, जिनमें डॉन सर्कोस्टांज़ा भी था, वह ख़ूब शराब पिए था और उसका कॉन्सर्टिना पतलून तीसरी अवस्था पर था।

"मेरे फांटामारावासियों को कोई निरादर न करे। उनके साथ अच्छी तरह से पेश आओ !" उसकी यह आवाज़ सुनकर संतरी ने हमें छोड़ दिया। डॉन सर्कोस्टांज़ा हमारे पास आया और हममें से प्रत्येक को गले लगाना और चूमना चाहा।

हमने 'जन-मित्र' से कहा कि हम सचिव से बात करना चाहते हैं।

उसने जवाब दिया, "सचिव तो चले गए।"

बेरार्डो ने कहा, "हम जानना चाहते हैं कि फ्युसिनो-सवाल कैसे तय हुआ।"

डॉन सर्कोस्टांज़ा ने एक सन्तरी को हमें राजकुमार टोर्लोनिया के दफ्तरों में ले जाने के लिए कहा, जहां एक अफ़सर ने हमें फ्युसिनो के बारे में जो कुछ तै हुआ था, बतलाया।

बेरार्डो ने पूछा, "तो नई सरकार ने फ्युसिनो का प्रश्न तय कर दिया ?"

"हां, फ्युसिनो-समस्या सभी संबंधित लोगों के संतोषानुसार तय कर दी गई है।"

"हम चर्चा में भाग लेने के लिए क्यों नहीं बुलाए गए ? हम बाहर चौक में ही क्यों खड़े रखे गए ?" पांज़ियो पिलाटो ने पूछा।

अफ़सर ने जवाब दिया, "सचिव का दस हज़ार किसानों से चर्चा करना संभव नहीं था। परंतु उन्होंने तुम्हारे प्रतिनिधि से चर्चा कर ली थी।"

"हमारा प्रतिनिधि कौन था ?"

"माननीय कप्तान पेलिनो।"

"ज़मीन का बंटवारा कैसे किया गया ? फांटामारा के किसानों को कितनी ज़मीन दी जाएगी ? बंटवारा कब हो रहा है ?" बेरार्डो ने पूछा।

अफ़सर ने जवाब दिया, "बंटवारा नहीं होगा। सचिव और किसानों के प्रतिनिधियों ने तय किया है कि छोटे-छोटे खेत-मालिकों को तोड़ दिया जाए। उनमें से कइयों को फ़ौज़ी सेवा के उपलक्ष्य में ज़मीनें दी गई थीं, परंतु फ़ौज़ी सेवा कोई सच्ची आर्थिक कसौटी नहीं है..."

"बिलकुल ठीक है।" बेरार्डो ने कहा, "लड़ाई पर जाने से यह साबित नहीं होता कि वे खेती का काम जानते हैं। ख़ास बात है खेती का काम जानना। फ्युसिनो उसे जोतनेवालों का है। डॉन सर्कोस्टांज़ा का यही सिद्धांत था।"

"सचिव ने इस सिद्धांत को मंजूर किया है। फ्युसिनो जोतनेवाले लोगों को दे दिया जाए। फ्युसिनो उन लोगों को दिया जाए, जिनके पास खेती करने या खेती करवाने के साधन हों। दूसरे शब्दों में फ्युसिनो उन लोगों को जिनके पास काफ़ी

पूंजी है। फ्युसिनो निकम्मे छोटे-छोटे खेत-मालिकों से लेकर बड़े-बड़े अमीर किसानों को दे दिया जाए। फ्युसिनो की ज़मीन जिनके पास बड़े आर्थिक साधन न हों, उन्हें लगान पर नहीं मिल सकती।"

"हमारे प्रतिनिधि ने क्या कहा ?"

"माननीय पेलिनो ने किसानों का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि राष्ट्रीय उपज के हक़ में किसान फ्युसिनो में लगान पर मिलनेवाली ज़मीन के बंटवारे से अलग कर दिए जाने चाहिए। इसे कार्यान्वित करने के लिए उन्होंने प्रस्ताव रखा कि बड़े पट्टीदारों का लगान बीस प्रतिशत कम और छोटे पट्टीदारों का लगान बीस प्रतिशत बढ़ा दिया जाए। लगान अनाज में, खासकर मीठे चुक़ंदर में चुकाया जाए जिसकी क़ीमत राजकुमार टोर्लोनिया का शासन-प्रबंध ठहराएगा। छोटे खेतिहरों को जो चुक़ंदर नहीं बोते, प्रति हेक्टेयर सात सौ लीरा देना पड़ेगा। तुम्हारे प्रतिनिधि के प्रस्ताव सम्पूर्णतया स्वीकृत हो गए। अवेज़ानो में एकत्र होनेवाले फ्युसिनो तलहटी के किसानों ने सचिव, प्रिफेक्ट और अन्य अधिकारियों का शानदार स्वागत करके इस विषय में अपना संतोष व्यक्त किया है। क्या तुम इस बारे में और कुछ जानना चाहते हो ?"

हमने कहा, "नहीं, इतना बिलकुल स्पष्ट है।"

और इतना बिलकुल ही स्पष्ट था।

सड़कों पर इतनी अधिक रोशनियां की गई थीं कि काफ़ी रात हो जाने पर भी उनकी वजह से दिन की तरह उजाला हो रहा था (सब कुछ बिलकुल ही स्पष्ट था)।

अवेज़ानो का दृश्य अजीब दुःखप्रद था, जैसे सब लोग पागल ही हो गए हों। मैंने लोगों को होटलों और आमोद गृहों में आनंद मनाते देखा। वे नाच रहे थे और बेसिर-पैर की मूर्खतापूर्ण बातें बक रहे थे। और मुझे अपने मन को यह निश्चय कराने के लिए कि जो घटनाएं हुई हैं वे सच थीं, काफ़ी प्रयत्न करना पड़ा। मैं अपने आप से पूछ रहा था—क्या वह सब एक मज़ाक़ था, या वे लोग अनजाने ही पगला गए थे ?

बेरार्डो बोला, "निर्लज्जतापूर्वक यह फ़ैसला किसानों के सिर पटककर शहराती मज़ा उड़ा रहे हैं, वे सुखी हैं, वे खा-पी रहे हैं..."

गंदे हाव-भावों के साथ गाते हुए शराबी युवकों का एक झुंड हमारे सामने से निकल गया।

गाना यह था—

तेरे और मेरे बाल
क्या खूब जंगल बनाएंगे...

उनके पीछे-पीछे दूसरा झुंड आया, जिसमें काली कुर्तीवाले वे जवान थे, जिन्होंने सवेरे अवेज़ानो आने पर हमारे पास से सैनरोक्को का झंडा ज़ब्त कर लिया था। हमें पहचानते ही वे चिल्लाने लगे, "ओ हो, हो हो, सैनरोक्का !" और साथ ही निर्लज्ज बातों की एक बौछार ! तब वे हमें घेरकर एक-दूसरे का हाथ पकड़े गोल-गोल नाचने लगे। वे अश्लील भंगिमाओं के साथ प्रेम का स्वांग (भांड़ों की तरह हंसोड़) करते हुए यह गीत भी गाते जाते थे—

तेरे और मेरे पांव
क्या ख़ूब महराब बनाएंगे...

हमने उन्हें कोई बाधा नहीं दी। कुछ और करने की हममें शक्ति ही नहीं रही थी। समझने के प्रयत्न को हम बहुत पहले ही तिलांजलि दे चुके थे। शहरवासियों के बीच, हम दूसरी ही दुनिया में थे।

युवक हमें वहीं छोड़कर चले गए। वे एक नृत्य-गीत 'ड्रॉलथेरेसा' 'हिम टु गैरीबाल्डी' की लय में गाते हुए चले गए।

इसके बाद ढंगदार कपड़े पहने, लाल बाल और लाल मूंछों और ठुड्डी पर घाव के निशानवाला एक भद्र-पुरुष, जो कुछ समय से हमारा पीछा कर रहा था, हमारे पास आया।

"तुम फांटामारा के हो ?" उसने हमसे पूछा।

हमने कोई जवाब नहीं दिया।

"क्या तुम यह जानते हो कि अधिकारी तुमसे डरते हैं ? अधिकारी यह जानते हैं कि तुम नई सरकार के ख़िलाफ़ हो।" वह बोलता रहा।

हम चुप ही रहे।

"तुम्हारा ऐसा करना बिलकुल ठीक है। नई सरकार का विरोध करना बिलकुल ठीक है। इस तरह से काम नहीं चल सकता। आओ, हम अधिक शांति से इस पर बातें करें।"

भद्र-पुरुष एक गली में मुड़ गया। हम उसके पीछे हो लिए। हमारे पीछे एक जवान आदमी आ रहा था, जो देखने से विद्यार्थी और कामगार के बीच की श्रेणी का जंचता था। वह हमारी ओर कई बार इस तरह मुस्कराया मानो हमसे कुछ

कहना चाहता हो। लाल बालोंवाला भद्र-पुरुष हमें एक एकाकी व खाली आमोद-गृह में ले गया। वह जवान आदमी भी पीछे-पीछे वहां तक आया। क्षण-भर हिचकिचाया और तब अंदर आकर हमसे थोड़ी ही दूर एक मेज़ के सामने बैठ गया।

"इस तरह से नहीं चल सकता। किसानों में असंतोष चरमसीमा को पहुंच गया है। लेकिन तुम अनपढ़ हो। नेतृत्व करने के लिए किसी पढ़े-लिखे की तुम्हें आवश्यकता है। डान सर्कोस्टांज़ा ने तुम्हारे बारे में बड़ी सहानुभूति से मुझसे कहा था। वह तुम्हारा भला चाहता है, लेकिन उसे अपना आगा-पीछा देखना पड़ता है और उसे अपनी मर्यादा के बाहर कदापि नहीं जाना चाहिए। यदि तुम्हें मेरी सेवाओं की आवश्यकता हो तो मैं हाजिर हूं। यदि तुम्हारी कोई योजनाएं हों तो मेरी सलाह ले सकते हो। मेरा मतलब समझे न ?"

उस अपरिचित भद्र-पुरुष का व्यवहार और जिस ढंग से उसने अपने-आपको हमारी सेवाओं में हाज़िर किया था, किसी को भी जो हमारी जैसी मानसिक दशा में न होता, शंकास्पद लगता। पहली बार ही एक शहराती हमारे साथ इतने विश्वासोत्पादक ढंग से बोल रहा था।

हम कुछ नहीं बोले।

"मैं तुम्हारे मन की बात समझता हूं। तुम्हारे मन की बात समझाने के लिए तुम्हारी आंखें काफ़ी हैं। सिपाहियों ने तुम्हें एक घंटे में अवेज़ानो से चले जाने के लिए कहा था, लेकिन तुम अभी तक यहीं हो। मैं तुम्हारा मतलब समझता हूं। तुम अधिकारियों के विरुद्ध कुछ करना चाहते हो। यह बिलकुल साफ़ है, इतना साफ़ कि तुम इससे इनकार नहीं कर सकते। और मैं यहां क्यों हूं ? क्यों, तुम्हारी सहायता करने, तुम्हें सलाह देने, अपने आपको तुम्हारे साथ बलिदान करने। आया तुम्हारी समझ में ?"

हम कुछ भी नहीं समझे थे। पांज़ियो पिलाटो कुछ कहने ही जा रहा था कि बेरार्डो ने कुहनी के ठोसे से उसे चुप कर दिया।

"बहुत ठीक। मैं खुद भी सरकार का दुश्मन हूं। शायद तुम हथियार चाहते हो; हां, तुम अधिकारियों पर चोट करना चाहते हो, लेकिन तुम्हारे पास साधनों की कमी है, तुम्हारे पास हथियार नहीं हैं। लेकिन मैं कहता हूं कि हथियार पाना मुश्किल नहीं, बहुत आसान है, दरअसल बहुत ही आसान, दुनिया में इससे अधिक और कुछ आसान नहीं होगा।"

हम अभी तक एक भी शब्द नहीं बोले थे, लेकिन वह आदमी सवाल पूछता और खुद ही उनका जवाब भी देता जाता था।

"तुम मुझे कह सकते हो कि यह सुनने में बहुत अच्छा लगता है, पर कहना एक बात है और करना दूसरी। बिलकुल ठीक, मेरी परीक्षा कर लो। यहां पंद्रह मिनट तक मेरी राह देखो और मैं तुम्हें जो तुम चाहते हो ला दूंगा, और इससे अधिक क्या ? मैं तुम्हें उसको काम में लेना भी बता दूंगा। क्या तुम अब भी मुझ पर संदेह करते हो ? क्या तुम्हें अब भी मुझ पर विश्वास नहीं होता ? बहुत अच्छा, यहीं मेरी राह देखना।"

वह उठ खड़ा हुआ, हमसे हाथ मिलाया, आर्डर की हुई शराब के दाम चुकाए और बाहर चला गया।

उसके जाते ही हमारे पास की मेज़ पर बैठा हुआ वह युवक हमारे पास आया और कहने लगा, "वह सरकारी जासूस था, लोगों को उकसानेवाला एजेंट ! होशियार हो जाओ। वह तुम्हें एक बम ला देगा और तब गिरफ्तार करवा देगा। उसके आने से पहले ही चले जाओ।"

हम खेतों के रास्ते अवेज़ानो से बड़ी सड़क की ओर रवाना हुए, ताकि कहीं उकसानेवाले एजेंट से सामना न हो जाए।

भूखे, प्यासे और कटुता से भरे हम उस सड़क पर अपने पांव घसीटने लगे, जिस पर होकर आशा से भरे और सैनरोक्को का झंडा हवा में फहराते हुए सवेरे अवेज़ानो आए थे।

लगभग आधी रात बीते हम फांटामारा पहुंचे। तीन बजे हम फिर सड़क पर फ्युसिनो की ओर जा रहे थे, क्योंकि कटाई शुरू हो गई थी।

पांच

ठेकेदार ने चरागाह के जिस टुकड़े पर अधिकार जमा लिया था, पंचायत ने उसके चारों ओर लकड़ी का एक बाड़ा बनवा दिया था।

बाड़ा सदा के लिए किसानों की शिकायत और बड़बड़ाहट मिटाने के इरादे से बनाया गया था। किसानों को युगों से सार्वजनिक सम्पत्ति रही आनेवाली ज़मीन

पर किसी के निजी कब्ज़ा कर लेने के बारे में अभी भी कुछ संदेह था और बाड़े के बावजूद वे बड़बड़ाते रहते थे।

एक दिन बाड़ा जला दिया गया।

ठेकेदार ने सार्वजनिक खर्चे से दूसरा बाड़ा बनवाकर उसकी देखभाल के लिए दो चौकीदार रख दिए।

लेकिन, क्या दो चौकीदार ज़मीन के उस टुकड़े को, जिसने सृष्टि के आरंभ से गड़रियों के झगड़े, लुटेरे, भेड़िए और सब तरह के युद्ध और हमले देखे हों, ज़बर्दस्ती बचा सकते थे ? वे नहीं बचा सकते थे।

चौकीदारों की ठीक नाक के नीचे बाड़ा जल उठा; उन्होंने साफ़-साफ़ ज़मीन में से अंगारे और लपटें निकलती देखीं, जिनसे कुछ ही मिनटों में सारा बाड़ा जलकर खाक हो गया। दोनों चौकीदारों ने, जैसा कि हर एक चमत्कार में होता है, यह सारा क़िस्सा डॉन अवाक्च्यो को और तब बाक़ी लोगों को सुनाया। डॉन अवाक्च्यो कई पुरानी पुस्तकें उलटने-पलटने के बाद इस निर्णय पर पहुंचा कि आग अवश्य ही अति-मानुषी थी, इसलिए प्रेत द्वारा लगाई हुई होनी चाहिए। यह सुनकर हमें निश्चय हो गया कि प्रेत इतना बुरा नहीं है, जितना वह बतलाया जाता है। ठेकेदार प्रेत को तो गिरफ्तार कर नहीं सकता था, इसलिए उसने बदले में दोनों चौकीदारों को जेल में डलवा दिया।

इसमें कौन बढ़कर रहेगा, प्रेत या ठेकेदार ? हम सभी ठेकेदार के ख़िलाफ़ थे, परंतु अकेला बेरार्डो वॉयला ही प्रेत का खुल्लम-खुल्ला पक्षपाती था।

एक सांझ झुटपुटे (गोधूलि) के समय गिरजाघर के सामने छोटे चौक के घाटीवाले हिस्से की ओर, छत के कटहरे के समान बनी हुई छोटी दीवाल पर हम फांटामारा की कुछ औरतें फ्युसिनो से अपने आदमियों के लौट आने की प्रतीक्षा में नित्य की तरह बैठी हुई इसी बारे में बातें कर रही थीं। वहां मैं थी, मेरिया ग्रेज़्या और सियामारुगा, फ़िलोमेना और कास्टाना और रेक्च्युटा और कानारोज़ो की लड़की थी। हम फ्युसिनो की ओर, जहां कभी से अंधेरा हो गया था, देख रही थीं। फांटामारा के नीचे, प्रधान सड़क की धूलवाली लकीर से दो भागों में बंटा हुआ मैदान जन-शून्य और स्तब्ध था। मैदान से ऊपर फांटामारा तक पहाड़ी का चक्कर लगाकर आनेवाली छोटी सड़क भी सुनसान थी।

हम जानती थीं कि हमारे आदमी देर से आनेवाले हैं, क्योंकि फ्युसिनो में कटाई के समय वे ज़्यादा देर तक काम करते थे। एकाएक सन्नाटे में से—हमने ध्यान नहीं दिया कि वह ठीक कब शुरू हुई थी—हमने एक-सी तालबद्ध

भिनभिनाहट सुनी जो शुरू में मधुमक्खियों की ओर धीरे-धीरे बढ़कर नाज पीटने की मशीन की आवाज़-सी मालूम पड़ी। आवाज़ मैदान से आ रही थी। लेकिन हमें उसका कुछ कारण समझ में नहीं आया। हमें नाज पीटने की कोई मशीन भी नहीं दिखाई दी। और फिर अनाज पीटने की मशीनें जब कटाई ख़तम होने लगती है, तभी मुख्य सड़क के आस-पास आती हैं।

आवाज़ निरंतर तेज़ होती जा रही थी।

ठीक उसी समय हमने घाटी से फांटामारा के ऊपर आनेवाली सड़क के पहले मोड़ पर लोगों से भरी हुई एक लॉरी आती देखी। उसके पीछे ही दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं लॉरी थी।

पांच लॉरियां फांटामारा की ओर आ रही थीं। लेकिन उनके पीछे-ही-पीछे—दूसरी और बहुत-सी थीं। और तब इतनी लॉरियां आती दिखाई दीं, जो किसी से गिनी नहीं जा सकती थीं। राम जाने, दस थीं कि पंद्रह थीं या बारह ? कॉनारोज़ो की लड़की का कहना था कि एक सौ हैं, पर वह गिन नहीं सकती थी। जब पहली लॉरी फांटामारा के सामने सड़क के आखिरी मोड़ पर आ गई, तो भी आखिरी लॉरी अभी पहाड़ी के नीचे ही थी। हमने पहले कभी इतनी अधिक लॉरियां नहीं देखी थीं। हमारे किसी के ख़याल में भी कभी नहीं आया था कि इतनी अधिक लॉरियां भी दुनिया में हो सकती हैं।

फांटामारा के सभी लोग—यानी स्त्रियां और बूढ़े जो फ्युसिनो नहीं गए थे—इतनी सारी लॉरियों की आवाज़ से घबराकर गिरजाघर के सामनेवाले चौक में भाग आए। उन लॉरियों के अनपेक्षित आगमन का हर एक भिन्न-भिन्न अर्थ लगा रहा था।

सॉसनिरा का कहना था कि यह तो यात्रा है, यात्रा। आजकल यात्री पैदल नहीं जाते, मोटरों में जाते हैं। वे हमारे सैनरोक्को की यात्रा को आए हैं।

पास्क्वेल सिपोला, जिसने शहर में फ़ौज़ी नौकरी की थी, बोला--नहीं, यह मोटर-दौड़ है। बहुत-से मोटर चलानेवालों ने आपस में होड़ बदी है कि कौन तेज़ चला सकता है। शहरों में आए दिन मोटर-दौड़ हुआ करती है।

लॉरियों की आवाज़ प्रतिक्षण बढ़ती ही गई और अब हमें उनके अंदर के आदमियों की ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ें भी सुनाई पड़ने लगी थीं। कड़कड़ाहट करती गोलियों की एक बौछार, और साथ ही गिरजाघर की खिड़की से कांच के गिरने ने हमारे विस्मय को भय में बदल दिया।

"वे गोलियां चला रहे हैं ! वे गोलियां चला रहे हैं ! वे गिरजाघर पर गोलियां

चला रहे हैं ! वे हम पर गोलियां चला रहे हैं !"

पर वे गोली चलानेवाले लोग थे कौन ? वे गोलियां क्यों चला रहे थे ? वे गोलियां किस पर और क्यों चला रहे थे ?

"यह लड़ाई हो रही है ! यह लड़ाई हो रही है !" जनरल बाल्डीसेरा चिल्लाने लगा, "यह लड़ाई हो रही है !"

लेकिन लड़ाई क्यों ? और हमारे ख़िलाफ़ लड़ाई क्यों ?

"यह लड़ाई है !" जनरल चिल्लाता रहा, "यह लड़ाई है ! 'क्यों' की तो राम ही जाने, पर यह लड़ाई है !"

गिरजाघर की देखभाल करनेवाले त्योफिलो ने "यदि लड़ाई है तो हमें युद्ध से बचने के लिए शांति-पाठ करना चाहिए," कहकर शुरू ही किया था, "पृथिवी: शांति, आप: शांति", कि गिरजाघर के सामनेवाले हिस्से पर गोलियों की एक दूसरी बौछार ने हम पर ईंटों के टुकड़े बिखेर दिए। शांति-पाठ में विघ्न पड़ा। सभी बातें मूर्खतापूर्ण मालूम पड़ रही थीं। लड़ाई ? लड़ाई क्यों होगी ? गिडिटा स्कारपोन बेहोश हो गई थी। हम उसके चारों ओर बकरियों के झुंड की तरह खड़े थे।

हम रोने-चीख़ने लगे। अकेला जनरल बाल्डीसेरा ही अपने होश-हवास दुरुस्त रख सका था। वह अब भी कह रहा था, "इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता। यह लड़ाई है ! यह लड़ाई है और इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता। यह लड़ाई है, यह भाग्य है। जब कभी लड़ाई छिड़ती है तो हमेशा ऐसा ही होता है।"

मेरिया विंसेंज़ा वॉयला को एक अच्छा उपाय सूझ गया।

वह बोली, "हमें गिरजाघर की घंटियां बजानी चाहिए। जब कभी देश पर विपत्ति आती है तब गिरजाघर के घंटे ही बजाए जाते हैं। 1860 में पिड्मांटिसी के आने पर लोगों ने सारी रात घंटे बजाए थे।"

लेकिन त्योफिलो तो मारे डर के खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसने मुझे चाभियां दे दीं। मैं और एल्वीरा खतरे का घंटा बजाने के लिए मीनार पर चढ़ीं। लेकिन एल्वीरा हिचकी।

उसने पूछा, "क्या औरतों के विरुद्ध भी कभी लड़ाई हुई है ?"

मैंने उत्तर में कहा, "मैंने तो एक भी नहीं सुना !"

"अच्छा, तो अभी आनेवाले ये आदमी हमारे नहीं, आदमियों के ख़िलाफ़ आए हैं। अगर वे आदमियों को पा जाएंगे, तो अवश्य ही ख़ून-खच्चर होगा—ज़रूर ही युद्ध हो जाएगा। खतरे का घंटा न बजाना ही ज़्यादा अच्छा है। यदि हम घंटा

बजाएंगी तो आदमी यह सोचकर कि आग लगी है, भागे आएंगे और तब मार-काट मच जाएगी।

एल्वीरा बेरार्डो के बारे में सोच रही थी। मैं अपने पति और पुत्र के बारे में सोच रही थी। इसलिए हम घंटियों को बिना छुए ही गिरजाघर के मीनार में ठहरी रहीं।

मीनार पर से हमने लॉरियों का फांटामारा के प्रवेश पर रुकते देखा।

राइफलें लिए हुए बहुत-से आदमी लॉरियों में से उतर पड़े। कुछ लॉरियों के पास ही रुके रहे। बाक़ी गिरजाघर की ओर बढ़े।

नीचे गांववाले शांति-पाठ ख़तम कर चुके थे और अब प्रार्थना करने लगे थे—

हे दयालु परमपिता परमात्मा,
इस युद्ध और अशांति से हमारी रक्षा कर !
परमात्मा, हमारी रक्षा कर !

गिरजाघर की देखभाल करनेवाला त्योफिलो प्रार्थना कहता था और हम उसके उत्तर में कहते थे—परमात्मा, हमारी रक्षा कर। त्योफिलो ने जितने पापों के बारे में वह सोच सकता था, उन सबके नाम लिए और हर एक के बाद हमने दुहराया, 'परमात्मा हमारी रक्षा कर।'

सभी दुःखों से परमात्मा, हमारी रक्षा कर !
सभी पापों से परमात्मा, हमारी रक्षा कर !

किसी को ज़रा भी यह ख़याल नहीं था कि क्या होनेवाला है। त्योफिलो जब हैजा, दुष्काल और मौत से रक्षा करने की प्रार्थना कर रहा था, उन सशस्त्र आदमियों की टुकड़ी चिल्लाती और बंदूकें हिलाती हुई चौक के कोने में दिखाई दी। उनकी ज़्यादा तादाद ने हमें डरा दिया। एल्वीरा और मैं आप-ही-आप मीनार के एक ऐसे कोने में दुबक गईं, जहां से अपने-आपको बिना दिखाए हम देख सकती थीं।

दो-दो की कतार में कोई सौ-एक हथियारबंद सिपाही रहे होंगे। राइफलों के सिवा उनकी कमर-पेटियों में खंजर भी थे। वे सब काली कमीजें पहने हुए थे। हम उनमें से केवल गांव के चौकीदार और सड़क सुधारनेवालों के मुकादम फिलिप्पो इलबेलो को पहचान सकीं, लेकिन दूसरे भी नितांत अपरिचित और दूर के रहनेवाले नहीं थे। उनमें से कुछ बे-खेत-खलिहानवाले ऐसे किसान थे, जो

ज़मींदारों के यहां काम करते हैं और कमाई की अपेक्षा अधिकतर चोरी और उठाईगिरी करके ही अपना गुजारा चलाते हैं। कुछ दूसरे फेरीवाले जो अक्सर हाट-बाज़ार में दिखाई देते हैं, और बर्तन मलनेवाले, और बड़े लोगों के कोचवान और गा-बजाकर मांगते फिरनेवाले लोग थे—कमजोर और बड़े ज़मींदारों के सामने ज़रा-ज़रा-सी सुविधाओं के लिए दुम हिलानेवाले ख़ुशामदी टट्टू और जूठे टुकड़े तोड़नेवाले दुराचारी लोग, जो एक समय हमारे पास वोट मांगने आते हैं, आज वही राइफलें लेकर हमारे ख़िलाफ़ लड़ाई करने आए थे। चोर और आवारों को व्यवस्था और सम्पत्ति की रक्षा करने का भार सौंपा गया था। बिना घरबार के, बिना इज़्ज़त के, बिना विश्वास के अधर्मी, ग़रीब और साथ ही ग़रीबों के दुश्मन वे लोग !

पेट पर तिरंगा पट्टा लपेटे ठिंगने कद का एक मोटा आदमी उनके आगे-आगे चल रहा था। उसके साथ मुर्गे की तरह अकड़ता हुआ फिलिप्पो इलबेलो क़दम रख रहा था।

"यह तुम क्या कह रहे हो ?" तिरंगे पट्टेवाले आदमी ने त्योफिलो से पूछा।

"मैं शांति के लिए प्रार्थना कर रहा हूं।" त्योफिलो ने जवाब दिया।

"बहुत अच्छा, मैं तुम्हें शांति दूंगा," उस ठिंगने-मोटे आदमी ने हंसते हुए कहा और फिलिप्पो इलबेलो को इशारा किया।

फिलिप्पो इलबेलो त्योफिलो के पास बढ़ आया और उसके चेहरे पर कसकर एक चांटा मारा।

त्योफिलो ने गाल को हाथ से सहलाते हुए चारों ओर देखा और हैरानी से पूछा, "चांटा क्यों मारा ?"

वह ठिंगना आदमी गुर्राने लगा, "डरपोक ! कायर ! बुज़दिल ! तू आत्म-रक्षा क्यों नहीं करता ? कायर कहीं का !"

लेकिन त्योफिलो न तो अपनी जगह से हिला, न एक शब्द ही बोला। उस मोटे आदमी ने अपने सामने झुंड में देखा, लेकिन उन स्त्रियों, बूढ़ों और बीमार आदमियों में उसे अधिक भड़कानेवाला कोई न दीखा। फिलिप्पो इलबेलो के साथ थोड़ी-सी सलाह करने के बाद उसने कहा—मेरे ख़याल से इस बारे में अब कुछ नहीं करना है।

तब झुंड की ओर मुड़कर उसने हुक्म दिया, "सब लोग घर चले जाओ।"

जब सब लोग घर चले गए तो काली कुर्तीवालों की ओर मुड़कर उस मुटल्ले ने हुक्म दिया, "पांच-पांच की टोलियां बनाओ और हर एक मकान की तलाशी लो और सब हथियार जब्त कर लो ! जल्दी, आदमियों के आने से पहले लौट

आओ।"

चौक बिजली की तरह खाली हो गया। इस वक्त तक काफ़ी अंधेरा हो गया था। हमारी जगह से हमने पांच-पांच की टुकड़ियां फांटामारा की कुछ संकरी गलियों में होकर घरों में घुसती देखीं।

मैंने और एल्वीरा ने सोचा कि बिजली बत्ती या किसी दूसरे उजाले की सहायता बिना इन क़ानून के प्रतिनिधियों को तलाशी लेना कठिन हो जाएगा।

लेकिन एकाएक ग्रेज़्या की चीख़ ने, जिसका मकान गिरजाघर की मीनार के ठीक पास था, और ठीक उसी समय दूर के घरों से फिलोमेना कास्टाना, सोफिया रेक्यूटा, लिजाबेत्तां लिमोना, कारासिना, फिलोमेना क्वेटर्ना आदि की वैसी ही चीख़ों और सामान उलटने-पलटने और कुर्सियां और खिड़कियां तोड़ने की आवाज़ों ने हम पर इन सशस्त्र आदमियों की वास्तविक मंशा को प्रकट कर दिया।

हमारे नीचे मेरिया ग्रेज़्या बलि-पशु की तरह चीख़ रही थी। खुले दरवाज़े की राह हमें, अस्पष्ट, पांच आदमियों के ख़िलाफ़ एक जवान स्त्री का झगड़ना दीख रहा था। कई बार वह झगड़ती-झगड़ती बचकर दरवाज़े तक पहुंची पर, हर बार उन आदमियों ने उसे पकड़कर रोक लिया। उन्होंने उसके पांव और कंधे पकड़कर उसे ज़मीन पर गिरा दिया और तब दबाकर उसके शरीर पर के कपड़ों का एक-एक चिंदा फाड़ डाला। उनमें से चार ने उसके हाथ-पांव पकड़ रखे और पांचवें ने उसके साथ अपनी इच्छा-पूर्ति की। मेरिया ग्रेज़्या की चीख़ें गला कटते हुए पशु की घरघराहट जैसी थीं। जब पहला आदमी समाप्त कर चुका तो उसकी जगह दूसरे आदमी ने ली और शहादत फिर से शुरू हुई। और जब दूसरा आदमी ख़त्म कर चुका तो तीसरे आदमी की और तब चौथे आदमी की बारी थी। लेकिन इस समय तक उस औरत की चिल्लाहट इतनी धीमी हो गई थी कि हम तक मुश्किल से सुन पड़ती थी। उसका झगड़ना और हाथ-पांव पटकना भी बिलकुल बंद हो गया था। चौथे और पांचवें आदमी की बारी में किसी को उसके हाथ-पांव पकड़ने की आवश्यकता न हुई। अपनी मंशा पूरी हो जाने के बाद वे आदमी हंसी के ठहाके लगाते हुए बाहर निकले और लिज़ाबेत्ता लिमोना के घर गए, जो वहां से बीस गज की दूरी पर था।

मेरी बगल में खड़ी हुई एल्वीरा ने यह सब देखा। इसे रोकने का कोई उपाय नहीं था। यह सब हमारी आंखों के ठीक सामने, नीचे कुछ गजों के फासले पर हुआ था। उसने छोटी-बड़ी प्रत्येक बात देखी थी। जब वह दोनों हाथ मेरी गर्दन में डालकर मुझसे लिपट गई तो उसका सारा बदन कांप रहा था। ऐसा लगता था

मानों गिरजाघर की वह मीनार और हमारे चारों ओर की सब ज़मीन ही हिल रही हो। मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे गिरने से रोका, नहीं तो वह लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे लुढ़ककर हमारी छिपने की जगह प्रकट कर देती। एल्वीरा फटी हुई भयभीत आंखों से अभी तक उस कमरे की ओर टकटकी लगाए देख रही थी, जहां मेरिया ग्रेज़्या का क्षत-विक्षत शरीर पड़ा हुआ था और जहां से वे पांचों आदमी अभी हाल ही में गए थे। मैं डरी कि वह कहीं पागल न हो जाए। एक हाथ से मैंने उसकी आंखें इस तरह मूंद दीं जैसे कोई मुर्दे की आंखें मूंदता है। तब एकाएक मैं बहुत कमज़ोर हो गई, मेरे पांव लड़खड़ाए और सब कुछ अंधकारमय हो गया।

"जो कुछ तुम्हें सुनाया है, इसके सिवा मुझे उस रात की और कोई घटना याद नहीं रही।"

"कई बार ऐसा होता है कि मैं दुनिया-भर की और सब बातें भूल जाती हूं, पर याद रहती है उस रात की केवल वह घटना जो मैंने तुम्हें अभी सुनाई है। कभी-कभी मैं ऐसा ही महसूस करती हूं। बाद की बातें मेरा पति तुम्हें सुनाएगा।"

फ्युसिनो से लौटते हुए हम लोगों को इन घटनाओं के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। यही तो दुःख है कि इन औरतों ने गिरजाघर की घंटियां नहीं बजाईं।

घर लौटते वक्त पेसिना के पास मेरा और बेरार्डो वॉयला का, विन्सेंज़ों स्कॉर्ज़ा, पैपासिस्टो, सिरोज़ि रोंडा, मेरिया ग्रेज़्या के बाप और लिज़ाबेत्तां लिमोना के मंगेतर के साथ हो गया था और हम साथ-साथ घर आ रहे थे। ग्यासिंटो बार्लेट्टा, क्विंटिलियानो, वेनेर्डी सेंटो, लुइजी सेर्पा और दूसरे हमारे पीछे थे।

गांव के बाहर इतनी-सारी लॉरियां और उनके पास हथियारबंद आदमी देखकर बेरार्डो ने कहा, "मेरे ख़याल से यह बाड़े के बारे में है। ठेकेदार समझता है कि फांटामारा में से किसी ने बाड़ा जलाया है।"

लॉरियों के पास खड़े हुए हथियारबंद आदमियों में से कई बेरार्डो को पहचानते थे, पर उन्होंने अपने फांटामारा आने का कारण नहीं बतलाया, शायद वे खुद नहीं जानते थे। उन्होंने हमें रोक लिया और जब हमारे पीछेवाले आदमी आ गए तो हम सबको गांव के अंदर ले गए। अंदर आकर हमने सड़क सुधारनेवालों से मुकादम फिलिप्पो इलबेलो के साथ मोटी तोंदवाले नाटे आदमी के नेतृत्व में हथियारबंद आदमियों को एक घेरा बनाए हुए खड़े देखा।

घेरे के अंदर जनरल बाल्डीसेरा, त्योफिलो, पास्केला सिपोला, बूढ़ा एंटोनियो बासियोला, अनाक्लेटो दर्जी आदि मुंह बंद किए और डरे हुए लड़ाई के बंदियों की तरह चुपचाप खड़े दिखे।

हमारे पहुंचते ही घेरा खुला और हमें अंदर लेकर फिर बंद हो गया।

बेरार्डो ने मेरी ओर इस तरह से देखा मानो उसकी समझ में नहीं आया कि इस बात पर हंसे या गुस्सा हो। हमारे आने से पहले जो कुछ हुआ था, उसके बारे में हमने जनरल बाल्डीसेरा से जानने की कोशिश की। लेकिन मेरे कान के पास मुंह लाकर उसने धीरे से खाली इतना ही कहा, "यह बिलकुल अजीब वाक़या है।" फिर वह बेरार्डो और दूसरे आदमियों के पास गया और उनके कान में भी यही कहा। उसके 'यह बिलकुल अजीब वाक़या है,' कहने से हमारी समझ में तो कुछ नहीं आया। पर, हां, बाल्डीसेरा के मुंह से जो गंभीरतम घटनाओं के लिए भी इतिहास से हमेशा उदाहरण तैयार रखता था, यह सुनना बहुत ही अजीब लगा।

फ़्युसिनो से लौटनेवाली तीसरी टुकड़ी को अंदर लेने के लिए हथियारबंद आदमियों का घेरा एक बार फिर खुला। इनमें पांजियो पिलाटो, ग्यासोबी लुसुर्डो, माइकेल ज़ोम्पा, ग्योवानी टेस्टोन, ग्योवानी युलिया, गैस्पेरोन और कुछ ज़वान छोकरे थे।

उन्होंने हमारी ओर इस तरह से देखा मानो सारे झगड़े की जड़ हमीं हों, लेकिन सारे हथियारबंद आदमियों की उपस्थिति में वे कुछ न बोले।

उनके बाद घेरे में आनेवाले एचिली प्युंज़ो, एल्बर्टो सेसोन, पैलुम्मो, रेक्च्युटा का पति, सेसिडियो वर्डोन और मेरिया ग्रेज़्या के सगाई-वर के सहित कुछ और छोकरे थे।

यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या होनेवाला है। सभी चुप थे। कोई किसी की ओर देखता नहीं था। सभी महसूस करते थे कि हमारे और अधिकारियों के बीच कुछ गड़बड़ हो गई है, लेकिन कोई भी दूसरों की अपेक्षा अधिक खतरा मोल लेना नहीं चाहता था। हर एक अपने बारे में पहले सोचता था।

हथियारबंद आदमियों का घेरा एक बार और एंटोनियो स्पावेंटा, राफेल स्कार्पोन, लुइजी देल्लाक्रोस, एंटोनियो ज़ापा और कुछ दूसरे लोगों को अंदर लेने के लिए खुला।

उस मुटल्ले के इरादों के बारे में ख़याल दौड़ाना मुश्किल था। क्या वह हम सबको जेल ले जाना चाहता था ? यह बिलकुल ही असंभव और सरासर अनहोनी बात थी।

कुछ समय तक हम अपने गांव के बीच चौराहे में रोक कर रखे जा सकते थे। लेकिन, हम सबको शहर में जेल तक घसीटने के लिए उतने आदमी काफ़ी नहीं थे।

इन काली कुर्तीवालों को हम पहचानते थे। ये रात में आए थे, नहीं तो इन्हें यह सब करने का साहस न होता। बहुतों के शरीर से शराब की बदबू आती थी। आंखें मिलाने की हिम्मत न होने से सामने देखने पर ये मुंह फेर लेते थे। ये भी ग़रीब ही थे, परंतु एक खास तरह के गरीब; बे-खेत-खलिहान के, परिश्रम से जी चुरानेवाले, पेट भरने के लिए रोज कुछ-न-कुछ नया दग़ाफरेब करनेवाले, एक भी धंधा न जाननेवाले या बहुत-से धंधे जाननेवाले, जो एक ही बात है। अमीरों और अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह करने की शक्ति और आत्मप्रतिष्ठा न होने से ये छोटे खेत-मालिकों और किसानों जैसे अन्य ग़रीबों पर अत्याचार करने और लूटने की ख़ातिर उनके तलुवे सहलाना कहीं ज़्यादा पसंद करते थे। दिन-दहाड़े ये सड़कों पर ग़रीब बने गिड़गिड़ाते फिरते थे। रात में और ज़्यादा संख्या में इकट्ठे होकर दुष्ट और उत्पाती बन जाते थे। ये सदा हुक्म देनेवाले के अधीन रहते आए हैं और सदा रहेंगे। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से इन्हें एक खास ढंग की वर्दी और ख़ास ढंग के हथियार देकर एक विशेष फ़ौज़ में भर्ती करना बिलकुल नई और अजीब बात थी।

फासिस्ट कहे जानेवाले सब-के-सब ऐसे ही लोग हैं।

उनके साहस का एक दूसरा कारण भी था। हममें से हर एक उनमें से तीन-तीन के लिए काफ़ी था। परंतु उनके बीच हम कर ही क्या सकते थे ? हमें आपस में एक दूसरे से बांधनेवाला—संयुक्त करनेवाला—ऐसा था ही क्या ? हमारे बीच आपस में जोड़नेवाली ऐसी कड़ी ही कौन-सी थी ?

घेरे के बीच हम सब खड़े थे। हम सभी फांटामारा में पैदा हुए थे। इसके सिवा हममें और कोई समानता नहीं थी। हममें से प्रत्येक पहले अपनी-अपनी सोचता था। हर एक दूसरों को हथियारबंद आदमियों के घेरे में छोड़कर खुद अकेला बाहर निकल जाने की तरकीब सोचता था। हममें से सभी परिवारवाले थे और सब अपने-अपने परिवार की सोचते थे।

बेरार्डो अकेला ही एक अपवाद हो सकता था, लेकिन उसके न तो ज़मीन थी और न जोरू ही।

इसी बीच फ्युसिनो से दूसरे किसान आए, जिनमें सियामारुगा का पति भी था, और वे भी घेरे में कर लिए गए।

इस समय तक काफ़ी देर—अंधेरा—हो गई थी।

वह ठिंगना और मुटल्ला आदमी बोला, "हमें पूछताछ शुरू करनी चाहिए।"

पूछताछ ? कैसी पूछताछ ?

उन्होंने घेरे के अंदर कोई एक गज चौड़ा रास्ता-सा बनाया और उसकी एक ओर वह मोटा आदमी और दूसरी ओर फिलिप्पो इलबेला खड़े हो गए।

पूछताछ शुरू हुई। पहला नाम गिरजाघर की देखभाल करनेवाले त्योफिलो का पुकारा गया।

मोटे आदमी ने पूछा—जय किसकी ?

त्योफिलो एक धमाके से ज़मीन पर आ गिरा।

न्याय के उस प्रतिनिधि ने फिर दुहराया—जय किसकी ?

त्योफिलो ने अपने करुणापूर्ण, डरे हुए चेहरे से किसी प्रेरणा की आशा में हमारी ओर देखा, लेकिन इसके बारे में हमें, जितना वह जानता था, उससे अधिक कुछ मालूम नहीं था।

जब त्योफिलो ने कोई जवाब नहीं दिया तो वह आदमी फिलिप्पो इलबेलो की ओर, जिसके हाथ में एक बड़ी-सी किताब थी, मुड़ा और बोला—लिखो 'नियम तोड़नेवाला'।

उन्होंने त्योफिलो को जाने दिया—छोड़ दिया। दूसरा नाम अनाक्लेटो दर्ज़ी का पुकारा गया।

मोटे आदमी ने उससे पूछा—जय किसकी ?

अनाक्लेटो ने जिसे सोचने का समय मिल चुका था, जवाब दिया—मेरी की जय।

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा—कौन-सी मेरी ?

'लॉरैटो की मेरी।'

ठिंगने आदमी ने कहा—'नियम तोड़नेवाला' लिखो।

उन्होंने अनाक्लेटो को जाने दिया। दूसरा नाम बूढ़े इंटानियो ब्रासियोला का पुकारा गया। उसके पास भी जवाब तैयार था।

वह चिल्लाया—सैनरोक्को की जय !

लेकिन उसका उत्तर भी संतोषप्रद नहीं था।

उस ठिंगने—मोटे आदमी ने कहा—'नियम तोड़नेवाला' लिखो।

चौथा नाम पास्केल सिपोला का था।

उससे पूछा गया—जय किसकी ?

"माफ़ कीजिए, लेकिन आपका मतलब क्या है ?" सिपोला ने पूछने की हिम्मत की।

"जो कुछ तुम्हारे मन में हो साफ़ जवाब दो। किसकी जय ?" मोटे आदमी

ने पूछा।

"दाल-रोटी की जय।" पास्केल सिपोला का जवाब सोलहो आने ईमानदारी से पूर्ण था। लेकिन उसके लिए भी 'नियम तोड़नेवाला' ही लिखा गया।

हममें से हर एक की बारी आनेवाली थी और अधिकारियों के प्रतिनिधि का अपेक्षित उत्तर कोई भी नहीं सोच सका था।

हमारी सबसे बड़ी चिंता थी कि ग़लत जवाब देने से कहीं कुछ देना तो नहीं पड़ेगा। 'नियम तोड़नेवाला' का अर्थ कोई नहीं जानता था, लेकिन 'देने' का अर्थ हम सभी अच्छी तरह से जानते थे।

सही जवाब देने के लिए इशारा पाने की आशा में मैंने जनरल बॉल्डीसेरा के जितना समीप हो सकता था, पहुंचने की कोशिश की, क्योंकि वह हममें सबसे ज़्यादा पढ़ा-लिखा था और अपनी जवानी के दिनों नेपल्स में भी रह चुका था। लेकिन वह मेरी ओर इस तरह से एक श्रेष्ठ और तरस खानेवाली हंसी हंसता हुआ देख रहा था मानो वह ठीक उत्तर जानता है; लेकिन किसी को बतलाएगा नहीं।

जब मोटे आदमी ने उससे पूछा, "किसकी जय ?" तो बूढ़ा मोची अपनी टोपी उतारकर पुकार उठा, "रानी मार्ग्रेट की जय !"

इसका बॉल्डीसेरा की आशा से भिन्न ही परिणाम हुआ। सभी हथियार-बंद आदमी क़हक़हे लगाने लगे और मोटे आदमी ने कहा, "वह मर गई है। रानी मार्ग्रेट मर गई है।"

बूढ़े मोची ने भयभीत होकर कहा, "वह मर गई है ? यह हो ही नहीं सकता ! असम्भव !"

मोटे आदमी ने कहा, "लिखो विधानवादी।"

इस अकारण घटना के परिणामस्वरूप उदास होकर सिर हिलाता हुआ बॉल्डीसेरा चला गया। बेरार्डो के सिखाने से अपनी बारी पर एंटोनियो ज़ापा ने कहा, "लुटेरों का नाश हो !" इसे सुनकर काली कुर्तीवालों की ओर से विरोध में एक फुसफुसाहट हुई।

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो को 'अराजकतावादी' लिखने की आज्ञा दी।

ज़ापा चला गया, और अब एंटोनिया स्पावेंटा की बारी थी।

वह बोला, "आवारों का नाश हो। इस पर काली कुर्तीवालों ने फिर शोर किया। स्पावेंटा भी 'अराजकतावादी' लिख लिया गया।

मोटे आदमी ने लुइजी देल्लाक्रोस से पूछा, "जय किसकी ?" लेकिन वह भी बेरार्डो का ही शिष्य था इसलिए 'जय' बोलने के बजाय उलटा ही जवाब दिया,

"करों का नाश हो।"

इस बार फासिस्टों ने कोई प्रतिकार नहीं किया, लेकिन देल्लाक्रोस भी 'अराजकतावादी' ही लिखा गया।

न्याय के प्रतिनिधि के ठीक मुंह पर जब राफेल स्कार्पोन ने कहा, "मजदूरी चुकानेवाले लोगों का नाश हो।" तो बहुत अधिक सनसनी फैल गई।

मोटे आदमी ने उसे गिरफ्तार करना चाहा, परंतु राफेल ने जवाब देने से पहले ही घेरे से बाहर हो जाने की होशियारी की थी। दो छलांगों में तो वह गिरजाघर के पीछे पहुंच गया था, और उसके बाद हमें नहीं दिखाई दिया।

बाक़ी के कुछ अधिक समझदार थे। उनमें पहला ग्यासोबी लोसुर्डो था।

उसने जवाब दिया, "सबकी जय।" इससे अधिक निरापद जवाब सोचना मुश्किल था। परंतु यह भी ठीक नहीं निकला।

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो से कहा, " 'उदार' लिखो।"

ग्योवानी युलिवा ने पवित्र आशय से कहा, "सरकार की जय।"

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा, "कौन-सी सरकार ?"

युलिवा ने एक से अधिक सरकारों के बारे में कभी सुना ही नहीं था, तो भी उसने नम्रता की खातिर जवाब दिया, "न्यायपूर्ण सरकार।"

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो से कहा, "लिखो 'राज्य-द्रोही'।"

पांज़ियो पिलाटो ने भी अच्छाई के ख़्याल से अपनी बारी आने पर 'सरकार की जय' ही कहा।

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा, "कौन-सी सरकार ?"

"अन्यायी सरकार !"

मोटे आदमी ने कहा, " 'अपराधी' लिखो।"

अभी तक सही जवाब कोई भी नहीं दे सकता था। जितने ही ज़्यादा ग़लत जवाब इकट्ठे होते गए, सही उत्तरों का चुनाव क्रमशः अधिकाधिक परिमित होता गया। लेकिन, वास्तव में ग़लत जवाब देने पर कुछ चुकाना पड़ेगा या नहीं, इस बारे में हम अभी तक बिलकुल अंधेरे में थे। अकेले बेरार्डो को इस संभावना की कोई चिंता नहीं थी और वह अपने युवक मित्रों को 'अमुक की जय' के बजाय 'अमुक का नाश' वाले ढीठतापूर्ण जवाब सुझाकर स्वयं मजा लूट रहा था।

बेनेर्डी सेंटो ने कहा, "बैंक का नाश हो।"

"कौन-सा बैंक ?" फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा।

बेनेर्डी ने, जिसे अच्छी तरह मालूम था, जवाब दिया, "बैंक केवल एक है

और जो सिर्फ़ ठेकेदार को ही रुपए देती है।"

मोटा आदमी बोला, "लिखो 'समाजवादी'।"

गैस्पेरोन भी "टोर्लोनिया का नाश हो !" जवाब के लिए 'समाजवादी' लिखा गया।

"ग़रीबों की जय !" इस जवाब के लिए पालुमो को साम्यवादी लिखा गया।

इसी बीच बेरार्डो की दादी, मेरिया विंसेंज़ा, चौराहे के दूसरी ओर से वहां आई। थोड़ी देर पहले ही हमने उसे मेरिया ग्रेज़्या के घर में जाते देखा था।

वह बूढ़ी चिल्लाने लगी, "बेरार्डो ! बेरार्डो कहां है ? इन डाकुओं ने हमारे घरों में क्या कर डाला ? हमारी औरतों के साथ इन्होंने क्या किया ? और हमारे आदमी ? हमारे आदमी कहां हैं ? बेरार्डो, ऐ बेरार्डो !"

बेरार्डो एकदम समझ गया या समझने का अभिनय किया। एक ही छलांग में वह फिलिप्पो इलबेलो के सामने, जो भय से पीला पड़ गया था, जा पहुंचा और उसका गला पकड़कर उसने पूछा, "एल्वीरा कहां है ? तुमने एल्वीरा का क्या किया ?"

बूढ़ी मेरिया ग्रेज़्या, जो इस समय तक गिरजाघर की देहलीज पर पहुंच गई थी, घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगी, "देवीमाता, हमें बचा, हमारी रक्षा कर, हमारी बाधाएं हर !"

वह प्रार्थना कर ही रही थी कि गिरजाघर के बड़े घंटे की आवाज़ ने हम सबका ध्यान मीनार के सिरे की ओर आकर्षित किया।

हमें वहां कटघरे पर अपने हाथों के सहारे झुकी हुई लंबी, दुबली, बर्फ़ से सफ़ेद चेहरेवाली एक स्त्री की छायाकृति—एक प्रेतात्मा—दिखी।

हमारी सांस ही बंद हो गई। इतने में वह आकृति गायब हो गई।

"यह देवीमाता है ! यह देवीमाता है।" भय-विह्वल फिलिप्पो इलबेलो चिल्ला उठा।

दूसरे हथियार-बंद आदमी भी चिल्लाने लगे, "वह देवीमाता है। वह देवीमाता है !"

हथियार-बंद आदमियों का घेरा तितर-बितर होकर गांव के बाहर लॉरियों की ओर सिर पर पैर रखकर भागा।

हमने इंजिनों का चालू होना सुना। तब सामने की बिजलियां जलाए पहाड़ी के नीचे की ओर अंधा-धुंध भागती हुई लॉरियां दीख पड़ीं। वे इतनी ज़्यादा थीं कि हम गिन नहीं सकते थे। उनका जुलूस समाप्त होता ही नज़र नहीं आता था।

पहाड़ी के तले, आखिरी मोड़ पर जहां पहाड़ी सड़क प्रधान सड़क से मिलती है, हमने लॉरियों का जुलूस एकाएक रुकते देखा। वे आधे घंटे से ज़्यादा देर तक रुकी रहीं।

मैंने बेरार्डो से पूछा, "वे किसलिए रुके हैं ? क्या वे फिर आ रहे हैं ?"

उसने हंसते हुए जवाब दिया, "उनके रुकने का कारण राफेल स्कार्पोन जानता है।"

लॉरियों के फिर चालू होने तक काफ़ी देर हो गई थी, इसलिए मैंने बेरार्डो से पूछा, "क्या हम सोने चलें या एकाध घंटा इंतज़ार करने के बाद फ्युसिनो चल दें ?"

"सबसे पहला काम है चलकर यह देखना कि गिरजाघर की मीनार में कौन है ?" बेरार्डो ने कहा।

बेरार्डो भूत में विश्वास करता था, लेकिन देवीमाता में नहीं। यदि भूत दिखाई पड़ता तो वह विश्वास कर लेता, लेकिन देवीमाता के बारे में उसे विश्वास नहीं आया।

हम मीनार पर चढ़े और वहां मेरी स्त्री और एल्वीरा को मुर्दे से भी बुरी हालत में पाया।

दूसरे दिन हमें मालूम हुआ कि सड़क पर रखे हुए एक वृक्ष के तने से पहली लॉरी टकराकर उलट गई थी और इसलिए पहाड़ी के नीचे लॉरियों का जुलूस रुक गया था। कई लोग घायल हुए थे, जिनमें कमर के चारों ओर तिरंगे पट्टेवाला वह ठिंगना और मोटा आदमी भी था।

छः

उस रात के दुःखद अनुभव से एल्वीरा बीमार पड़ गई। कुछ ही पहले उसे रंगने और बुनने के लिए थोड़ा-सा ऊन मिला था, लेकिन बीमारी की वजह से काम करने की असमर्थता ने उसे बहुत ही बेचैन कर दिया था। हमारे

यहां लड़ाई के समय से ही बुनने का धंधा करीब-करीब मर चुका था। एल्वीरा का करघा अब भी थोड़े-से चालू करघों में से एक था, लेकिन उसके पास भी काम निरन्तर कम होता जा रहा था। आजकल कभी-कदास ही कोई उसके पास कुछ गज ऊन बुनवाने और रंगवाने लाता था। पास-पड़ोस के गांवों में शताब्दियों से चलते आ रहे करघों की होली ताप ली गई थी। इसके कई कारण थे—स्थानीय भेड़ों का चला जाना, शहर में बने ऊनी माल का प्रचलन और किसानों की निरंतर बढ़नेवाली ग़रीबी।

एल्वीरा ने बेरार्डो से आग के लिए लकड़ी काटने की मदद मांगी, जिसे उसने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया; परंतु बदले में पैसा लेने को राजी नहीं हुआ। वह न केवल लकड़ियां ही काटता था, बल्कि एल्वीरा की देख-रेख में उसने ऊन की रंगाई भी शुरू कर दी थी।

एल्वीरा एक कोने में अपने पुआल के बिछौने पर पड़ी रहती थी। उस रात के सदमे से वह अभी तक अच्छी नहीं हुई थी और उसका पीलापन नहीं गया था। शायद इस पीलेपन की वजह से ही उसके काले बालों और काली आंखोंवाला गोल, सांवला चेहरा और दुबला शरीर अधिक सुंदर दिखाई देता था। वह सूचनाएं देती थी और बेरार्डो एक नौसिखिए बच्चे के उत्साह से उनका पालन करता था। कभी-कभी वह उसे परेशानी में डालनेवाले सवाल भी पूछ बैठता था जैसे यही कि नील में डालने से पीला कपड़ा मूंगिया क्यों हो जाता है ?

वह जवाब देती—इसके सिवा वह और कुछ हो ही नहीं सकता।

"लेकिन क्यों ?" बेरार्डो पूछता।

"क्योंकि ऐसा ही होता है।" वह जवाब देती और तब अपनी बात के आधार के लिए पूछती, "अच्छा, सूरजमुखी फूल के बीजों से प्याज़ क्यों नहीं उगते ?"

जवाब में बेरार्डो कहता—दिल्लगी मत करो। यह तो उजागर है कि यदि सूरजमुखी फूल के बीज ही बोए गए हैं तो प्याज़ न उगकर सूरजमुखी ही उगेंगे।

इस तरह की बातचीत से कोई हानि—छेड़छाड़—होने की संभावना नहीं थी। जब-जब मैं रंगसाजी की दूकान में एल्वीरा के कुशल-समाचार पूछने गया, बेरार्डो, क़रीब-क़रीब आधे कमरे में फैली हुई मिट्टी की दो बड़ी नांदों के आसपास व्यस्त दिखाई दिया। कमरे की भाप से घनी हवा में बेरार्डो या तो नांदों में उबलते हुए कपड़े एक लंबे, काले लट्ठे से ऊपर-नीचे करता या ईंधन झोंकता दिखाई देता।

एक रात मेरी उपस्थिति में एल्वीरा ने बेरार्डो को मेहनताने में कुछ रक़म देनी चाही, परंतु उसने सदा की नाईं अक्खड़तापूर्वक लेना अस्वीकार कर दिया।

तब मैंने कहा, "बेरार्डो पैसे नहीं लेता, क्योंकि वह चाहता है कि तुम वे पैसे शादी के लिए जमा करो।"

एल्वीरा का चेहरा सिंदूर की तरह लाल हो गया और बेरार्डो ने ऐसा मुंह बनाया मानो मुझे पीटेगा।

मैंने मन-ही-मन कहा, "मामला बेढब है। बेरार्डो शादी करनेवाला आदमी नहीं है।"

दूसरे दिन सवेरे बेरार्डो की दादी मेरिया विन्सेंज़ा मेरे पास आई और बोली, "क्या तुमने बेरार्डो को देखा है ?"

मैंने अचरज से पूछा, "क्या, वह कल रात नहीं आया ?"

बुढ़िया यह कहकर कि 'ना, नहीं आया' चली गई।

थोड़ी देर बाद बेरार्डो आया। वह बिना राम-राम किए ही दरवाज़े पर खड़ा हो गया और मैं भी कुछ नहीं बोला। जब मैं नीचे खेतों में जाने के लिए तैयार हुआ, तो वह बोला, "मुझे कुछ सलाह चाहिए।"

जीवन में आज पहली बार ही वह सलाह मांग रहा था।

वह आगे बोला, "विवाह के मामले की सलाह है। कल जब तुमने इस ओर इशारा किया तो यह इतना आवश्यक नहीं था, लेकिन अब है।"

मैं समझ गया कि बेरार्डो ने रात एल्वीरा के साथ बिताई है।

"मेरी सलाह है कि तुम जल्दी-से-जल्दी एल्वीरा के साथ विवाह कर लो। तुम्हारा फायदा-ही-फायदा है, नुक़सान कुछ नहीं। और फांटामारा में उससे अच्छी लड़की और कोई नहीं है।"

बेरार्डो ने मुझे जवाब दिया, "तुम नहीं समझते। क्या मैं ख़ुद नहीं जानता ? जानता हूं। लेकिन मैं क्या हूं ? एक बे-खेत-खलिहान का किसान, एक बिना बिल का चूहा। मुझ बे-खेत-खलिहानवाले के साथ यदि एल्वीरा शादी करने को राजी है तो भी कोई लाभ नहीं। अगर एल्वीरा में अकल नहीं है तो मुझमें तो है। अकेले या अपनी दादी के साथ भूखों मरने में कोई हानि नहीं। लेकिन अपने घर में एल्वीरा के साथ भूखों मरना ? आज इसके यहां और कल उसके वहां इस समय रोजी-मजूरी करते फिरने में कोई हानि नहीं। लेकिन क्या एल्वीरा का पति रोजी-मजूरी करता फिरे ? क्या एल्वीरा का पति बे-खेत-खलिहानवाला किसान हो ?"

"यह सब तुमने पहले क्यों नहीं सोचा ? कल रात, एल्वीरा के साथ सोने से पहले तुम्हें यह सब सोच लेना चाहिए था।"

"तुम नहीं समझते। इसका यह मतलब नहीं कि मैं एल्वीरा को छोड़ने के

लिए राजी हूं या किसी और को उसके साथ शादी करने दे सकता हूं।" उसे गुस्सा आ रहा था।

हर एक मामले में बेरार्डो इसी तरह से बहस करता था। उससे सारे दिन बहस करके भी कोई नतीजा नहीं निकल सकता था।

लेकिन इस बार बात बिलकुल सीधी मालूम हुई। इसलिए ज़रा-से में निबटा देने के ख़्याल से मैंने उससे एक सीधा सवाल पूछा, "तुम एल्वीरा के साथ शादी करना चाहते हो या नहीं ?"

"तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आया और न कभी तुम समझोगे।" बेरार्डो ने कहा और चलता बना।

बेरार्डो बहुत ही उदास मालूम पड़ता था। वास्तव में उसके पास ज़मीन का न होना ही उसके दुःख का मूल कारण था। अब तक वह अपने लंबे-चौड़े तर्कों से इस समस्या को किसी तरह टालता आ रहा था, परंतु घर बसाने की तात्कालिक आवश्यकता होते ही यह समस्या उसके सामने मुंह-फाड़े आ खड़ी हुई थी।

फांटामारा और पास-पड़ोस के अधिकांश किसानों के पास या तो अपने निजी छोटे-छोटे खेत थे या फिर वे थोड़ी-बहुत ज़मीन के पट्टीदार थे। ऐसे किसानों की संख्या बहुत थोड़ी थी जिनके पास कोई ज़मीन नहीं थी। बिना ज़मीन का किसान अवहेलना और निरादर की दृष्टि से देखा जाता था। लगातार एक-सा काम न मिलने के कारण उसे अक्सर अपने धंधे बदलते रहने पड़ते थे और पिछले कुछ वर्षों में उसकी मज़दूरी निरंतर घटती ही आई थी। जिस जमाने में ज़मीन सस्ती थी, खेत पर मज़दूरी करनेवाले आलसी, मूर्ख, पिछड़े हुए और मट्ठ समझे जाते थे, और कई ऐसे थे भी। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में काफ़ी परिवर्तन हो गए थे। इस बीच न तो छोटे खेत-मालिक अपनी ज़मीन बढ़ा सके थे और न कोई मज़दूर खेती ही कर सका था। उलटे कई खेतवाले साहूकार के हाथों ज़मीन गंवाकर मज़दूरी करने लगे थे। अमीर किसानों के पास भी बहुत थोड़ी ज़मीन बची रह गई थी। बेरार्डो वॉयला के बारे में कोई कुछ भी कहे, लेकिन फांटामारा में एक भी उसकी बुद्धि और चरित्र की होड़ नहीं कर सकता था। यदि वह ज़मीन ही नहीं ख़रीद सका, तो इसका कारण बुरा समय था। वह जमाना ही नहीं रहा था कि मज़दूर बचत करके खेत ख़रीद पाते। फांटामारा के अधिकांश जवानों की दशा ऐसी ही थी।

यद्यपि समय बदल गया था, लेकिन लोगों के सोचने का पुराना ढंग अभी नहीं बदला था। बिना खेतवाले किसान अब भी हलकी निगाहों से देखे जाते थे। बेरार्डो अपनी स्थिति से समझौता नहीं कर सका था। अमेरिका या इटली के अन्य

प्रांतों में जाकर अपनी आकांक्षा-पूर्ति की वह हमेशा आशा किया करता था, लेकिन वह जाने में कभी सफल नहीं हुआ। अनिवार्य और आसन्न विवाह की संभावना सामने आने पर उसने अपने-आपको जीवन-भर के लिए अन्य किसानों से होन स्थिति में पाया। इसके निराकरण का कोई उपाय नहीं था।

क्योंकि शहरों में काम की जैसी हालत थी उसकी जानकारी, एक ऐसे आदमी से जिसे फांटामारा में फिर से देखने की कोई आशा नहीं थी, हमें अनपेक्षित रूप से मिली।

एक रात कंधों पर थैला उठाए एक नाटा और बुढ़ापे से झुका हुआ आदमी हांफता-कांपता फांटामारा के छोटे चौक में आया। वह देखने में न तो किसान लगता था, न शहरवाला। बल्कि यह कहना ज़्यादा ठीक होगा कि वह ऐसा किसान लगता था जिसने शहरवालों जैसे कपड़े पहन रखे हों। हमने उसे एक देहाती ज्योतिषी समझा ज़ो गांव-गांव घूमकर फ़सल का भविष्य बतलाते हैं, जादू-टोने से बीमारियां अच्छी करते हैं, औरतों और जानवरों को लगी नज़र उतारते और फोड़ों के लिए एक रामबाण दवाई बेचते फिरते हैं।

जनरल बाल्डीसेरा ने उसे अपनी दुकान के आगे से निकलते देखा तो कुतूहल से उसके पीछे हो लिया, और मेरीटा सासनिरा, माइकेल ज़ोम्पा, बेरार्डो वॉयला को और मुझे बुला लाया।

"तुम कहां से आते हो और काहे का भविष्य बतलाते हो ?" उसने उससे पूछा।

छोटे क़द का बूढ़ा चौक के ठीक बीचोबीच आकर अपने थैले पर बैठ गया मानो अब अधिक खड़े रहने में असमर्थ हो और बोला, "अपने घर में कोई भविष्यवक्ता नहीं है।"

उसके कहने का मतलब हमारी समझ में नहीं आया।

वह बूढ़ा देखने में बड़ा विचित्र था। उसका सिर छोटा, बच्चों जैसी पानी-भरी आंखें, पुराने ढंग की लंबी मूंछें, नाक बड़ी-सी और अंडे की तरह फैली हुई थी। ऐसा लगता था कि उस नाक को दबाते ही उसके अंदर से कई तरह की शराब निकल पड़ेंगी। सिर पर वह तरबूज के आकार की कड़ी टोपी पहने था और बदन में मखमली कॉलर का एक कोट, जिसमें चमकीले बटनों की दो क़तारें थीं। उसका पाजामा सिपाही के पाजामे जैसा भूरे रंग का था।

माइकेल ज़ोम्पा ने उससे कहा, "किसी का भविष्य बतलाओ या और कुछ, पर पैसे मत मांगना।"

"ज़रा ठहरो भाई, और पहले जाकर गिडिटा गोरियानो को तो बुला लाओ।" उसने कहा।

"वह तो मर गई।" माइकेल ने कहा। हम सब हंसने लगे, क्योंकि बूढ़े की भविष्यवाणी कुछ सच नहीं हुई थी।

उस नकली ज्योतिषी ने कहा, "यदि गिडिटा ज़िंदा नहीं है तो जाकर बेरार्डो गोरियानो को बुला लाओ।"

"बेरार्डो गोरियानो भी लड़ाई से पहले ही मर चुका है।" अबकी बार सासनिरा ने जवाब दिया।

"और पेपिना गोरियानो ? क्या वह भी मर गया है ?" उस बूढ़े ने अबकी झुंझलाकर पूछा।

पेपिनो गोरियानो के बारे में विभिन्न मत थे। सासनिरा की—जिसका उसके साथ जवानी में प्रेम-संबंध रह चुका था—राय थी कि वह कभी का रोम में मर गया है। बाल्डीसेरा का विश्वास था कि रोम में उसकी क़िस्मत खुल गई और उसने एक धनाढ्य स्त्री से विवाह कर लिया है, और अपने जन्म-गांव का नाम तक भूले उसे बहुत दिन हो गए होंगे।"

उस बूढ़े आदमी ने कहा, "बहुत अच्छा, तो मैं तुम्हें पेपिनो गोरियानो का सच्चा हाल सुनाता हूं—

'जिस साल बादशाह हम्बर्ट का वध हुआ, उसी साल पेपिनो गोरियानो फांटामारा से रोम गया था। कितने साल हुए ? गिनती लगाना बहुत सरल है। बादशाह हम्बर्ट की मृत्यु से धूमकेतु तक—पुच्छलतारा—जो त्रिपोली की लड़ाई के बाद दिखा था—दस वर्ष हुए। धूमकेतु से ट्रीस्ट की लड़ाई तक पांच साल। पंद्रह हुए। ट्रीस्ट की लड़ाई चार-पांच साल चली, तो बीस हुए। पांच साल तक ट्रेड्स यूनियन का अधिकार रहा। बीस और पांच पच्चीस और उसके बाद व्यवस्था-युग को आज दस वर्ष हो गए। यद्यपि हर एक यह कहता है कि इसका शीघ्र ही अंत हो जाएगा, क्योंकि तुर्कों के राज्य में रहना इससे अधिक बुरा नहीं हो सकता, तो भी दस साल होने आए, न तो व्यवस्था युग ख़त्म हुआ और न तुर्क ही आए और यह सब मिलाकर पैंतीस हुए।' "

"अच्छा, तो पूरे पैंतीस वर्ष पहले पेपिनो गोरियानो इस इरादे से कमाई करने रोम गया था कि हाथ में पैसा आते ही वह फांटामारा लौटकर सोलह वर्ष की मेरीटा सार्सेट्टोनेरो से, जिसके साथ उसका प्रेम था, विवाह कर लेगा।..."

"वह मैं थी।" सासनिरा ने झेंपते हुए कहा।

मेरीटा को एक निगाह ऊपर से नीचे देखकर वह बूढ़ा बोला, "वह तुम थीं ? असंभव !"

जब हम उसकी तरफदारी करने लगे तो बूढ़े ने विचलित होकर, उलझन में अपनी कहानी बंद कर दी। थोड़ी देर बाद, किसी तरह, उसने फिर आरंभ किया, "पेपिनो गोरियानो ने हिसाब लगाया था कि वह कुछ ही वर्षों में पैसा जमा कर लेगा। रोम पहुंचते ही उसे 'इन्स्टीच्यूट ऑफ चैरिटेबल फ्रायर्स' (महंतों की धर्मादा संस्था) में बर्तन मलने का काम मिल गया, लेकिन उसका भाग्य नहीं खुला। उसे रोज चौदह घंटे काम करना पड़ता था और वह रहने-खाने को काफ़ी पा जाता था, परंतु शराब के लिए पैसा पूरा नहीं पड़ता था। संस्था के पुरोहितों का विश्वास था कि शराब से मनुष्य का पतन होता है, इसलिए वे अपने आश्रितों को पतित नहीं होने देते थे। संस्था में पतित होने का अधिकार केवल बाबा महंतों को—बड़े महंतों—को था। लेकिन जहां बड़े महंतों के पीने की शराब रखी जाती थी, पेपिनो गोरियानो उसी जगह अपना काम करता था। उसने वहां दो साल तक ईमानदारी से नौकरी की, लेकिन बाद में लगातार शराबखोरी की वजह से निकाल दिया गया। उसके बाद कुछ दिनों तक वह बेकार रहा। कभी-कभी उसे कुछ आने-पैसे मिल जाते जो शराब तो क्या रहने-खाने को भी पूरे नहीं पड़ते थे। मौसम के अनुसार उसे बोटानिकल उद्यान, कोलोज़ियम, या इसेड्रा की ड्योढ़ियों (पोर्टिकों) में सोना पड़ता था। एक रात उसे सपने में सैनरोक्को ने पड़ोस की परचून की दुकान में घुस गया। लेकिन वह पकड़ लिया गया और उसे आठ महीने की जेल हुई। मुक़दमे के समय उसने सैनरोक्को के बारे में समझाने की कोशिश की, लेकिन न्यायाधीशों को विश्वास नहीं हुआ। ऐसा नियम ही हो गया है कि न्यायाधीश आपद्ग्रस्तों पर कभी विश्वास नहीं करते।

"लेकिन जेल में पेपिनो की तक़दीर खुल गई। उसे आंखों की बीमारी हो गई। पहले आंखों में से एक सफ़ेद द्रव पदार्थ निकलने लगा और बाद में वे सूजकर छोटे टमाटर-जैसी लाल हो गईं। देखकर दया आती थी। आंखों की ऐसी बुरी दशा हो जाने पर पेपिनो जेल से छोड़ दिया गया और तब, जीवन में पहली बार, उसने जी भरकर मजा लूटा। किसी परिचित की एक बालिका को उसने नौकर रख लिया और सबेरे उन गिरजाघरों का चक्कर लगाने का नियम बना लिया। दोपहर में दो-तीन मठों में जाकर भोजन मांग लाता था और सांझ होने से पहले समाधिस्थलों और नाट्यशालाओं के मार्ग में मौके की जगह जा खड़ा होता था। बालिका को दो लीरा रोज़ देकर भी पेपिनो के पास रहने-बचाने को काफ़ी हो जाता था। खाने की उसे

कोई चिंता नहीं करनी पड़ती थी, क्योंकि खाना उसे मठों में से काफ़ी मिल जाता था और वह उसका एक हिस्सा पोर्टासैन ग्योबानी के एक भठियारखाने में शराब के लिए बेच देता था। पेपिनो का इरादा कुछ वर्षों तक भीख मांगकर इतना पैसा जमा कर लेने का था कि वह फांटामारा लौटकर सार्सेट्रोनेरो से विवाह..."

मेरीटा ने आह भरकर पूछा, "उसने अपना इरादा क्यों बदल दिया ?"

"सदा की भांति ईर्ष्या उसकी आकांक्षा-पूर्ति के मार्ग में बाधक हुई। एक बुरा दिन आया कि पुलिस-सिपाही उसे पकड़कर आंखों का इलाज करवाने अस्पताल ले गया। पेपिनो गोरियानो ने आपत्ति भी की। उसने कहा, 'ये मेरी आंखें हैं और मैं इनका जो चाहूं करूं।' परंतु इटली में सच्ची स्वाधीनता थी ही कब ? थोड़े ही दिनों में ही उसकी आंखें तो अच्छी हो गईं, पर वह अपने व्यवसाय से हाथ धो बैठा। सुख और समृद्धि का समय चला गया और छोड़ गया पश्चात्ताप। वह ईंटें पाथने, गाड़ी ढोने और टाइबर पर नाव खेने जैसे छोटे-मोटे काम करने लगा, पर कहीं एक सप्ताह से ज़्यादा न टिका। शक्ति के समय लगन ने और लगन के समय शक्ति ने उसका साथ नहीं दिया। उसने हज़ारों अन्य उपायों से भाग्य-परीक्षा कर देखी।

"उन दिनों विभिन्न प्रांतों से सैकड़ों लोग रोम में कमाई करने आते थे। जिनकी आकांक्षाएं थोड़ी होतीं वे चौराहे झाड़ते, जूते साफ़ करते, खाना पकाते, बागवानी या साईसी करते और रोज़ कुछ-न-कुछ बचाते रहकर अपने योग्य छोटी-मोटी प्रतिष्ठा स्थापित कर लेते थे। लेकिन पेपिनो में अन्य देहातियों की तरह एक हज़ार लीरा जमा करने के लिए दस साल तक प्रतीक्षा करने का धैर्य नहीं था। वह एकदम भाग्यवान बनने के लिए कुबेर के खजाने के दरवाज़े खोजता फिरता था। इसके लिए उसे बार-बार जेलखाने की हवा खानी पड़ती थी। कुल मिलाकर उसने चार साल पांच महीने की सज़ा भुगती।

"इतनी असफलताओं के बाद पेपिनो गोरियानो हतोत्साह होने लगा। निराश होकर वह एब्रुज़ी से आनेवालों की तरह जो रोम में सभी तरह के हलके काम करते हैं, जीवन बिताने लगा। कुछ दिनों तक इकन्नी में लिफ़ाफ़ों द्वारा भाग्य बतानेवाला तोता लेकर वह स्टेशन और बारकों के आस-पास जाता रहा, परंतु थोड़े महीनों बाद वह तोता मानसिक चंचलताओं से मर गया। तब पेपिनो ने एब्रुज़ी से सर्दियों के कुछ महीनों रोम में काम की तलाश में आनेवाले असंख्य लोगों से फ़ायदा उठाने की सोची। उसने स्त्रियों की परिचारिकाओं, नौकरानियों और आदमियों को इमारती मज़दूर और बर्तन मलनेवालों का काम दिलवाने के लिए एक कारोबार

खोला।'

"इसी बीच पेपिनो का परिचय मॉन्सिग्नर कैलोगेरो नामक एक आदरणीय भद्र पुरुष से हो गया जो कारमेलाइट का एक पदाधिकारी था। पेपिनो उसके यहां गुमाश्ता हो गया। मॉन्सिग्नर, उसकी उम्र को देखते हुए कहीं अधिक काम-पीड़ित था और एब्रुज़ी से आनेवाली किसान लड़कियां उसकी वासना-तृप्ति की मनचीती साधन थीं। पेपिनो को रहने-खाने के सिवा प्रत्येक किसान लड़की के पीछे, जिसे वह आदरणीय भद्र पुरुष की शय्याशायिनी बनाता, दस लीरा अतिरिक्त मिलते थे। प्रारंभ के कुछ महीने तो उनसे पूरी आत्म-परायणता से काम लिया और मॉन्सिग्नर कैलोगेरो के लिए सार्वजनिक उद्यानों और वीथियों में नौकरानियां पटाता फिरा। इससे कुछ अधिक लाभ नहीं हुआ। क्योंकि मॉन्सिग्नर एक ही औरत को दो या तीन बार से ज़्यादा पसंद नहीं करता था और पेपिनो को सदा नई खोजते रहना पड़ता था। नौकरी बनाए रखने के लिए उसे वाया पेनिको मुहल्ले में प्रेम का व्यवसाय करनेवाली वेश्याओं की शरण में जाना पड़ा। मॉन्सिग्नर कैलोगेरो को विश्वास दिलाने के लिए कि वे देहाती लड़कियां ही हैं। वह उन औरतों को प्याज और लहसुन खिलाता था। मॉन्सिग्नर को इस प्रवंचना का पता कई दिन बाद, जब उसे एक गंदी बीमारी हो गई, तब लगा। पेपिनो गोरियानो की नौकरी छूट गई और दुर्भाग्य ने फिर उसका पीछा किया।"

मेरीटा ने पूछा, "वह फांटामारा क्यों नहीं लौट आया ?"

"भिखारी होकर फांटामारा लौटना ? असंभव था। वह रोम में ही रहा, क्योंकि वहां ग़रीबों के लिए अधिक काम था। उसने सैकड़ों काम-धंधे किए, कुत्तों को संवारा-नहलाया, गिरजाघर की घंटियां बजाईं, कब्रें खोदीं, सड़कों पर जूतों के फीते बेचे, गुग्लील्मो ओबेरडान की स्मृति में पोस्टकार्ड बेचे, आमोद-गृहों में बर्तन मांजे। लेकिन सभी धंधे कमोबेश एक से थे।"

"जो हलके काम दूसरे नहीं कर सकते उन्हें करने के लिए रोम में एब्रुज़ी के हज़ारों लोग जैसे वह रहा करते थे और आज भी रहते हैं। उनका रहन-सहन दूसरों की अपेक्षा निचले स्तर का होता है। आजीवन वे गिरजाघर के चूहों की तरह दरिद्र किसान ही बने रहते हैं। सड़क पर देखते ही उन्हें पहचाना जा सकता है। रविवार को जब 'दूसरे' मनोविनोद के लिए क्रीड़ांगणों या पैरियोली के उद्यानों में जाते हैं तो वे किसी गए-गुजरे भठियारखाने में। 'दूसरों' ने जब ट्रीस्ट की लड़ाई के पक्ष-विपक्ष में प्रदर्शन किए तब पेपिनो रोम में ही था, और उस समय वह पोर्टा ट्रिवोनफेल के समीप एक छोटी, निकम्मी पांथशाला में गया। लड़ाई के बाद जब

लगभग सभी 'दूसरे' 'ट्रेड यूनियनों' में जाते थे, वह टेस्टासियो की एक पांथशाला में जाता था। स्वेच्छा से वह कभी 'दूसरों' के बीच जाने की झंझट में नहीं पड़ता था, परंतु सारे शहर में उथल-पुथल मच जाने पर यह कुछ उसके हाथ की बात नहीं रह गई थी। और एक बार उसे इसका बदला भी ख़ूब चुकाना पड़ा।

"एक दिन जब पेपीनो गोरियानो वायाकोला-दा-रींज़ो से जा रहा था, लाल झंडेवाले एक जन-समूह ने दुकानें लूटना शुरू किया। वह भी उनमें जा मिला और जूतों की एक दुकान में घुस गया। जब बाहर निकला तो उसके पास बाएं पांव के दो जनानी नाचने के और दाहिने पांव का एक ही बड़ा घुड़सवारी का जूता था। वह उनका क्या उपयोग करता ? वह उन जूतों के जोड़ों की तलाश में प्रत्येक आने-जानेवाले से पूछता खड़ा था कि एक चुस्त आदमी ने आकर उसकी सहायता करने की इच्छा प्रकट की और पेपिनो को अपने घर तक चलने के लिए कहा। वह उसे धर ले जाने के बदले पुलिस-थाने पर ले गया और लूट-पाट करने के अपराध में गिरफ़्तार करवा दिया। पेपिनो मुक़दमे की चौकसी के लिए अदालत के कटघरे में कई मज़दूरों के साथ खड़ा किया गया। उन मज़दूरों ने कहा कि हमला करने में उनका उद्देश्य राजनैतिक था। लेकिन पेपिनो ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि उसे जूतों की ज़रूरत थी और इसलिए उसे दूसरों से दोगुनी सज़ा दी गई।"

"उन दिनों यदि बीच सड़क पर किसी का ख़ून हो जाता और ख़ूनी यदि कह देता कि उसने राजनैतिक कारणों से ऐसा किया है तो वह बिलकुल बरी कर दिया जाता था और कई बार तो पुरस्कृत भी होता था। लेकिन यह कहने पर कि बेकारी से तंग आकर उसने ऐसा किया है, उसे कठोरतम सज़ा दी जाती थी। पेपिनो काफ़ी सोच-विचार के बाद इस निर्णय पर पहुंचा कि जीवन-भर उसके नगण्य बने रहने का एक मात्र कारण यह था कि उसने जो कुछ किया, उसका कारण राजनैतिक न होकर भूखों मरना था। अब जवान न होते हुए भी उसने निश्चय किया कि भविष्य में वह जो कुछ भी करेगा, राजनैतिक उद्देश्य से करेगा।"

"जेल से छूटने पर पुलिस ने पेपिनो को बुलाया और कहा कि "या तो हम कहते हैं वैसा करो, नहीं तो आज की रात ही फांटामारा लौट जाओ।" रेज़िना कोएली से हाल ही में छूटे हुए उसके अन्य मित्रों के सामने भी ऐसे ही प्रस्ताव रखे गए। पुलिस द्वारा प्रस्तुत किया हुआ राजनैतिक काम करने का प्रस्ताव पेपिनो ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। उसे पेशगी पचास लीरा के साथ यह आज्ञा मिली कि उसी रात प्याज़ा वेनेज़्या पहुंचकर 'निट्टी ज़िंदाबाद', 'फ्यूम मुर्दाबाद !' के नारे लगाए।"

"तुम कहते हो कि उसे खाली नारे लगाने के लिए पचास लीरा मिले ?" माइकेल ने अपना संदेह प्रकट करते हुए उस बूढ़े से पूछा।

"बीच में मत बोलो। तुम राजनीति के बारे में कुछ नहीं समझते। उसी रात पेप्निनो गोरियानो प्याज़ा वेनेज़्या गया, वहां लोगों की एक बड़ी भारी भीड़ थी और उसमें रेज़ीना कोएली के उसके बहुत-से साथी भी थे। उसने 'निट्टी ज़िंदाबाद !' 'फ़्यूम मुर्दाबाद !' के नारे लगाना शुरू किया। सैनिकों और अफ़सरों की एक टोली को अपनी ओर बढ़ते देखकर रेज़ीना कोएली के उसके अन्य साथी तो हड़बड़ाकर इधर-उधर भाग गए, लेकिन उसने अभी अपना राजनैतिक कार्य आरंभ ही किया था और अपने धंधे से हाथ धोना नहीं चाहता था, इसलिए बिना अर्थ समझे ही पुलिस ने उसे जो कुछ चिल्लाने के लिए कहा था, चिल्लाता रहा। अफ़सरों और सैनिकों ने पेपिनो को घेर लिया और उसके बाद जो कुछ हुआ वह उसे याद नहीं रहा, क्योंकि वह बेहोश हो गया था और सैन ग्यासोमो के अस्पताल में पहुंचने के बाद ही उसे होश आया।"

जनरल बाल्डीसेरा ने, जो सैनिक अनुशासन के बारे में ऊंची राय रखता था, कहा, "क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि अफ़सर लोग पुलिस के ख़िलाफ़ थे ? यह हो ही कैसे सकता है ?"

"बीच में मत टोको। तुम राजनीति के बारे में जानते ही क्या हो ? पेपिनो राजनैतिक काम करता रहा, यानी पुलिस द्वारा निश्चित किए गए स्थानों और समयों पर मार खाता रहा। इसने पोर्टा सांताक्रोस के ट्रामवे मजूरों, पोर्टा सैनपाओलो के गैस-मजूरों और पोर्टा ट्रथोनफेल के फाउंड्री-मजूरों के हाथों लहू-लुहान हो जाने तक मार खाई। जब उसने पुलिस के सिखाए नारे लगाए, वह पीटा गया। मार उसे अकेले ही खानी पड़ती थी, क्योंकि रेज़िना कोएली के उसके अन्य साथी तो मामला गड़बड़ होते ही छू हो जाते थे।"

मेरीटा ने अत्यंत विषण्ण होकर पूछा, "पेपिनो भी क्यों नहीं भाग जाया करता था ?"

"क्योंकि मार खाने पर ज़्यादा पैसा मिलता था। पुलिस उसे पांच लीरा रोज़ और जब कभी अस्पताल भेजा जाता तो पच्चीस लीरा अतिरिक्त आश्वासन के लिए देती थी। रहन-सहन के मान से पांच लीरा काफ़ी नहीं था, अतएव उसके लिए मार खाना नितांत आवश्यक था। यह कुछ बहुत अनुकूल नहीं था, परंतु काम अनुकूल रहा ही कब है ? यहां यह कह देना भी आवश्यक है कि उसके नारे हमेशा बदलते रहते थे। छः महीने तक 'निट्टी ज़िंदाबाद' के बाद पेपिनो को पूरे

सालभर तक 'निट्टी मुर्दाबाद' के नारे लगाने पड़े। लेकिन नतीज़ा हमेशा वही होता। वह हमेशा पीटा जाता था। डेढ़ वर्ष तक राजनैतिक काम करने के बाद जब पेपिनो गोरियानो का शरीर कोड़े खाने के बाद ईसा के शरीर जैसा हो गया तो एक बार पांटियस पाइलेट ने कहा, "इस आदमी को ज़रा ध्यान से देखो।"

"पेपिनो गोरियानो एक सच्चा राजनैतिक शहीद माना जा सकता था। राजनीति के लिए किसी भी इटालियन ने कभी भी इतना कष्ट नहीं सहा होगा। वह उन लोगों में नहीं था जो खुद तो घर में बैठे रहते हैं और दूसरों को लड़ने के लिए भेज देते हैं। वह खुद अपने शरीर की बाजी लगाता था। उन दिनों कई इटालियन अपने आदर्शों के लिए लड़े थे, परंतु कोई भी पेपिनो गोरियानो की समानता नहीं कर सकता। उसने सभी आदर्शों के लिए—प्रजातंत्र, राष्ट्रवाद, साम्यवाद और धर्म तक के लिए अपना ख़ून बहाया था। प्रत्येक में उसे कुछ-न-कुछ अच्छाई दीखती थी। उन आदर्शों की सेवा करके वह पांच लीरा नित्य और अस्पताल जाने पर हर बार पच्चीस लीरा अतिरिक्त कमाता था।

"लेकिन जैसे-जैसे बूढ़ा होता पेपिनो का बुढ़ापा गया वह मार खाने में अधिकाधिक असमर्थ होता गया। राजनीति से निवृत्त होने की आकांक्षा उसे दुःख देने लगी। राजनैतिक संघर्ष अधिकाधिक भयंकर होता जा रहा था। प्रदर्शनकर्ता पत्थरों और लकड़ियों का उपयोग करना छोड़कर गोलियां चलाने लगे थे। राजनीति ख़ूँरेज़ हो चली थी। राजनीति मार खाकर कमाई करने का पेशा नहीं रह गई थी। राजनीति का स्वरूप अब भयंकर और गंभीर हो गया था और पेपीनो गोरियानो के चरित्र से वह बिलकुल ही मेल नहीं खाती थी।"

सासनिरा ने पूछा, "लेकिन वे गोलियां क्यों चलाते थे ?"

"मैं पूरे पैंतीस वर्ष रोम में रहा और आज तक मुझे मालूम नहीं पड़ा। तो फिर तुम्हारे जैसी मूर्ख स्त्री, जिसने सारी उम्र फांटामारा में बिताई हो, कैसे समझ सकती है ?" बूढ़े ने टालनेवाला जवाब दिया और आगे बोला, "राजनीति की ऐसी दशा थी। पेपिनो ने पुलिस के बुलावों का जवाब देना बंद कर दिया। कुछ समय बाद खासतौर से बुलाकर पुलिस ने उसके सामने वही प्रस्ताव रखा। "या तो हमारा कहना करो, नहीं तो इसी रात फांटामारा चले जाओ।" लेकिन इस बार मार खाने का मामला नहीं था। वह नए ढंग की राजनीति थी, बीस लीरा रोज़ मेहनताना, ट्राम-गाड़ियों का फ्री पास, और मार खाने का नहीं, मारने का अधिकार।"

"अनर्गल बातें मत करो !" माइकेल ज़ोम्पा ने बीच में कहा, "क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि पुलिस पेपिनो गोरियानो को बीस लीरा रोज़ और

ट्राम-गाड़ियों का फ्री पास इसलिए देती थी कि वह लोगों को बिना किसी डर के पीटता फिरे ? मूर्खतापूर्ण बातें मत करो। बीस लीरा कमाने के लिए मुझे पूरे तीन दिन फ्युसिनो पर काम करना पड़ता है।"

नकली ज्योतिषी ने एक अनिश्चय में कहानी बंद कर दी। लेकिन थोड़ी देर बाद माइकेल ज़ोम्पा के टोकने की अवमान्यता करते हुए आगे शुरू किया, "इस बार यह एक नई, अनोखी और अभूतपूर्व ढंग की राजनीति थी। इसे ही 'फ़ासिज़्म' कहते थे। पेपिनो गोरियानो के 'फ़ासिज़्म' के बारे में क्या विचार थे ? उसके ख़याल में यह सर्वोत्तम था। एक ग़रीब किसान से तिगुना अच्छा वेतन और बिना मार खाए लोगों को पीटने का अधिकार, और सरकारी संरक्षण ऊपर से।

"एक पुलिस सिपाही पेपिनो को 'ज्यार्नल द इटालिया' के छापाखाने के पीछे एक बड़े हॉल में ले गया। जब वह वहां पहुंचा तो हॉल अफ़सरों, विद्यार्थियों, कारकूनों, व्यापारियों और भड़कीली पोशाकवाली औरतों से खचाखच भरा था। उनमें दो-चार पादरी और मॉन्सिग्नर कैलोगेरो भी था। दीवालें तिरंगे झंडों से सजाई गई थीं। सभी ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। इतने प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में पेपिनो डर-सा गया। लेकिन हॉल के एक कोने में रेज़ीना कोएली के उसके पुराने परिचितों का भी एक झुंड था, जिनमें अधिकांश घरों में सेंध लगानेवाले थे। मंच पर आकर एक भद्र पुरुष के बोलते ही शांति स्थापित हो गई। उसने पेपिनो गोरियाना और उसके साथियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि कारखानों के मज़दूरों में सबसे अधिक राजनैतिक चेतनतावाला नए आभिजात्य मज़दूरों का यह वर्ग देश के लिए अपने रक्त की अंतिम बूंद तक बहाने को तैयार है। बाद में उसने जो कुछ कहा, वह बिलकुल ही समझ में नहीं आया।

"भाषण के बाद हाल खाली हो गया और पेपिनो गोरियानो तथा उसके मित्रों को पोर्टाप्या की विजय में भाग लेने के लिए रुकने का निमंत्रण दिया गया।"

"पास के एक शराबखाने में खिला-पिलाकर उन्हें लॉरी से लाब्रेस्या-स्मारक के समीप पोर्टाप्या ले गए। वहां लगभग घंटे-भर तक वे प्रतीक्षा करते रहे। जहां वे प्रतीक्षा कर रहे थे वहां से उन्होंने कड़ाबीनवाले सैनिकों और रॉयलगाड्र्स—शाही रक्षकों—की टुकड़ियां एक साम्यवादी पत्र के कार्यालय में घुसते और अंदर के सभी लोगों को गिरफ्तार करके बाहर निकलते देखीं। एक पुलिस सिपाही पेपिनो गोरियानो और उसके साथियों को सावधान करने आया कि सब कुछ तैयार है और डर की कोई बात नहीं है और बेखटके अख़बार का कार्यालय लूटा जा सकता है ? उन्होंने वैसा ही किया; कार्यालय पर आक्रमण हुआ। फर्नीचर बीच सड़क में लाकर पुस्तकों

और काग़ज़ों के साथ जला दिया गया। खिड़कियां, दरवाज़े, टाइपराइटर, तस्वीरें और अंगीठियां तोड़-फोड़कर चूर-चूर कर डाली गईं; स्याही की बोतलें दीवालों पर फेंक-फेंककर तोड़ी गईं; तिजोरी वैज्ञानिक तरीके से तोड़कर खोली गई, पर वह खाली निकली।"

"विध्वस्त कार्यालय से रवाना होने के पहले, कई पत्रकारों द्वारा जो वहां आ पहुंचे थे, आक्रमणकारियों के फोटो लिए गए। पेपिनो आक्रमणकारियों के बीच एक मेज़ की टांग तोड़ रहा था। दूसरे दिन 'पिक्कोलो' अख़बार में उसकी तस्वीर छपी और उसके नीचे लिखा था— 'पोर्टाप्या का नायक'।"

"पेपिनो यश और प्रतिष्ठा के उन चिरस्मरणीय दिनों को कभी नहीं भूल सकता। वह समाचार-पत्रों के कार्यालयों में टंगा फिरता और सब कार्यालय उसे शराब पीने को पैसे देते थे। मार्क्विनेस पारुक्चिनी ने उसे निमंत्रित भी किया, अपने मित्रों से उसका परिचय कराया, और अपने रसोईघर में और तब उसे अपने शयनकक्ष में ले गई, जहां पेपिनो को पोर्टाप्या की विजय से भी अधिक थका देनेवाले काम करने पड़े।"

"पेपिनो ने इस नई कीर्ति का उपयोग बॉर्ज़ोप्यो के रात्रि विश्रान्ति गृह में चौकीदारी का काम पाने में किया। परंतु सैन लॉरेंज़ों प्रांत के मजूरों ने जब उसके एक साथी को मार डाला तो उसकी भी अकल ठिकाने आ गई और अब 'फ़ासिस्ट' प्रधान कार्यालय से बुलावा आने पर वह बीमारी का बहाना करने लगा। नई नौकरी से आमदनी अधिक नहीं थी, परंतु अधिक खतरा भी तो नहीं था।"

सासनिरा ने जानना चाहा—फ़ासिस्टों के अधिकार ग्रहण करने पर उसने ज़्यादा अच्छी नौकरी पाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया ?

"तुम्हारे कथनानुसार 'फ़ासिस्टों के अधिकार ग्रहण करते ही' उनके पुराने समर्थकों के बुरे दिन आ गए। पेपिनो चौकसी के लिए एक कमेटी के सामने बुलाया गया और उससे पूछा गया—"तुम फासिस्ट हो ? तुम कितने अर्से से फासिस्ट हो ? क्या तुम्हें कभी जेल भी हुई है ?" कमेटी ने निर्णय दिया कि चोरी के अपराध में कई बार के दंडित अपराधी फ़ासिस्ट पार्टी में नहीं रह सकते और परिणामस्वरूप पोर्टाप्या का नायक यशस्वी पेपिनो गोरियानो निकाल दिया गया। पेपिनो के रेज़िना कोएली के अन्य मित्रों के साथ भी यही बर्ताव किया गया। हां, जो अभी युवक थे, वे सेना में भर्ती कर लिए गए। उसी समय पेपिनो बॉर्ज़ोप्यो विश्रांतिक गृह की चौकीदारी से भी हटा दिया गया और उसकी जगह 'मॉन्सिग्नर कैलोगेरो' के पुत्र के नाम से प्रसिद्ध एक युवक नियुक्त किया गया।

"बेकारी और कठिनाइयों के दिन फिर शुरू हुए। वह पुरानी अंतहीन क्षुधा, जिससे उसका कभी पीछा नहीं छूटा था, फिर आ धमकी। दिन-दिन जीना दूभर हो चला सभी का यह ख़याल था कि नई सरकार शायद ही दस साल चले, लेकिन उसे दस साल हो गए थे।"

"रोम में रहना असंभव हो गया। प्रत्येक दिन एक नया क़ानून बनता। यह सच है कि सभी सरकारें नए क़ानून बनाती हैं, परंतु यह सरकार तो प्रत्येक दिन एक नया क़ानून बनाती है।"

"शताब्दियों तक पांच नियम, गिरजा के पांच आदेश लेकर, पोप शासन करते रहे। 'एक हजारी आक्रमण' के बाद गेरीबाल्डी ने केवल तीन नए क़ानून प्रचलिए किए, चाकू का, खूनी झगड़ों का और शराबियों के उत्पातों का। लेकिन नई सरकार ने सभी चीज़ों के बारे में क़ानून बना डाले हैं। एक क़ानून है कि अमुक बातें मत करो, एक क़ानून है कि दीवालों के सहारे पेशाब मत करो, एक क़ानून है कि बाएं से मत चलो, एक क़ानून है कि रात में मत गाओ या ट्राम में सामने से मत चढ़ो। विवाह नहीं करनेवालों के लिए, सब तरह की नौकरियों का नियंत्रण करने के लिए, काम दिखलानेवाली एजेंसियों की देख-रेख करने के लिए और नौकर तथा मालिकों के आपसी झगड़ों का निपटारा करने के लिए अलग-अलग क़ानून बने हुए हैं।

"जितने ज़्यादा क़ानून हैं उतनी ही अधिक ग़रीबी है और ग़रीबी जितनी ही अधिक बढ़ती जाती है वे उतने ही अधिक नए क़ानून भी बनाते जाते हैं। रोम में रहना बिलकुल असंभव हो गया है। वहां की हवा तक में दुर्गंध आती है।

"उन्होंने उसे दूर करने के कई उपाय किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। किसी ने कहा कि दुर्गंध शायद चूहों के कारण आती है; इसलिए म्युनिसिपैलिटी ने ज़हर बांटकर चूहों के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी और हज़ारों की संख्या में चूहे मारे गए। परंतु दुर्गंध नहीं मिटी। तब किसी ने कहा कि दुर्गंध शायद मक्खियों के कारण है, इसलिए म्युनिसिपैलिटी ने दवाइयां बांटकर मक्खियों के ख़िलाफ़ लड़ाई छेड़ दी और कई करोड़ मक्खियां मारी गईं। लेकिन बदबू दूर न हुई। दिन में कभी-कभी तो इतने ज़ोर से दुर्गंध आती है कि जी खराब हो जाता है।"

माइकेल ने पूछा, "दुर्गंध क्या कूड़े में से आती है ?"

"किसी को अभी तक पता नहीं चला कि कहां से आती है ? ट्रास्टेवियर, सैन लॉरेंज़ो, टेस्टाक्सियो, प्राटी और कारकूनों के मुहल्लों में जो नगर के प्रधान हलके हैं दुर्गंध तेज़ पर इतनी असहनीय नहीं है; परंतु बीच नगर, मंत्रियों के निवास-स्थान और सेंटपीटर्स के चारों ओर तो बिलकुल दम घोंटनेवाली दुर्गंध उड़ा करती है।

कोई नहीं जानता कि यह कहां से आती है। किन्हीं का ख़याल है कि दुर्गंध रोम की प्राचीनता के कारण आती है। एक अनंतकालीन नगर दुर्गंधमय होगा ही। किन्हीं के ख़याल से यह सरकारी दफ़्तरों और पुलिस चौकियों के नीचे के तलघरों में छिपाई हुई लाशों की दुर्गंध है। किन्हीं का यह भी कहना है कि यह उन कपड़ों, परों, शिरस्त्राणों और कवचों की दुर्गंध है जिसे नई सरकार ने मंत्रियों, राजपूतों और चपरासियों की वर्दियां बनाने के लिए म्यूज़ियम में से निकाला है। कई लोग तो यहां तक कहते हैं कि बदबू गंदे पानी की मोरियां बंद कर देने से आती है। अलग-अलग लोगों के इस बारे में अलग-अलग सिद्धांत हैं; परंतु एक बात बिलकुल निश्चित है और वह यह कि दुर्गंध अब भी मौजूद है और दिनोदिन बढ़ती जाती है।

"प्रति सप्ताह पुलिस एक नया षड्यंत्र खोज निकालती है। रात में सभी मज़दूर-बस्तियों पर हज़ारों सशस्त्र आदमी चढ़-दौड़ते हैं। छत से फ़र्श तक घरों की तलाशियां होती हैं और सैकड़ों आदमी गिरफ़्तार कर लिए जाते हैं। कारण कोई नहीं जानता। सभी महसूस करते हैं कि एक दिन अपनी बारी भी आ सकती है। अधिकांश लोग निरंतर एक भय की-सी हालत में दिन बिताते हैं।

"रोम में डर छूत की बीमारी-सा फैल गया है। दिनों और सप्ताहों तक सम्पूर्ण रूप से आतंक छाया रहता है। सड़क या शराबखाने में किसी की ओर घूरकर देखना काफ़ी है, वह उसी वक्त पीला पड़ जाएगा और फुर्ती से निकल जाएगा। कारण क्या है ? डर।"

"डर काहे का ?" बेरार्डो ने पूछा।

"खाली डर।"

"लेकिन डर कैसा ?" बेरार्डो ने फिर पूछा।

"खली डर। कारण कोई नहीं जानता। बस डर। जब सारी बस्ती में डर फैल जाता है तो कोई कारण नहीं दिया जा सकता। डर सब पर हावी हो जाता है। सरकार के विरोधी ही नहीं, खुद फ़ासिस्ट कहे जानेवाले भी सबसे ज़्यादा डरते हैं। खुद वे भी कहते हैं कि इस तरह से नहीं चलता रह सकता और डरते हैं। डर के कारण ही वे अपने विरोधियों का ख़ून करते हैं। डर के कारण ही वे निरंतर पुलिस और सेना की संख्या-वृद्धि करते हैं। डर के कारण ही वे हज़ारों-लाखों निर्दोषों को जेलों में ठूंसते हैं। वे जितने अधिक अपराध करते हैं उनका डर भी उतना ही अधिक बढ़ता जाता है। अधिक डरकर वे और अधिक अपराध करते हैं। और इस तरह अधिकाधिक भय से अधिकाधिक अपराधों की सृष्टि होती है।"

"क्या सरकार शक्तिसंपन्न है ?" माइकेल ने पूछा।

"शक्तिसंपन्न है सरकार का भय।"

"और पोप ? वह क्या करते हैं ?" मेरीटा ने पूछा।

"पोप भी डरते हैं। नई सरकार से उन्होंने बीस अरब लीरा स्वीकार किए हैं, एक मोटर ख़रीद ली है, एक वायरलेस लगा लिया है, यात्रा नहीं करते तो भी अपने लिए एक रेलवे स्टेशन बना लिया है और अन्य कई सुखोपभोग के सामान जमा कर लिए हैं और इतना सब मिल जाने पर अब डरने लगे हैं। रोम के गिरजाघरों और मठों को पोप से एक पत्र मिला था कि वे ग़रीबों को दिए जानेवाले शोरबे की मात्रा बढ़ा दें। वह शोरबा डर का शोरबा था। पादरियों की धर्मादा संस्था से प्रति गुरुवार को बांटे जानेवाले शोरबे में थोड़ा-सा मांस बढ़ा दिया गया है। वह डर का मांस है। उन दो अरब लीराओं को भुलाने के लिए अभी तो बहुत-सा मांस और शोरबा सामने आएगा।"

"और अन्य प्रांतों से रोम आनेवालों के साथ कैसी क्या गुजरती है ?"

"एब्रुज़ी के अमीरों का अच्छा और ग़रीबों का बुरा हाल है, परंतु डरते दोनों ही हैं। पुलिस ने ग़रीबों में जांच शुरू की है, जिसका मूल आधार डर है। प्रति सप्ताह सैकड़ों ग़रीबों को पकड़कर पुलिस उन्हें अपने गांव भेज देती है। कितनों ही को तो रोम में रहते-रहते तीस-चालीस वर्ष हो गए थे और उनके जन्म-गांव 1915 के भूकंप में बिलकुल नष्ट हो गए हैं। उनका एक भी संबंधी आज जीवित नहीं बचा है। लेकिन पुलिस 'जनता की व्यवस्था के लिए' उन्हें भी भेज देती है। उन्होंने पेपिनो गोरियानो को भी यात्रा के लिए आवश्यक परवाने देकर ट्रेन में बिठाया और फांटामारा, जहां से आए उसे पैंतीस वर्ष हो गए थे, लौटने के लिए बाध्य किया। अच्छा, तो वह लौट आया है।"

मेरीटा ने उत्सुकता से पूछा, "क्या तुम्हीं पेपिनी गोरियानो हो ?"

जनरल बाल्डीसेरा ने पूछा, "पोर्टाप्या के नायक क्या तुम्हीं हो ?"

हां, वही था।

सात

अपना निज का घर या कोई संबंधी नहीं होने से पोर्टाप्या के नायक ने मेरीटा सासनिरा की छत्रछाया में आश्रय ग्रहण किया।

शहर में कमाई करके मालदार बनने की लालसा बचपन से ही यदि उसे पथ-भ्रष्ट न कर देती तो जहां से वह जीवन प्रारंभ करता, वास्तव में वहीं जीवन समाप्त करता दीखता था। एक भेड़िए के समान जो बूढ़ा होकर भी अपना दुर्गुण नहीं छोड़ता, मेरीटा सदा नए सिरे से जीवन प्रारंभ कर सकती थी, परंतु इसके विपरीत दुर्भाग्य से पेपिनो एक पुरुष के नाते अयोग्य था।

वह घंटों छिपकली की तरह चुपचाप धूप में पड़ा रहता था।

यदि कोई उसके पास जाता तो वह पूछता, "हम किसलिए पैदा हुए हैं ?"

हम इसका उत्तर नहीं जानते थे। भला, कौन जानता है कि हम किसलिए पैदा हुए हैं ?

जनरल बाल्डीसेरा भी अब अधिक जानकारी का दावा नहीं करता था। शहर के बारे में अनोखी बातें सुनकर हममें सबसे ज़्यादा असर उसी पर हुआ था। जिस पुरानी दुनिया में उसका दृढ़ता से विश्वास था, उसे बीते तीस वर्ष हो गए थे और उसका स्थान अविश्वसनीय घटनाओंवाली एक आश्चर्यजनक और अपरूप दुनिया ने ले लिया था।

किसान अब तक लकड़ी के हलों से ही खेत जोत रहे थे जबकि शहरवाले हवाई जहाज़ों के सहारे आसमान में उड़ने लगे थे। किसान जब कि पाई-पाई करके बीस लीरा बचा रहे थे, शहरवाले हज़ार लीरा के नोट की बातें करते थे। किसान जब कि सुबह से सांझ तक खेत खोदकर भी भूखों मर रहे थे, शहर में लोगों को सड़कों पर भी पीटकर शीघ्रता से पैसा पैदा किया जा सकता था।

फांटामारा के बाहर स्वेच्छापूर्वक अफ्रीका जानेवाले ईसाई सेनापति को अब कोई नहीं जानता था और न कोई वह पुराना गीत ही गाता था :

> रहना कालों से होशियार...

शहर में नई सरकार और उसके समाचार-पत्र जनप्रिय आमोद-गृहों, समाचार-पत्रों के कार्यालयों और वैयक्तिक भवनों के विरुद्ध प्युनिटिव (दंड-संबंधी)

हमलों का नेतृत्व करनेवाले कुछ बेहूदे नामवरों को गौरवान्वित करते थे।

एक दिन जनरल बाल्डीसेरा ने पोर्टाप्पा के नायक से पूछा, "आजकल शहर में कौन-सा गीत प्रचलित है ? पर उसकी आवाज़ से लगता था कि इसके उत्तर को वह बहुत ही अधिक महत्त्व देता है।"

पेपिनो गांव के बीच चौक में खड़ा होकर ज़ोर-ज़ोर से नई तर्ज का एक प्रचलित गीत गाने लगा :

फाड़ डालो
मेरा दिल ले लो
और मुझे फाड़ डालो...

रोम के स्टेशन पर पेपिनो को किसानों के लिए सरकारी मत का प्रचार करनेवाली एक पुस्तक दी गई थी। हमारे प्रति सरकारी रुख़ का स्पष्टीकरण जानने के लिए एक दिन हम पेपिनो को घेरकर बैठ गए और उसे पढ़ने के लिए कहा।

पहला भाग एक कविता द्वारा कटाई करनेवालों को समर्पित किया गया था। मैंने वह कविता नक़ल कर ली थी और सदा इस आशा में उसे अपने साथ लिए फिरता था कि किसी दिन उसे समझनेवाला कोई मिल जाएगा और मुझे समझा देगा। कविता यह है :

घर आनेवाली हरी-भरी फसल के विचारों से आनंदित
हलवाहा अनंत आकाश के वितान तले
सूर्य-रश्मियों में, पर्वतीय प्रदेश पर
हल चलाता है।

नीचे निर्जीव और दबे हुए मैदान को
जब हवा के सहारे
अल्पाइन की सुगंधि शांति देती है,
पहाड़ी झोंपड़ियां हिमाच्छादित शृंगों की गोद में
मधुर शांति और शीतल छाया का उपभोग करती हैं।

भेड़ों के समूह-सी, जलती दोपहरी में विश्राम करती
किसानों की झोंपड़ियां, गहरी घाटी में

सोई हैं : दूर से सुन पड़ता है आशीर्वाद-सा—
सन्नाटे को मुखरित करता, पहाड़ी और घाटी पर
और पल्लवित वनपथ से होता—झरने का
मधुर कलनाद; ऐसा आनंद विफल नहीं हो सकता।

पुस्तक में के दूसरे अंश जिनमें कृषि-जीवन का वर्णन था, अधिक सरल थे। उनमें की कुछ दलीलें मुझे याद रह गई हैं :

" शुद्ध हवा और विश्राम की आवश्यकता होने पर शहरवासी कहां जाता है ?
" देहात में !
" ताजा मक्खन, शुद्ध तेल, गेहूं का आटा, स्वादिष्ट फल कहां से आते हैं ?
" देहात से !
" शहरों के निवासी दुर्बल, कायर, पीले और उदास होते हैं।
" देहात के रहनेवाले सशक्त, आनंदित, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त होते हैं। "

नई सरकार ने किसानों के लिए जो कुछ किया है वह उस किताब में इस तरह लिखा हुआ था :

"नई सरकार को धन्यवाद कि अब किसानों को आठ घंटे रोज से अधिक काम नहीं करना पड़ता।

" किसानों को बीमारी, बेकारी और दुर्घटनाओं के लिए बीमा किया जाता है।
" किसानों को जो कर देने पड़ते थे वे घटा दिए गए हैं।
" किसानों की सहायता के लिए उधार देने का बैंक है। "

जब पेपिनो ने यह अंश पढ़ा तो हम एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। मानो कहना चाहते थे कि यह हमें धोखा दे रहा है।

पेपिनो ने पुस्तक माइकेल ज़ोम्पा को दी और उसने यही बातें पढ़ीं। माइकेल ज़ोम्पा ने पांजियो पिलाटो को दी और उसने भी यही पढ़ा, तब उसने किताब मेरी ओर बढ़ाई और स्वयं मैंने भी पढ़ा :

" नई सरकार को धन्यवाद कि अब किसानों को आठ घंटे रोज से अधिक काम नहीं करना पड़ता।

" किसानों का बीमारी, बेकारी और दुर्घटनाओं के लिए बीमा किया जाता है।
" किसानों को जो कर देने पड़ते थे वे घटा दिए गए हैं।

"किसानों की सहायता के लिए उधार देने वाली बैंक हैं।"

पुस्तक के अंत में लिखा था :

"उपसंहार में, शक्ति किसानों के हाथ में है। इटली एक कृषि-प्रधान देश है और यहां की सरकार मुख्यतः किसानों की है। किसानों के स्वार्थ सर्वोपरि हैं। किसान देश का प्रतिनिधित्व करते हैं।"

"यह किताब अवश्य ही सरकार की हंसी उड़ाने के लिए उसके किसी शत्रु ने लिखी है, या फिर पागलखाने में लिखी गई है।" माइकेल के इस संदेह से हम सभी सहमत थे।

"हो सकता है, लेकिन मुझे तो यह कड़ाबीनवाले सैनिकों ने दी थी।" पेपिनो ने कहा।

बेरार्डो जानना चाहता था—कड़ाबीवाले सैनिक इस तरह की किताबें किसलिए बांटेंगे ? राजकुमार टोर्लेनिया की सरकार और बैंकवाली सरकार ऐसी किताबें क्यों बांटती है ? यह किसानों को किसानों के ही नाम पर क्यों लूटती और क्यों उनकी हत्या करती है ?

और तब प्रथम बार हमारी समझ में आया कि इस सरकार ने किसानों को किसानों के ही नाम पर भुखमरी की हालत में पहुंचा दिया है।

पोर्टाप्पा के नायक ने समझाने का प्रयत्न किया—शासन सदा ही गरीबों के विरुद्ध रहा है। लेकिन वर्तमान शासन एक विशेष प्रकार का शासन है। यह भी ग़रीबों के प्रतिकूल है, परंतु एक खास ढंग से। यह एक खास ढंग से ग़रीबों के विरुद्ध अपनी संपूर्ण शक्ति का उपयोग करता है। ग़रीबों में से कइयों ने वर्तमान सरकार के लिए अपना ख़ून बहाया है। मेरा मतलब स्वयं मुझसे और मुझ-जैसे अन्य आदमियों से नहीं है, यद्यपि कोई नहीं कह सकता कि हम अमीर थे। लेकिन मेरा मतलब उन कारकूनों, ट्रामवे और रेलवे कामगारों और ईंटें पाथनेवालों से है, जो आदि-फासिस्टों में थे। अधिकतर वे करोड़पति नहीं, ग़रीब किसान थे। उनकी सहायता के बिना वर्तमान सरकार अधिक समय तक टिक नहीं सकती। वर्तमान सरकार को उनकी आवश्यकता है। प्रिंस टोर्लोनिया की और बैंक की सरकार को उनकी अपेक्षा है। शासन प्रिंस टोर्लोनिया और बैंक के लिए जितनी ही अधिक सहूलियतें करता है उसे उनकी उतनी ही अधिक आवश्यकता पड़ती है और इसलिए उतना ही अधिक आवश्यक हो जाता है यह विश्वास कराना कि यह किसानों और

मज़दूरों की सरकार है।

पोर्टाप्या के नायक की बात हमारी समझ में बिलकुल स्पष्ट रूप से नहीं आई थी। पर इधर थोड़े दिनों से जो भी कुछ होता आ रहा था उसे हम साफ़-साफ़ नहीं समझ पा रहे थे।

एक सैनिक टुकड़ी का फांटामारा में आकर कई स्त्रियों के साथ बलात्कार करना बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन क़ानून के नाम पर और एक विशेष पुलिस अधिकारी की उपस्थिति में, उनका वैसा करना बिलकुल स्पष्टतया समझ में नहीं आता था।

फ्युसिनो में उन्होंने छोटे खेत-मालिकों का लगान बढ़ा दिया था। और बड़े ज़मींदारों का घटा दिया था। यह बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन ऐसा करने का प्रस्ताव स्वयं ग़रीब किसानों के एक प्रतिनिधि ने किया था और यही हमारी समझ में नहीं आता था।

जिनके ख़िलाफ़ कोई क़ानूनी शिकायत नहीं थी और जिनका एकमात्र दोष ठेकेदार के हक में अनुकूल होना नहीं था ऐसे कई निर्दोष व्यक्तियों को अनेक बार उन फ़ासिस्ट कहे जानेवालों ने पीटा, घायल किया और मार तक डाला था; और यह बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन मारनेवालों का सर्वदा ही सरकार द्वारा पुरस्कृत होते रहना हमारी समझ में नहीं आ पाता था।

हमारी सभी विपत्तियां यदि अलग-अलग देखी जातीं तो नई नहीं थीं, क्योंकि ऐसी ही विपत्तियां भूतकाल में भी आ चुकीं। लेकिन इस बार वे बिलकुल ही नए और विचित्र ढंग से आई थीं।

सभी बातें हमारी समझ के बिलकुल परे थीं।

फांटामारा की गेहूं की सारी फसल ठेकेदार ने मई में ही जब कि वह पकी भी नहीं थी, और खेतों में खड़ी थी, एक सौ बीस लीरा प्रति हंडरवेट (लगभग 56 सेर) के हिसाब से ख़रीद ली थी। मई के महीनों में कोई भी नए आनेवाले गेहूं का बाज़ार भाव नहीं बताया लेकिन ठेकेदार ने जो सदा बहुत ही सतर्क रहता था उस समय गेहूं की फसल ख़रीदी तो हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन पैसों की आवश्यकता होने के कारण हमने और पास-पड़ोस के दूसरे गांवों ने उसे खेतों में खड़ी कच्ची गेहूं की फसल ही बेच दी थी। कटनी के समय इसका भेद खुला। सरकार ने राष्ट्रीय उपज के संबंध में एक विशेष क़ानून बनाया था, जिसके परिणामस्वरूप गेहूं का भाव एक सौ बीस लीरा प्रति हंडरवेट से बढ़कर एक सौ सत्तर लीरा हो गया था। इससे प्रकट होता है कि ठेकेदार को इस क़ानून का पता

मई में ही लग गया था और इस तरह गेहूं कटने से पहले ही उसे हमारे गेहूं के प्रत्येक हंडरवेट पर पचास लीरा मुनाफ़ा मिल गया था।

इस तरह हमारे गेहूं की फसल का सारा मुनाफ़ा ठेकेदार को मिला। जोतने, बोने, पहटाने, निराई, कटाई और मड़ाई करने का साल भर के कठिन परिश्रम का संपूर्ण मुनाफ़ा ठेकेदार की जेब में चला गया। किसानों ने ज़मीन जोती और समतल की, बीज बोए और गोड़नी की, फसल काटी और मड़ाई की और जब सब तैयार हो गया तो ठेकेदार बीच में आ कूदा और मुनाफ़ा वह ले गया। बैंक बीच में आ कूदा और मुनाफ़ा वह ले गया।

और हम विरोध भी नहीं कर सकते थे। सारी कार्रवाई पूरी तरह क़ानूनी थी। अगर ग़ैर क़ानूनी कुछ हो सकता था तो वह था हमारा विरोध करना।

किसानों पर होनेवाली लूट-खसोट बहुत दिनों से क़ानूनी हो चुके थे। यदि पुराने क़ानून काफ़ी न होते तो वे झट एक नया क़ानून बना लेते थे।

डॉन सर्कोस्टांज़ा की ओर, उसके समाधिस्थल के पीछेवाले पुराने बग़ीचे में जो पिछले साल की बाढ़ में उजड़ गया था, अंगूर के रोपे लगाने की मज़दूरी के मेरे, बेरार्डो और राफेल स्कार्पोन के कुछ पैसे निकलते थे। एक रविवार को सवेरे हम 'जन-मित्र' के घर अपना हिसाब लेने गए।

डॉन सर्कोस्टांज़ा ने नशे में न होते हुए भी हमसे हाथ मिलाया और हमें गले लगाया।

उसने पूछा, "मेरी ओर तुम्हारा कितने दिनों का हिसाब निकलता है ?"

बेरार्डो का पंद्रह दिन का और मेरा और राफेल स्कार्पोन का बारह-बारह दिन का हिसाब था।

डॉन सर्कोस्टांज़ा जैसे पढ़े-लिखे आदमी के लिए इस हिसाब का पैसा जोड़ना कुछ बहुत कठिन नहीं था।

लेकिन 'जन-मित्र' का चेहरा मलिन पड़ गया। कई क्षणों तक वह बिलकुल मौन रहा, फिर उठकर तीन या चार बार कमरे में चक्कर लगाया। खिड़की के बाहर और दरवाज़े के छेद से सुनकर निश्चय कर लिया कि कोई सुनता तो नहीं है। तब हमारे पास आकर अपनी विह्वलता को छिपाने का कठिन प्रयास करते हुए बोला, "बड़ी कठिनाई है। सरकार जिस तरह हमारे पीछे पड़ी हुई है, उसका तुम अंदाजा भी नहीं लगा सकते। रोज़ हम पर एक नया क़ानून लादा जाता है। अब हम अपने पैसे के भी मालिक नहीं रहे।"

इसका हम पर काफ़ी प्रभाव हुआ। तो, सरकार कुलीनों को भी तंग करने

लगी है ! सचमुच !

बेरार्डो ने कहा, "आपके कहने भर की देर है और सब किसान विद्रोह कर देंगे।"

"नहीं, नहीं, नहीं। सवाल कुछ और ही है।" डॉन सर्कोस्टांज़ा डर गया था। "मामला बहुत ही टेढ़ा है। यह देखो, मैंने तुम्हारे लिए तीन लिफ़ाफ़े तैयार कर रखे हैं। प्रत्येक में तुम तीनों के साथ तय की हुई मज़दूरी की, प्रत्येक के लिए अलग-अलग रक़म है।"

टेबल पर तीनों लिफ़ाफ़े रखे हुए थे।

"आपस में जो मज़दूरी तय हुई थी, उसी के हिसाब से मैंने ये लिफ़ाफ़े तैयार किए हैं। मैंने एक पाई भी बाक़ी नहीं रखी। मुझ पर तुम्हारा विश्वास है न ?"

हम तीनों ने कहा, "विश्वास क्यों नहीं है ?"

उसने फिर हमसे हाथ मिलाया और हमें गले लगाया। (हम उसका भरोसा कैसे नहीं करते ? यदि उसी का भरोसा नहीं कर सकते, तो फिर दुनिया में भरोसा करते ही किसका ?)

"अच्छा," वह आगे बोला, "आज सवेरे बिलकुल ही अनपेक्षित रूप से इस प्रांत के खेती पर काम करनेवाले मज़दूरों की मज़दूरी-संबंधी ये नए नियम मेरे पास आए हैं। इन्हें पढ़ो।"

डॉन सर्कोस्टांज़ा के फैले हुए हाथ से अख़बार लेकर मैं उसमें लाल पेंसिल से चिह्नित ये अंश पढ़ने लगा :

"खेती पर काम करनेवाले प्रथम श्रेणी के मज़दूरों की (यानी जिनकी उम्र 19 से 60 जर्ष के बीच हो) वर्तमान मज़दूरी चालीस प्रतिशत कम की जाती है।"

"सत्रह और अठारह वर्ष के लड़कों की (दूसरी श्रेणी) मज़दूरी उपर्युक्त कमी के अलावा बीस प्रतिशत तथा स्त्रियों और बालकों की (तीसरी श्रेणी) मज़दूरी पैंतालीस प्रतिशत और कम की जाती है।"

"क्या यह बुरा नहीं है ?" डॉन सर्कोस्टांज़ा ने हमसे पूछा, "बतलाओ, क्या यह बुरा नहीं है ?"

मैं पढ़ता गया : "सम्पत्ति या ज़मीन सुधारने-संबंधी सभी काम, जैतून, फल और अंगूर के रोपे लगाना, सफाई करना, खुदाई करना, खाइयां खोदना, गड्ढे भरना, सड़क बनाना आदि काम बेकारों की सहायता के लिए खुले हुए सार्वजनिक कामों

की श्रेणी में आते हैं, इसलिए इनकी मज़दूरी उपर्युक्त दरों की अपेक्षा कम दी जाए और वह कमी किसी भी दशा में पच्चीस प्रतिशत से अधिक न हो।"

"क्या यह बिलकुल असहनीय नहीं है ? मालिक और नौकर के आपसी संबंधों में क़ानून की क्या आवश्यकता ? अगर इसी तरह चलता रहा तो हमारी स्वाधीनता कहां रहेगी ?" जन-मित्र ने कहा।

"हम उन तीन लिफ़ाफ़ों को, जो हमारे लिए हैं, ले लें और इसका फ़ैसला हो जाएगा।" यह कहते हुए बेरार्डो अपना लिफ़ाफ़ा उठाने के लिए बढ़ा, लेकिन डॉन सर्कोस्टांज़ा ने उसे रोक दिया।

वह नाराज़ होकर कहने लगा, "क्या मेरे अपने घर में मेरे साथ पेश आने का तुम्हारा यही तरीका है ?"

उसकी आवाज़ और व्यवहार एकदम बदल गया था।

मैंने कहा—जब यह उसका लिफ़ाफ़ा है तब वह इसे क्यों न ले ? हमने काम करने से पहले ही दिन और मज़दूरी ठहरा ली थी। अब आपकी ओर हमारा जो पैसा निकलता है, उसका हिसाब लगाना कुछ बहुत कठिन नहीं है।

"और क़ानून ? क़ानून का क्या होगा ? क़ानून तोड़ने की सज़ा तुम्हें मालूम है ? इसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते, पर मैं तो जानता हूं। तुम्हारे लिए मैं जेल जाने को तैयार नहीं हूं। मैं अवश्य ही बहुत दुःखी हूं; परंतु मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे लिए जेल नहीं जा सकता और न जाऊंगा ही। क़ानून क़ानून है और उसकी मर्यादा का पालन करना ही चाहिए।" डॉन सर्कोस्टांज़ा ने साश्चर्य प्रकट किया।

मैंने कहा, "मोसेज़ का क़ानून है। 'तुझे चोरी नहीं करना चाहिए'।"

"आजकल हमारा संबंध मोसेज़ से नहीं मुसोलिनी से है। और हर घड़ी क़ानून की मर्यादा देखने का काम मेरा नहीं है। यदि तुम्हारी यही इच्छा हो तो मैं सिपाहियों को बुला भेजूं।"

डॉन सर्कोस्टांज़ा बहुत ही उद्विग्न हो गया था। उसकी आंखें क्रोध से लाल हो आईं और वह कमरे में घूमते हुए बोला, "जितना कुछ मैंने तुम्हारे लिए किया है, उसके बाद तुमसे ऐसे व्यवहार की मुझे कभी आशा नहीं थी। ऐसा करने से तुम्हारा मतलब क्या है ? क्या तुम मुझे बर्बाद करना चाहते हो ? क्यों बर्बाद करना चाहते हो ? मुझे साफ़-साफ़ बतलाओ कि तुम मुझे बर्बाद करना क्यों चाहते हो ?"

तब वह थोड़ा शांत हो गया और अपनी लिखने की मेज़ पर जा बैठा। उसने बेरार्डो का लिफ़ाफ़ा उठाकर उसमें से 85 लीरा निकाले। तब एक कागज़ और पेंसिल लेकर वह हिसाब करने लगा :

"क़ानून के अनुसार पहले चालीस प्रतिशत काटें। चालीस प्रतिशत के हुए पैंतीस लीरा। बाक़ी बचे इक्यावन। बेकारों की सहायतावाले क़ानून के अनुसार इसमें से पच्चीस प्रतिशत, यानी तेरह लीरा कम किए। बेरार्डो के लिए बाक़ी बचे अड़तीस लीरा। मेरे प्यारे बेरार्डो, तुम बड़े अच्छे आदमी हो और मुझे तुम्हारे लिए बहुत दुःख है, लेकिन इसके लिए तुम्हें फ़ासिस्टों को दोष देना चाहिए।"

तब मेरा लिफ़ाफ़ा उठाकर डॉन सर्कोस्टांज़ा ने उसमें से अठहत्तर लीरा निकाले और फिर से हिसाब लगाना शुरू किया, "पहले क़ानून के अनुसार चालीस प्रतिशत कम किए। यानी पैंतीस लीरा। बाक़ी बचे अड़तालीस। इनमें से पच्चीस प्रतिशत बेकारों की सहायतावाले गए। यानी बारह। तो तुम्हारी हिसाब में बचे, चौंतीस लीरा।"

स्कार्पोन के लिए भी यही हिसाब दुहराया गया।

तब, उदारता का प्रदर्शन करते हुए डॉन सर्कोस्टांज़ा ने अपनी नौकरानी को बुलाकर हमारे लिए शराब लाने की आज्ञा दी। चूंकि नए क़ानून के अनुसार उसके लिए मज़दूरी में से प्रति सैकड़ा कुछ कटनेवाला नहीं था, हम उसे पी गए।

उसी सवेरे बाल्डोविनो सियारप्पा और उसकी पत्नी को डॉना ज़िज़ोला ने मिलने बुलाया था और वे शहर आए थे। बाल्डोविना ने डॉन कार्लो माग्ना से ज़मीन का एक टुकड़ा लगान पर ले रखा था और कुछ दिन पहले ही लगान भरा था। डॉना ज़िज़ोला को लगान कम मालूम हुआ, क्योंकि पिछले साल बाल्डोविनो की स्त्री लगान के साथ ऊपर से दो दर्जन मुर्गी के अंडे भी ले गई थी। डॉना ज़िज़ोला का कहना था कि प्रथावाले क़ानून के अनुसार उसे प्रतिवर्ष लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अंडे भी मिलने ही चाहिए।

हमारे जन-मित्र के ठीक दरवाज़े के सामने बीच सड़क पर बाल्डोबिनो सियारप्पा अपनी घरवाली को पीटता मिला। वे दोनों डॉना ज़िज़ोला से मिलकर आ रहे थे और उन्हें प्रथावाले क़ानून के अनुसार प्रतिवर्ष लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अंडे देना मंजूर करना पड़ा था।

डॉना ज़िज़ोला को दो दर्जन अंडे भेंट देने की सूझ बाल्डोविनो की ही थी, परंतु अंडे उसकी स्त्री ले गई थी और वहां उसने खुलासा नहीं किया था कि यह केवल एक बार की 'विशेष भेंट है, अगले साल नहीं दोहराई जाएगी। मतलब यह कि सारा कसूर उसकी स्त्री का था। यों प्रथावाले क़ानून के अनुसार डॉना ज़िज़ोला को इस साल, और दूसरे साल, और आनेवाले कई सालों तक, वास्तव में बाल्डोविनो के जीवन-भर और बाद में उसके बेटे के जीवन-भर, उस कम्बख़्त ज़रा-से ज़मीन

के टुकड़े के लिए लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अंडे पाने का अधिकार था।

एक बात बिलकुल स्पष्ट थी। प्रतिदिन ज़मींदारों के पक्ष में नए क़ानून बनते थे और जितने भी पुराने क़ानून किसानों के पक्ष में और उन्हें लाभ पहुंचानेवाले थे, केवल वे ही रद्द किए जाते थे। दूसरे चालू रहते थे।

इस तरह प्रथावाला क़ानून, यदि वह किसी अच्छी प्रथा के बारे में होता, जैसे कि किसान को ठहराई हुई मज़दूरी देना, तो मिटा दिया जाता था, जबकि प्रथावाला क़ानून, यदि वह किसी बुरी प्रथा के बारे में होता, जैसे कि भेंट को 'अनिवार्य' करना, तो चालू रहता था।

पुरानी चाल के दूसरे ज़मींदारों की तरह, एक पुरानी प्रथा के अनुसार डॉना ज़िज़ोला के पास असामियों द्वारा लाए जानेवाले अंडे नापने की एक बाली थी। जो अंडे उस बाली से छोटे होते और उसमें से आसानी से निकल जाते, उन्हें वह बाक़ायदा लौटा देती थी। अब बाली उस जमाने की थी जब मुर्गियां आज से ज़्यादा बड़े अंडे देती थीं और डॉना ज़िज़ोला अक्सर छोटे अंडे लौटाकर उनके स्थान पर निरन्तर बड़े अंडों की मांग करती थी। लेकिन मुर्गियां पहले जैसे बड़े अंडे नहीं देतीं, तो क्या यह भी किसान का अपराध था ?

उस समय तक गिरजाघर की रखवाली करनेवाले त्योफिलो ने डॉन अबाक्च्यो के लिए फांटामारा आकर वहां वालों के लिए 'मॉस' (सामूहिक प्रार्थना) का चंदा जमा कर लिया था। चंदा दस लीरा इकट्ठा हुआ था, लेकिन डॉन अबाक्च्यो ने यह कहकर आने से इनकार कर दिया कि 'मास' कहने की दक्षिणा बढ़ गई है और जब तक दस लीरा और न भेजे जाएंगे तब तक वह न आएगा। दस लीरा और बड़ी कठिनाई से पाई-पाई, करके जमा हुए और तब एक रविवार को सबेरे डॉन अबाक्च्यो 'मास' कहने आया।

गिरजाघर धूल और जालों से भरा हुआ बड़ी बुरी दशा में था, दीवालें सीली होकर उधड़ रही थीं।

वेदी पर युचारिस्ट की तस्वीर ही एक मात्र सुंदर चीज़ थी। ईसा अपने हाथ में एक सफ़ेद रोटी का टुकड़ा लिए हुए थे। वह कह रहे थे, "यह मेरा शरीर है।"

दूसरे शब्दों में, सफ़ेद रोटी मेरा (ईश्वर का) शरीर है। सफ़ेद रोटी परमात्मा की संतान है। सफ़ेद रोटी सत्य और जीवन है। ईसा मक्का की रोटी जिसे किसान खाते हैं, और पादरी की रोटी की बजाय अर्पण किए हुए बेकस और बेस्वाद फुलके की ओर इंगित कर रहे थे। ईसा अपने हाथ में एक सचमुच की सफ़ेद रोटी का टुकड़ा लिए हुए थे और कह रहे थे, "यह (सफ़ेद-रोटी) मेरा शरीर है।"

उनका मतलब ईश्वर-पुत्र के शरीर से था—जो सत्य और जीवन है। उनका मतलब था, "जिसके पास सफ़ेद रोटी है उसके पास मैं (ईश्वर) हूं।" जिसके पास सफ़ेद रोटी नहीं है, जिसके पास केवल मक्के की बनी रोटी है, वह ईश्वर की कृपा से वंचित है। वह ईश्वर को नहीं जानता है, सत्य को नहीं जानता है, जीवित नहीं है। जिसके पास सफ़ेद रोटी नहीं है, जिसके पास केवल मक्के की बनी रोटी है मानो उसके लिए ईसा का अवतार हुआ ही नहीं, मानो उसके लिए उद्धार—मुक्ति—अभी आना बाक़ी है।

हम अपने गेहूं के बारे में सोचे बिना कैसे रह सकते थे ? सालभर के कठिन परिश्रम के बाद हमने उसे पैदा किया था और जब वह पका भी नहीं था, बैंक ने उसे हमसे मई के महीने में ही छीन लिया था। हमने एड़ी-चोटी का पसीना एक करके उसे उत्पन्न किया था, लेकिन वह हमारे खाने के लिए नहीं था। वह शहर जाने को था, जहां सब उसे खाएंगे, कुत्ते और बिल्लियां तक, लेकिन हम नहीं खा सकते थे। हमारे खाने के लिए तो वही मक्के की रोटियां थीं।

"यह मेरा शरीर है।" वेदी पर से यह कहते हुए ईसा मक्के की रोटी के एक टुकड़े की ओर नहीं, परंतु, सफ़ेद रोटी के एक टुकड़े की ओर संकेत कर रहे थे, और परमपिता के इन शब्दों, 'आज हमें हमारी रोटी दे', का मतलब मक्के की रोटी से नहीं, अपितु गेहूं की रोटी से ही था।

अपने देशवासी किसानों की क्षुधा-निवृत्ति के लिए मछलियों के साथ जो रोटी ईसा के चमत्कार से बढ़ गई थी, वह मक्का की नहीं, अपितु गेहूं की ही रोटी थी।

ईश्वर के नैवेद्य की प्रार्थनावाली रोटी,
ओ स्वर्ग की (परमात्मा की) सजीव रोटी।

मक्के की बनी हुई रोटी नहीं है, अपितु गेहूं से बनी हुई रोटी है (गेहूं जो देहात में उगता है, परंतु शहर में इस्तेमाल किया जाता है)।

इंजिल से प्रभु ईसा के चार चमत्कारों का पाठ सुनाने के पहले डॉन अबाक्च्यो ने हमारे सामने सैन बेरार्डो के बारे में एक छोटे-से धर्मोपदेश का प्रवचन किया।

सैन बेरार्डो एक किसान था, और वह सदा ही किसानों का संत रहा है। अपने जीवन-काल में जो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अलौकिक कर्म उसने किया था, वह था एक दुर्भिक्ष के साल पेसिना के किसानों में बहुत-सी रोटियां बांटना। इसलिए उसे सफ़ेद रोटियों का, गेहूं से बनी रोटियों का संत भी कहते हैं।

एक अभावपूर्ण जीवन के बाद बुढ़ापे में सैन बेरार्डो की मृत्यु हो गई। ऐसा कहा जाता है कि मरने के बाद जब वह न्यायासन के सामने लाया गया तो सर्वशक्तिमान् ने, जो उसे जानते और उस पर प्रसन्न थे, उसे गले से लगाया और कहा, "तुम जो कुछ चाहो, तुम्हें मिल सकता है। अपनी इच्छित वस्तु मांगने में हिचकिचाओ मत।"

यह वर सुनकर सैन बेरार्डो बहुत ही अस्थिर हो गया।

उसने डरते-डरते पूछा, "क्या मैं कोई भी चीज़ मांग सकता हूं ?"

सर्वशक्तिमान् ने उत्साहित करते हुए कहा, "जो तुम चाहो। मैं स्वर्ग का स्वामी हूं। यहां मैं जो चाहूं, कर सकता हूं। यहां कोई पोप नहीं, है। फिर, मैं तुम पर प्रसन्न हूं। तुम जो कुछ मांगोगे, तुम्हें मिल जाएगा।"

लेकिन सैन बेरार्डो को अपनी इच्छा प्रकट करने का साहस नहीं हुआ। वह डरता था कि कहीं उसकी अपरिमित इच्छाएं परमात्मा को क्रुद्ध न कर दें। परमात्मा की ओर से काफ़ी समझाने-बुझाने और यह आश्वासन मिल जाने के बाद कि वह अप्रसन्न नहीं होंगे, सैन बेरार्डो ने अपनी इच्छा व्यक्त की।

वह बोला, "हे प्रभु, मुझे सफ़ेद रोटी का एक बड़ा टुकड़ा प्रदान कीजिए।"

ईश्वर ने अपना वचन निभाया और अप्रसन्न नहीं हुए, अपितु उस किसान संत को गले लगाकर रोने लगे। तब, अपनी घन-गंभीर ध्वनि में उन्होंने बारह देवदूतों को बुलाकर आज्ञा दी कि सैन बेरार्डो को स्वर्ग की सर्वश्रेष्ठ सफ़ेद रोटी दी जाए।

यह आज से चार सौ वर्ष पहले की बात है। उसके बाद कोई किसान स्वर्ग में नहीं गया।

सैन बेरार्डो की यह सच्ची कथा है जो हमारे यहां पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। तो भी पादरी इसे दूसरे ढंग से सुनाते हैं। वर्तमान पादरियों के अनुसार स्वर्ग में खाना-पीना नहीं होता। स्वर्ग में तुम बिना खाए ही परमेश्वर के दर्शनों से आनंदित हो सकते हो। यदि यह सच है, तो पृथ्वी पर खाने का एक यह भी अतिरिक्त कारण मालूम पड़ता है। डॉन अबाक्च्यो भी प्रत्यक्ष रूप से ऐसा ही सोचता था, क्योंकि वह ग़जब का पेटू था, और मानो एक अनंतकालीन उपवास की प्रतीक्षा में आवश्यकता से अधिक मुटाने का प्रयत्न कर रहा था।

परमात्मा फांटामारा की रक्षा करे, इसके लिए एक विशेष अभिषेक—अनुष्ठान—की आवश्यकता के बारे में सुझाते हुए डॉन अबाक्च्यो ने अपना धार्मिक प्रवचन समाप्त किया।

वह बोला, "मॉस अच्छी चीज़ है लेकिन वह काफ़ी नहीं है। मॉस आधे घंटे

में समाप्त हो जाता है। यदि किसी महत्त्वपूर्ण मुकदमे के बारे में वकील से बात करनी हो तो केवल एक बार बात कर लेने से संतोष नहीं होता। परमात्मा के विषय में भी ठीक ऐसा ही आग्रह आवश्यक है। परमात्मा अवश्य ही दयालु है, परंतु उसे भी अपनी प्रार्थना सुनना अच्छा लगता है। विशेष अनुष्ठान के लिए एक पुरोहित का लोगों के ख़र्च से नौ दिन तक फांटामारा में ठहरना आवश्यक होगा। कुल मिलाकर पचास लीरा के लगभग ख़र्च..."

डॉन अबाक्क्यो ज़ोर से भिन्नाया और गिरजाघर में मौजूद आदमियों ने भी उसका अनुसरण किया।

उसने शीघ्रता से मॉस समाप्त किया और ऊपर का वस्त्र उतारकर खिसियाता हुआ—पांवों में चप्पल डालकर पूजागृह से निकल गया।

जब विशेष अनुष्ठान होता है, तब पादरी भी अच्छा काम करते हैं। वे मन लगाकर अभिषेक-अनुष्ठान करते हैं, ईसा की स्मृति में लाई जानेवाली रोटी और शराब (होली कम्युनियन) ग्रहण करते हैं, लोगों का धार्मिक क्रिया के अंतर्गत परिमार्जन करते हैं, और अंत्येष्टि-क्रिया करवाते हैं। और यदि वर्ष अच्छा है तो ठीक है, लेकिन यदि देश में दुर्भिक्ष है तो बेचारा पादरी क्या करे ?

ऐसे समय आपस में एक दूसरे से झगड़ा करना ही किसानों का दुःख से एक मात्र छुटकारा है।

जिसकी किसी से अनबन न हो, ऐसा एक भी घर फांटामारा में निकलना मुश्किल ही था। भयंकर झगड़ों के लिए ज़रा-सा बहाना काफ़ी होता था। झगड़े दिन में औरतों के बीच शुरू होते थे और सांझ को, जब आदमी काम पर से लौट आते तो फिर भभक उठते थे। ज़रा-सी खमीर जो उधार लेकर नहीं लौटाई गई हो, या एक ईंट, या एक झब्बी, या एक रकाबी, या लकड़ी का एक टुकड़ा, या मुर्गी का एक बच्चा, या ज़रा-सी घास उन झगड़ों के कारण होते थे।

जब अभाव होता है तो दिन में बीसियों चीज़ें झगड़ने के लिए निकल आती हैं। लेकिन सब चीज़ों में खास झगड़े की जड़ थी नाले का पानी।

सड़क सुधारनेवालों ने शीघ्रता से नई खाई खोद डाली थी। जिस दिन पानी का हिस्सा-बांट किया जानेवाला था, फांटामारा के वे सब किसान, जिनके पास सींचने को खेत थे, बंटवारा देखने गए।

पुराने बहाव की ओर जानेवाले और ठेकेदार की ओर जानेवाले पानी का उचित नियंत्रण करने के लिए जहां से पानी बांटा जानेवाला था, उस जगह दो मोरियोंवाला एक बांध बांधा गया था। हम अभी तक उलझन में थे कि 'प्रत्येक

को तीन-चौथाईवाला' वह रहस्यमय बंटवारा कैसे किया जाएगा ?

लगभग एक सौ कड़ाबीनवाले शहर से आए और सड़क पर तैनात कर दिए गए। एक दस्ते ने आकर हमें नाले से दूर अंगूर के बगीचों की ओर खदेड़ दिया। हमने पहले कभी इतने सैनिक नहीं देखे थे, इसलिए हम बिना विरोध किए हट आए।

थोड़ी देर बाद फासिस्ट स्वयंसेवकों (मिलिशिया) का एक जत्था और सम्मानित अतिथि आए। उसमें ठेकेदार, दस्तावेज़ों का तस्दीक़ अफ़सर, डॉन सर्कोस्टांज़ा विचारक, डॉन सुकावासियो, डॉन सिकोन, डॉन पॉम्पोनियो, डॉन तारादेलां, काली कमीज़ें पहने माननीय पेलिनी और अन्य कई भद्र पुरुष थे, जिन्हें हम नहीं पहचानते; और सबके पीछे फिलियो इलबेलो और इन्नासेंज़ो-ला-लेग्गी थे।

डॉन सर्कोस्टांज़ा सीधा हमारी ओर आया। हममें से प्रत्येक के साथ हाथ मिलाया और हमसे कहा कि हमारे लाभ के लिए हम सब कुछ उस पर छोड़ दें। यह तय हुआ कि पानी का बंटवारा देखने के लिए हम बड़े-बूढ़ों की एक कमेटी बनाएं। पॉज़ियो पिलाटो, ग्यासोबी लोसुर्डो और मुझे मिलाकर तीन जनों की एक कमेटी बनी। दूसरे किसानों को सैनिकों के कतार के पीछे सड़क पर खड़े रहने की आज्ञा दी गई।

सब तैयारियां हो जाने पर दस्तावेज़ों का तस्दीक अफ़सर हमारी ओर आया और नाले के बंटवारे के संबंध में फांटामारा के लोगों और ठेकेदार के बीच जो समझौता हुआ था, उसे पढ़ सुनाया।

उसने कहा, "समझौता बिलकुल स्पष्ट है। पानी का तीन-चौथाई पंचायत द्वारा बनाई हुई नई खाई के रास्ते और बाक़ी बचे हुए का तीन-चौथाई उसी पुराने नाले से बहता रहेगा।"

पॉज़ियो पिलाटो ने चिल्लाकर कहा, "यह ग़लत है। समझौता कहता है कि प्रत्येक को तीन-चौथाई, यानी आधा-आधा, यानी तीन-चौथाई हमें और तीन-चौथाई ठेकेदार को। हर एक आदमी को उसका उचित हिस्सा !"

"नहीं, नहीं, नहीं !" ग्यासोबी लोसुर्डो भी चिल्लाने लगा, "समझौता कहता है कि पानी का तीन-चौथाई हमारे लिए है, और यदि ज़्यादा बचता है तो, क्योंकि हर हालत में बहुत थोड़ा पानी बाक़ी बचता है।"

मैंने कहा, "प्रत्येक को तीन-चौथाई एक बिलकुल फ़िज़ूल की बात है। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसी बात नहीं सुनी। सच तो यह है कि पानी फांटामारा का है और वह फांटामारा के ही अधिकार में रहना चाहिए।"

सैनिकों की कतार के पीछे, सड़क पर खड़े हुए किसान हमारे चिल्लाने और भंगिमाओं से यह समझकर कि पानी का बंटवारा हमारे प्रतिकूल होने जा रहा है, शोर मचाने लगे। खासकर राफेन स्कार्पोन अपने ऊधमी साथियों के साथ पागल की तरह चीख़ने लगा।

तब ठेकेदार ने यह घोषणा की :

"चूंकि फांटामारावासियों ने एक क्रोधात्मक प्रवृत्ति अख्त्यार की है और पानी के बंटवारे के समय उपस्थित रहनेवाली कमेटी के सदस्यों का आपस में ही विरोध है, मैं पंचायत के प्रधान की हैसियत से मिलिशिया के अधिनायक माननीय पेलिनो और डॉन सर्कोस्टांज़ा को फांटामारा का प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त करता हूं।"

छः कड़ाबीनवाले आकर हमें फांटामारा के दूसरे आदमियों के पास जब सड़क पर ले जाने लगे तो डॉन सर्कोस्टांज़ा ने पुकारकर कहा, "शांत हो ! शांत हो ! मेरा विश्वास करो।"

नाले के पास जो कुछ हो रहा था उसे कड़ाबीनवालों की कतार के पीछे से देखना कठिन था। यों फांटामारा के अन्य निवासियों के प्रति उत्तरदायित्व से मुक्त होकर हमें मन-ही-मन एक तरह की प्रसन्नता ही हुई। डॉन सर्कोस्टांज़ा जैसे पढ़े-लिखे आदमी द्वारा हमारे स्वार्थों का रक्षित होना कहीं ज़्यादा ठीक था।

पहले दस्तावेज़ों का तस्दीक-अफ़सर, एक राज और बेलचे लिए हुए चार मजूर नाले पर पहुंचे। माननीय पेलिनो और डॉन स्कोर्स्टांज़ा ने बारी-बारी से राज के साथ काफ़ी देर तक सलाह-मशविरा किया।

सड़क के ऊंचे किनारे और पानी को नियंत्रित करनेवाली नालियों के आस-पास खड़े कड़ाबीनवाले और अफसरों के झुंड के कारण हम 'प्रत्येक को तीन-चौथाई' की व्याख्या कार्यान्वित होते नहीं देख सकते थे। लेकिन, कोई सौ गज नीचे जहां नाला ग्यासिंटो बार्लेटा और पैपासिस्टो के बगीचे की ओर मुड़ता था, हम उसके बहाव को देखकर मालूम कर सकते थे कि हमारा पानी कितना कम हुआ है और कितना बचा है। इसलिए हम सबकी दृष्टि उसी स्थान पर केंद्रित हो रही थी। हम ध्यानपूर्वक देखते रहे और कुछ ही गज़ों की दूरी पर अफ़सर तथा हमारे प्रतिनिधि जो कुछ कर रहे थे, उसके बारे में अनुमान लगाने का प्रयत्न करते रहे।

पहले-पहल राफेल ने सतह से पानी कम होते (उतरते) देखा। हममें से सभी का यह विश्वास था कि हमारे लिए पहले जितना पानी नहीं ही रहने दिया जाएगा, लेकिन जब पानी सचमुच ही कम होते दीखा तो हम ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने और

ठेकेदार तथा उसके मेहमानों को गालियां देने लगे।

हम 'चोर ! चोर !' चिल्लाने लगे।

फ़िलोमेना। क्वाटर्ना, क्च्युटा, कानारोज़ो की छोरी, गिडिटा स्कार्पोन, लिज़ाबेता लिमोना और दूसरी कई लुगाइयां घुटनों पर बैठकर चिल्लाने लगीं, "भगवान करे और इनकी आंखें फूट जाएं !"

"अरे हत्यारो, हमारा पानी चुराया है तुमने। राम करे और तुम्हारा उतना ही ख़ून सूखे !"

"राम करे और तुम्हें मन-मन आंसू बहाने पड़े !"

"तुम्हारे पेट में मेंढक हो जाएं ! राम करे, तुम्हारे पेट में हाथ-हाथ भर के कीड़े पड़ें और डींडू निकलें।"

"तुम्हारा सत्यानाश हो जाए रे, और राम करे तुम्हारे छोरा-लुगाई मरें !"

"भगवान करे और हम दु:खियों की वाणी फले !"

इस बीच पानी सतह से इतना अधिक कम हो गया कि पेंदे में के कंकड़, सेवार और घास तक दिखाई पड़ने लगी।

हमने डॉन अबाक्च्यो को कहते सुना, "बंटवारा हो गया है।"

"हमारा सारा पानी ! उन्होंने हमारा सारा पानी ले लिया है ! हमारा सब पानी !" हम फिर चिल्लाने लगे। राफेल स्कार्पोन और बेनेर्डी सेंटो, दूसरे युवकों की सहायता से कड़ाबीनवालों की कतार को धक्का दे-देकर नाले की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने लगे। सैनिक अपनी रक्षा के लिए हमें राइफलों के कुंदों से मारने और डपटने लगे—पीछे हटो ! पीछे हटो !

इतने में डॉन सर्कोस्टांज़ा की आवाज़ शोरगुल के ऊपर सुनाई दी, "शांत हो जाओ, शांत हो जाओ, तुम्हारे स्वार्थों की रक्षा करने के लिए मैं इधर हूं। नासमझी से काम मत करो। सब मेरे भरोसे छोड़ दो !"

फिर हमारी ओर सड़क के किनारे-किनारे आकर वह अपने, सदा की तरह, बंधे-सधे शब्दों में कहने लगा, "क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं रहा ? मुझ पर विश्वास नहीं होने से ही तो तुम्हारा नुकसान हो रहा है। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे चिल्लाने और ज़ोर-ज़बर्दस्ती करने से तुम्हें कुछ मिल जाएगा ?"

तब ठेकेदार की ओर मुड़कर वह बोला, "इन लोगों का असंतोष न्याय-संगत है। कोई समझौता निकालना चाहिए। मैं आपकी मानवता से प्रजा-हितैषिता से 'अपील' करता हूं। फांटामारा के इन लोगों का उचित आदर किया जाना चाहिए। नाले के लिए नया रास्ता बनाने का ख़र्च पंचायत ने बर्दाश्त किया है। जो हुआ

सो हुआ। ईसा का एक कथन है, जो सत्य है, सत्य है..."

डॉन अबाक्च्यो ने बीच में कहा, "बिल्कुल ठीक।"

"इसलिए मेरी राय है कि एक अवधि मुकर्रर कर दी जाए जिसके बाद नाला पूरी तरह से फांटामारावालों को मिल जाना चाहिए। इससे फांटामारावासियों को संतोष हो जाएगा। उनकी हानि न्यायसंगत लेकिन अनंत नहीं है ! अच्छा, तो कोई अवधि का समय सुझाए।"

"पचास वर्ष !" ठेकेदार ने सुझाया।

एक घृणा-मिश्रित चिल्लाहट से हमने उसके इस बुरे प्रस्ताव का विरोध किया।

"हमारे गले काट लो, हमें जेल में डाल दो। चोर ! लुटेरे !"

डॉन सर्कोस्टांज़ा ने फिर शांति स्थापित की और ठेकेदार की ओर मुड़कर कहने लगा, "फांटामारावासियों की ओर से मैं पाडेस्टा का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता। पचास साल बहुत ज्यादा है। हमें इससे छोटी, बहुत ही छोटी अवधि निश्चित करनी चाहिए।"

"चालीस वर्ष।" डॉन अबाक्च्यो ने कहा।

"पैंतीस।" माननीय पेलिनो का प्रस्ताव था।

"पच्चीस।" दस्तावेज़ों के तस्दीक़-अफ़सर ने राय दी।

लेकिन प्रत्येक नए सुझाव की किसानों ने चिल्लाकर अवमानना की।

डॉन सर्कोस्टांजा फिर आगे आया।

"फांटामारा के परिश्रमी और भले लोगों की ओर से मुझे एक दूसरा प्रस्ताव रखने की आज्ञा दीजिए। मेरा प्रस्ताव दस लस्टर (प्रकाश) की अवधि का है। मैं पाडेस्टा की दयाशीलता से यह महान त्याग स्वीकार करने की 'अपील' करता हूं।"

हमारी खातिर इतना त्याग करने के लिए डॉन तारादेला, डॉन सिकोन, डॉन पाम्पोनियो, डॉन सुकावासियो और विचारक ठेकेदार को घेरकर गिड़गिड़ाने लगे।

काफ़ी आग्रह के बाद ठेकेदार ने दस लस्टर स्वीकार कर लिया।

एक कागज़ निकाला गया और दस्तावेज़ों के तस्दीक-अफ़सर ने डॉन सर्कोस्टांज़ा के सुझाए हुए शब्द उस पर लिख लिए और तब उस पर ठेकेदार के दस्तख़त करवाए गए और फांटामारा की ओर से स्वयं उसने तथा माननीय पेलिनो ने हमारा प्रतिनिधित्व करते हुए दस्तख़त किए।

[सच पूछा जाए तो हममें से यह कोई नहीं जानता था कि दस लस्टर कितने होते हैं।]

आठ

फांटामारा में इस विषय पर कि दस लस्टर कितने हो सकते हैं, काफ़ी वाद-विवाद हुआ।

पोर्टाप्या के नायक के खयाल से दस लस्टर का मतलब सौ वर्ष से था, लेकिन बाल्डीसेरा का कहना था कि नहीं दस शताब्दियों से है।

मेरीटा सासनिरा ने भी अपनी बात कही। वह बोली, "क्या दस महीने नहीं हो सकते ?" लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

फांटामारा के लिए हर हालत में दस लस्टर का मतलब था भूख। पहाड़ी के नीचे के बगीचे और खेत, जिन्हें पहले नाली का पानी सींचा करता था, अब अधिकाधिक उजाड़ दीखने लगे थे। ऐसा लगता था कि ईश्वर भी हमारे विरुद्ध ठेकेदार के गुट्ट में शामिल है, क्योंकि मई का महीना बीत चला था और अभी तक वर्षा आरंभ नहीं हुई थी।

डॉन अबाक्च्यो ने इस अवसर से लाभ उठाकर अनुष्ठान करने की बात फिर से दुहराई, लेकिन अबकी सबसे पहले गिरजाघर की देख-भाल करनेवाले त्योफिलो ने ही ज़ोरदार शब्दों में विरोध किया।

नीचे मैदान में सारी फसल धीरे-धीरे सूख चली थी। सूखी, झुलसी ज़मीन में बड़ी-बड़ी दरारें दिखने लगी थीं। पांज़ियो पिलाटो और एंटोनियो रनॉक्च्यो के मक्का के खेत दूर से हरे-हरे दीखते थे—पर केवल हरे दीखते ही थे। मक्का की डांठें तो बड़ी-बड़ी हो गई थीं, पर भुट्टे कहीं-कहीं और छोटे-छोटे और ज़रा-ज़रा से दानोंवाले लगे थे। ज़्यादा-से-ज़्यादा उनका उपयोग जानवरों के चारे के रूप में हो सकता था।

मेरे, माइकेल ज़ोम्पा और बाल्डोविनो स्यारपा के खेतों की हालत तो, जिनमें फलियां बोई गई थीं, और भी ख़राब थी। फलियां धूप में सूखकर घास जैसी हो गई थीं। ग्यासिंटो बार्लेटा, बेनेर्डी सेंटो, एंटोनियो ब्रास्योला और पेपासिस्टो के खेतों पर तो मानो पिघला हुआ लावा ही फिर गया था।

फांटामारा के लिए इसका अर्थ था भूखों मरना।

साधारणतया हमारी मालिकी की या पट्टे की ज़मीन से होनेवाली उपज कर और लगान चुकाने भर को होती थी जबकि सिंचाई के खेतों की उपज सर्दी भर

खाने को मक्का की रोटी और चटनी-भाजी जुटाती थी। हमारे पानी की चोरी ने हमें सर्दियों में बिना चटनी-रोटी का करके छोड़ दिया था। मानवीय दृष्टिकोण से यह असंभव था। इतना होते हुए भी हममें से एक ने भी आशा नहीं छोड़ी थी। लेकिन हम किसके पास जाते ?

प्रत्येक को तीन-चौथाईवाले मामले के ऊपर इस दस लस्टरवाली चालबाजी ने कुलीनो ने हमारे रहे-सहे विश्वास को भी नष्ट कर दिया था। दोनों अवसरों पर जिसे अपनी रक्षा का भार सौंपा था उसी आदमी ने हमें जान-बूझकर धोखा दिया था। ऐसा कोई नहीं था। जिसका हम विश्वास करते ! हम अपनी गुहार सुनाने कहां जाते ?

इससे होनेवाली हमारी हानि दूसरों को समझाना बहुत कठिन है। किसी दूसरे दल के छल-कपट से रक्षा पाने, या विदेश जाने की आज्ञा प्राप्त करने, या अपने सैनिक लड़के की छुट्टी मंजूर करवाने, या शादी-गमी के मामले में सलाह लेने या और किसी मौक़े पर सहायता के लिए यदि किसान की एक या दूसरे दल तक (अक्सर जिनका नेता कोई वकील होता) पहुंच नहीं होती, तो वह अपने-आपको धरती पर के कीड़े के समान अरक्षित समझता है।

इसलिए सभी किसान हमेशा शिक्षित समाज के किसी ऐसे सदस्य की, और खासकर वकील की, कृपा-दृष्टि प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जो काम पड़ने पर अपने किसी पदाधिकारी साथी के प्रभाव का रोम में सरकारी दफ़्तरों तक उपयोग करवा सके। पढ़े-लिखे लोग इस लंबे-चौड़े पेचीदगी-पूर्ण षड्यंत्र को शासन और राज्य कहते हैं। हमने पहले कभी इसे इतनी स्पष्टता से नहीं देखा था, परंतु अब हमारी आंखें खुल गई थीं।

पहले फांटामारा का कोई भी किसान डॉन सर्कोस्टांज़ा को साथ लिए बिना छोटे-मोटे कामों के लिए भी, जैसे जन्म का प्रमाण-पत्र ही लेने, दफ्तरों में अकेले जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। यदि अकेला चला जाता तो उसी दम धक्के मारकर उसे बाहर निकाल देते थे। जनरल बाल्डीसेरा को याद है कि शुरू-शुरू में जब रोम और पेसारा के बीच रेलगाड़ी चली तो फांटामारा के लोग जब-जब टिकट ख़रीदने जाते, तो पूरे किराए के साथ डॉन सर्कोस्टांज़ा का एक विज़िटिंग कार्ड भी गंभीरतापूर्वक पेश करते थे। आखिर तो, रेलगाड़ी सरकार की थी और सरकार का किसानों पर ऐसा क्या अनुग्रह था ? कुछ भी नहीं। लेकिन जैसे-जैसे गाड़ियों में यात्रा करने का रिवाज़ बढ़ता गया और नई रेलगाड़ियां निकलती गईं, टिकट बाबू के पास डॉन सर्कोस्टांज़ा का विज़िटिंग कार्ड लेकर जाने की प्रथा भी

मिटती गई। डॉन सर्कोस्टांज़ा को जतलाए बिना ही फांटामारा के किसानों ने रोम तक की यात्रा की थी। लेकिन बाक़ी के सभी मामलों में बिना कुलीनों के संरक्षण के किसान बिना पानी की मछली-सा असहाय हो जाता है।

हम समाज की स्वाभाविक रचना ही इस तरह की समझते हैं लेकिन बूढ़े लोगों की स्मृति में और तरह के दिन भी थे। एक वह भी जमाना था कि बिशप को लेकर तीन या चार बड़े-कड़े ज़मींदार थे, जो दो-तीन सीधे-सादे नियमों के आधार पर, जिन्हें सब कोई समझता था, सब चीज़ों पर अधिकार और नियंत्रण करते थे। तब पिडामांटिसी आए। उन्होंने रोज़ एक नया क़ानून बनाया, और रोज़ एक नया अफ़सर नियुक्त किया, और अंत में यह सब इतना जटिल हो गया कि बिना वकील की सहायता के समझ पाना और काम चलाना कठिन हो गया। यों कहने को क़ानून केवल ज़मींदारों के ही नहीं, सर्वसाधारण के पक्ष में भी वैसा ही था, लेकिन व्यवहार में इससे लाभान्वित होने के लिए, इससे बचने और अपनी मनोरथपूर्ति में इसका उपयोग करने के लिए वकीलों की आवश्यकता बढ़ती गई और बढ़ती ही गई।

मेरे बचपन में शहर में केवल दो वकील थे, जो नोटरी का—दस्तावेज़ तस्दीक करने का—काम भी करते थे। इस समय चार वकील और आठ नोटरी हैं, और पंच फ़ैसलों में हस्तक्षेप करनेवाले गड़बड़िए मुख्तारों की तो गिनती ही नहीं। कमाने-खाने के लिए ये क़ानूनबाज़ ज़बर्दस्ती दीवानी-फ़ौजदारी के झगड़े कराते हैं। प्रति सप्ताह नए मुकदमे चलाते हैं और छोटे मुकदमों को खींच-तानकर बड़ा रूप देते हैं। पुराने ज़माने में जो झगड़े सरलता से निपट जाते थे, आजकल वकीलों के कारण बरसों चलते हैं, काफ़ी पैसा ख़र्च करवाते हैं और अपने पीछे भयंकर घृणा-द्वेष छोड़ जाते हैं। वकीलों के कारण ही परिवारों के आपसी संबंधों में तनाव बढ़ता जाता है। वकील हर एक बात में नाक घुसेड़ते हैं। उनके हाव-भाव, उनका स्वर-संवाद, उनका कपड़े पहनने का ढंग, उनकी अभिवादन-प्रणाली उनका खाना और पीना सब कुछ एक विशेष प्रकार का और किसानों को अभिभूत करनेवाला होता है।

एक किसान की चरम आकांक्षा किसी वकील को धर्म-पिता के रूप में पाने की होती है। बप्तिस्मा के दिनों बीसियों किसान बच्चे नए कपड़े पहने शहर के प्रधान गिरजाघर में अपनी माताओं के साथ वकीलों को घेरे रहते हैं। प्रत्येक पारिवारिक उत्सव पर, खासकर विवाह-भोज में, वकील सम्मानित अतिथि के रूप में निमंत्रित किए जाते हैं, जहां वे दुलहिन के दाएं बैठते हैं।

प्रत्येक दल दूसरे दल के साथ अपने अविरल संग्राम में कुछ उठा न रखता

था। प्रत्येक मेयर, या पॉडेस्टा, या पुलिस मैजिस्ट्रेट, या कड़ाबीनवालों के कप्तान, या सब-प्रिफेक्ट, या पब्लिक प्रासीक्यूटर, या स्थानीय डिप्टी को अपनी ओर करने का प्रयत्न करता था। प्रत्येक दल का लक्ष्य म्युनिसिपल या सार्वजनिक दान-फंड हथियाने का होता था, अनाप-शनाप कर लगाता था, सार्वजनिक काम के ठेके उड़ाता था और चुनाव के समय अनुपस्थित तथा मृतकों के नामों की भरमारवाली सूची प्रकाशित करता था।

इन कारणों से सारा-का-सारा गांव एक ही दल के अधिकार में चला जाता था। फांटामारा पर सदा डॉन सर्कोस्टांजा अधिकार किए था, डॉन सुकावासियो कोलारमेल को हथियाए था, ओर्टोना पर डॉन सिकोन, विसेना पर डॉन तारादेला और सैन बेनेदेतो पर डॉन पांपोनियो अपना-अपना कब्जा जमाए हुए थे। पुराने पुलिस मैजिस्ट्रेट, कड़ाबीनवाले और कारकून बदले जा सकते थे, परंतु नए आनेवालों को या तो दलबंदी के आगे सिर झुकाना पड़ता था, या त्यागपत्र देना पड़ता था।

प्रतिद्वंद्वी दलनायकों के झगड़ों को लेकर गांव-के-गांव एक दूसरे से लड़ते थे। पेसिना और सैन बेनेदेतो गांवों की 1913 में जो एक दूसरे से लड़ाई हुई, वह इसका एक खासा उदाहरण है। प्रतिद्वंद्वी दलनायकों के झगड़ों को लेकर दोनों गांवों के किसान एक दूसरे से जो भी हथियार हाथ में आ गया, लेकर लड़े और खूब लड़े। उन्होंने कुएं जहरीले कर दिए, अंगूर की बेलें काट डालीं, खलिहानों में आग लगा दी और अंत में गोलियां तक चलाईं। रोम से सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा। एक रेजीमेंट और कोई सौ घुड़सवार भेजे गए, तब कहीं बड़ी कठिनाई से लड़ाई बंद हुई। लड़ाई तो समाप्त हो गई थी, परंतु किसानों में दुश्मनी अभी तक बनी हुई है।

वे ही किसान दल-बंदियों से परे रहते जिन्हें लाभ-हानि से कोई सरोकार नहीं होता। यानी बिना खेत-जमीनवाले किसान या वे अपराधी जो बड़े घरों में चाकरी करते, गांवों की चौकीदारी करते या इधर कुछ दिनों से फासिस्ट हो गए हैं। ये लोग आंख मूंदकर दलबंदियों में नहीं पड़ते।

इधर कुछ वर्षों से हमारी ओर भी देश के अन्य प्रांतों की भांति राजनैतिक पार्टियों का संगठन होने लगा है। लेकिन ये नई पार्टियां पुरानी दलबंदियों के नवीन नामकरण के सिवा और कुछ नहीं है। ग़रीब किसानों पर अपना सिक्का जमाए रखने के लिए डॉन सर्कोस्टांज़ा पीपल्स पार्टी का नेता बन गया और अपने-आपको स्वाधीनता का रक्षक कहता फिरता है। हमारे आगे उसने अपने-आपको बाहरी शोषकों की लूट-खसोट के विरुद्ध मार्सिका का रक्षक घोषित किया था, लेकिन

असली शोषक से सामना होते ही उसने बड़ी खूबी से मोर्चा बदल दिया।

डॉन कार्लोमाग्ना और अन्य बड़े-बड़े ज़मींदारों को अवश्य ही बैंक से भारी हानि उठानी पड़ी थी। बाज़ार की तेजी-मंदी और भाव अब उनके नहीं, ठेकेदार के हाथ में है। सरकारी ठेके भी वह उनसे बाक़ायदा छीन लेता है। वे उन्हीं मामलों में अब कुछ कर सकते हैं, जिनकी ठेकेदार कोई परवाह नहीं करता।

बड़े जमींदार एक ओर तो किसानों से बैंक द्वारा होनेवाली अपनी क्षति-पूर्ति का प्रयत्न करते और दूसरी ओर किसानों और पुराने सरकारी नौकरों को उकसाकर उन्होंने ठेकेदार के विरुद्ध एक गुप्त लड़ाई भी छेड़ दी थी। ठेकेदार के प्रति डॉन सर्कोस्टांज़ा और उसके साथियों का बर्ताव बिलकुल जुदे प्रकार का था। ठेकेदार की अपेक्षा अधिक चालाक और ग़रीबों को धोखा देने के पुराने फन में उस्ताद वे किसानों की मनोवृत्ति को ज़्यादा अच्छी तरह समझने के कारण नए शासन और किसानों के मामलों में बीचवानी होकर अपना प्रभाव बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन संकट के प्रत्येक अवसर पर डॉन सर्कोस्टांज़ा ने ठेकेदार की ही सहायता की है।

यद्यपि पहले भी डॉन सर्कोस्टांज़ा ने अवश्य ही हमें सैकड़ों बार धोखा दिया था, लेकिन हमारे प्रति उसका व्यवहार सदा ही आदरपूर्ण और मित्रतापूर्ण रहा है। वह हमेशा हमसे हाथ मिलाता और जब पिए होता, हमें गले भी लगाता था और हम सदा उसे क्षमा कर देते थे, विशेषकर इसलिए कि हमें उसके संरक्षण की आवश्यकता रहती थी। लेकिन 'प्रत्येक को तीन-चौथाई' और 'दस लस्टर' वाली चालबाजियों ने पूरी तरह से हमारी आंखें खोल दीं।

हर कोई हमारे विरुद्ध था। एक-दूसरे के साथ प्रतियोगिता करनेवाले अनेक षड्यंत्रोंवाली पुरानी सरकार का अंत हो गया और उसका स्थान एक ही महान षड्यंत्रवाले नए शासन ने ले लिया।

तो हम किसके पास जाते ?

बाल्डीसेरा कहता फिरता था, "वह स्थिति आ गई है कि किसान भूखों मरे और मोची नंगे पांवों फिरे और कुम्हार के घर की हांड़ी फूटी ही रहे और जुलाहे के बदन पर कपड़े का तार भी देखने को न मिले। यह बैंक का जमाना है। प्रलय हो रहा है। अराजकवादियों का राज्य है।"

अपने पानी का अभाव हम सबको खलता था, परंतु उसे वापस पाने का उपाय हममें से कोई नहीं जानता था। माइकेल ज़ोम्पा और पांज़ियो पिलाटो ठेकेदार पर मुकदमा चलाने की राय के थे, परंतु मैं और बाक़ी के सब इसके विरुद्ध थे। ऐसे

मुक़दमों का अंत हम भली प्रकार जानते थे। मुक़दमा सौ वर्ष तक चलता, एक मैजिस्ट्रेट के पास से दूसरे मैजिस्ट्रेट के पास मारा-मारा फिरता, अपील-पर-अपील होती, किसानों की एक पीढ़ी की पूरी आमदनी चाट जाता और अंत में घूम-फिरकर मामला वहीं आता, जहां से शुरू हुआ था। मार्सिका का प्रत्येक गांव अमीरों और ग़रीबों के बीच ऐसे मुकदमों से अच्छी तरह परिचित था। उनका फ़ैसला ही यह होता था कि मुकदमा फिर शुरू से चलाया जाए। और यदि हम मुक़दमा भी चलाते तो वकील किसे करते ? डॉन सर्कोस्टांज़ा को ? वह 'प्रत्येक को तीन-चौथाई' और 'दस लस्टर' जैसा कोई दूसरा ही फंदा निकालता। तब डॉन सुकावासियो को ? या डॉन तारदिला को ? इनके बारे में जितना कम कहा जाए, उतना ही अच्छा।

पानी खोकर कोई भी संतुष्ट नहीं था। पूरी फसल खोकर कोई संतुष्ट नहीं था। आगामी शीत-काल में चटनी-रोटी भी नहीं मिलेगी, यह विचार सभी को भयावना लगता था।

पांज़ियो पिलाटो कहता था, "यदि चोरी के लिए न्याय नहीं है, दण्ड नहीं है, तो समझो अंत ही आ पहुंचा है।"

एक रात बूढ़े मोची ने कहा, "यदि क़ानून तोड़े जाने लगे हैं और उन्हें तोड़नेवाले सर्वप्रथम वे हैं जिनका काम उन्हें मनवाने का है तो समय आ गया है कि जनता की अदालत में जनता के क़ानून से काम लिया जाए।"

"जनता का क़ानून क्या है ?"

"ईश्वर उसी की सहायता करता है जो स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होता है।" बाल्डीसेरा अंत में बेरार्डो वायला के कटु सिद्धांतों का समर्थक हो गया था।

किसी ने उसका विरोध नहीं किया।

अपनी जेब से दियासलाइयों की पेटी निकालकर राफेल स्कार्पोन ने कहा, "यह है जनता का क़ानून।"

बेरार्डो कुछ भी नहीं बोला। अब यह पुराना बेरार्डो ही नहीं रहा था। उसका मन कहीं और था। एल्वीरा के साथ पहली रात बिताने के बाद से ही उसका मन बदल गया था। एल्वीरा बिस्तर से उठती नहीं दीखती थी। वह धीरे-धीरे मर रही थी। इतना सब होते हुए भी बेरार्डो बिना किसी लाज-शर्म और लोक-लज्जा की चिंता किए एल्वीरा के बूढ़े और लकवे से अपंग पिता के सामने ही उसके साथ रातें बिताने लगा था।

मेरी स्त्री ने जब उससे कहा कि "तुम उस छोकरी को मार डालोगे" तो

उसने केवल कंधे सिकोड़ लिए।

'दस लस्टर' वाली चालबाजी का उस पर कोई असर नहीं हुआ। पानी वापस पाने की हमारी सभी योजनाओं के प्रति वह उदासीन ही रहा।

उसने कहा, "तुम्हारे लिए बहुत ही बुरा हुआ। मेरे तो सींचने को खेत नहीं है। फिर मैं अब कुछ बच्चा नहीं हूं और मेरी अपनी समस्याएं भी हैं।"

बेरार्डो के मन में एक ही विचार जम गया था—विदेश जाना और वहां जानवर की तरह रात-दिन काम करना, दूसरों से दोगुनी मेहनत करना और साल-छः महीने बाद फांटामारा लौट आकर ज़मीन ख़रीद लेना और शादी करना। किसी दूसरे विषय पर उससे बात करना असंभव था। अब वह पहलेवाला आदमी ही नहीं रहा था।

उसकी एकमात्र इच्छा थी कि बाहर चला जाए, दस घंटे, बारह घंटे, चौदह घंटे रोज काम करे और एक हज़ार लीरा कमाकर लौटे।

शहर में काम पाने के बारे में वह अक्सर पोर्टाप्या के नायक से बातें करता रहता था।

"मैं बड़ा काम चाहता हूं। वेश्याओं और दासियों को काम दिलाना नहीं। और मान्सिग्नर कैलोगेरो का काम नहीं, और न फैसिस्ट-प्रथा का काम ही। मैं सचमुच का ईमानदारी-पूर्ण काम चाहता हूं।"

नायक ने रोम के कई पतों पर लिखा और वहां से जवाब आया कि दस लीरा रोज़ पर कड़ी मजदूरी का काम मिल सकता है।

बेरार्डो मेरे पास आया और बोला, "दस लीरा रोज़ अधिक नहीं हैं, लेकिन यह औसत मजदूरी होगी। मैं दूसरों से अधिक काम करके अधिक कमा लूंगा। रहा ख़र्चा-पानी, सो मैं अपने पेट पर पट्टे बांधकर दिन काट लूंगा।"

बेरार्डो ने मुझसे सौ लीरा उधार मांगे और मैं इस शर्त पर राजी हो गया कि वह अपने साथ मेरे लड़के को भी ले जाए। बेरार्डो ने इसे स्वीकार कर लिया। एल्वीरा ने भी उसे पचास लीरा और उधार दिए।

रवाना होने से पहले मैं अपने लड़के के बारे में उसे कुछ सूचनाएं देने गया। नित्य की तरह वह मुझे रंगाई की दुकान में एल्वीरा के पुवाल के बिछौने के पैताने बैठा मिला।

"मैं नहीं चाहता कि मेरा लड़का वहां दस घंटे रोज़ से अधिक कड़ा परिश्रम करे, और न मैं यह चाहता हूं कि वह ऐसी सराय में ठहरे जहां बदमाश औरतें आ..."

मैंने बेरार्डो से कहना शुरू ही किया था कि राफेल स्कार्पोन के भीतर घुस

आने से व्यवधान पड़ा। उसके कुछ और साथी बाहर ही रुके रहे।

घुसते ही वह बेरार्डो की ओर मुड़कर चिल्लाया, "सल्मोना में विद्रोह हो गया है।"

बेरार्डो ने पूछा, "कैसा विद्रोह ? क्या हलवाइयों ने विद्रोह कर दिया है।"

"नहीं, किसान उठ खड़े हुए हैं।" स्कार्पोन ने ऐसी आवाज़ में उत्तर दिया मानो वह हंसी-मज़ाक़ के लिए तैयार नहीं है।

"तुमसे किसने कहा ?"

"बाल्डीसेरा ने ?"

"बाल्डीसेरा को किसने कहा ?"

"यह गुप्त है।"

"तब यह झूठ है।" बेरार्डो ने निर्णय दिया।

स्कार्पोन ने बाहर जाकर बेनेर्डी सेंटो से, जो प्रतीक्षा कर रहा था, मोची को बुला लाने के लिए कहा। इस बीच हममें से कोई कुछ न बोला।

काफ़ी कुरेदने के बाद तब कहीं बाल्डीसेरा ने हमें यह बतलाया, "आज मैं चमड़ा ख़रीदने शहर गया था। वहां चौक में डॉना ज़िज़ोला से भेंट हो गई। वह गिरजाघर से निकल रही थी। तुम जानते ही हो कि छुटपन में मैं उसके बाप के घर काम करता था। इसलिए हमारी आपस में अच्छी जान-पहचान है, और जब कभी हम मिलते हैं तो ठहरकर थोड़ी देर तक अवश्य बातचीत करते हैं। डॉना ज़िज़ोला ने एक धीमी आवाज़ में मुझसे कहा। स्वयं सेंटा एन्थोनी ने ही तुम्हें मेरे पास भेजा है। ज़रा मेरे घर चलो। मुझे तुमसे एक मामले में बात करनी है।"

"चमड़ा ख़रीदने के बाद, कर्तव्य समझकर, मैं उससे मिलने गया। पर मुझे मालूम नहीं था कि उसने किसलिए बुलाया है। दरवाज़ा खोलते हुए उसने मुझसे पूछा, "क्या तुमने यह ख़ुशख़बरी सुनी है ? सल्मोना में विद्रोह हो गया है। यहां के और अड़ोस-पड़ोस के सभी कड़ाबीनवाले वहां भेज दिए गए हैं।" डॉना ज़िज़ोला के अनुसार सल्मोना में भी एक ठेकेदार है जिसने सभी को तबाह कर डाला है। विद्रोह तीन दिन पहले वहां के बाज़ार में आरंभ हुआ था और अभी तक चल रहा है। क्या इसका यह मतलब नहीं है कि हमारे लुटेरे के पाप का घड़ा भी भर चुका है ? उसका मतलब अवश्य ही हमारे ठेकेदार से था, लेकिन मैंने उत्तर नहीं दिया। उसने मेरे कान में कहा, "दो महीने तक रात-दिन मैंने सेंटा एन्थोनी की प्रतिमा के आगे मोमबत्तियां जलाईं और प्रार्थना की कि उसे कुछ हो जाए, लेकिन उसका अभी तक बाल भी बांका नहीं हुआ।" मुझे चुप देखकर वह अधिक खुलकर बोलने लगी।

"लड़ाई छेड़ने का ठीक समय यही है। कड़ाबीनवाले सभी सल्मोना में हैं। ठेकेदार के प्रति विद्वेष की लहर चारों ओर फैल रही है। हम केवल संकेत की प्रतीक्षा में हैं। फांटामारा के किसान ही हमें अवसर दे सकते हैं। तुम्हें गिरजाघर के समीप देखकर ही मैं समझ गई थी कि तुम्हें स्वयं सेंट एन्थोनी ने भेजा है।" मैंने उससे कहा कि मैं तो चमड़ा ख़रीदने शहर आया था, परंतु उसका ध्यान किन्हीं दूसरी बातों पर था। वह बार-बार यही कहती रही—सेंट एन्थोनी ने ही तुम्हें भेजा है। आज सबेरे मेरी प्रार्थना के समय सेंट ने मुझे आदेश दिया कि मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। केवल फांटामारा के किसान ही इस डाकू को दुरुस्त कर सकते हैं। और गिरजाघर से निकलते ही तुम मुझे मिले।"

डॉन कार्लो माग्ना की पत्नी ने बूढ़े मोची से यह भी कहा कि यदि फांटामारा के किसानों को पेट्रोल या हथियारों की आवश्यकता हो, तो किसी विश्वासपात्र आदमी के मार्फत ये चीज़ें भी उन्हें मिल सकती हैं।

बाल्डीसेरा के समाप्त करते ही राफेल स्कार्पोन ने बेरार्डो की ओर मुड़कर कहा, "अच्छा, तो बतलाओ कि अब क्या राय है ?"

बेरार्डो ने प्रत्युत्तर में पूछा, "तुम्हारा अपना क्या ख़याल है ?"

"यहां आने से पहले मैं और लुइज़ी देल्लाक्रास, एंटोनियो स्पावेंटा, बेनेर्डी सेंटो, गैस्पेरीन और एंटोनियो जापा आपस में मिल लिए हैं। वे बाहर खड़े हैं। उनकी ओर से मैं कह सकता हूं कि हमें सल्मोनावालों का अनुसरण करना चाहिए। हमें किसी की मदद की अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।" उसने ठेकेदार की कई इमारतें तोड़ने से आरंभ करके रात में आक्रमण करने की एक योजना भी बना ली थी।

बेरार्डो ने पूछा, "लेकिन तुम यह सब करना किसलिए चाहते हो ?"

राफेल को गुस्सा आ गया। वह बिगड़ उठा, "भले आदमी, तुम रहते किस दुनिया में हो ? ठेकेदार ने हमारे साथ जो-जो बुराइयां कीं, क्या तुम उन्हें भूल गए ? इसके सिवा हमारे आगे और रास्ता ही कौन-सा है ? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इस बार सर्दियों में खाने को खाक-पत्थर कुछ नहीं है ?"

बेरार्डो ने उसे तो कुछ नहीं कहा, परंतु बाल्डीसेरा की ओर मुड़कर वैसी ही शांत और स्वाभाविक आवाज़ में बोला, "यदि डॉना ज़िज़ोला ठेकेदार से घृणा करती है, तो उसने सेंट एन्थोनी से प्रार्थना क्यों की ? क्या उसका पति नहीं था ? और यदि सेंट एन्थोनी डॉन ज़िज़ोला पर प्रसन्न हुए हैं तो उन्होंने हमें क्यों बतलाया ? क्या उनके पास कोई देवदूत तैयार नहीं था ?"

उसी आवाज़ में स्कार्पोन की ओर मुड़कर वह कहने लगा, "ठेकेदार के

कारखाने जलाकर क्या तुम यह सोचते हो कि सर्दियों में हम उनकी राख से पेट भर सकेंगे ? यदि उसके सीमेंट, ईंट-भट्टे और चमड़ा पकाने के कारखानों के कामगार बेकार हो जाएंगे तो तुम्हीं बताओ कि हमारा क्या कुछ ज़्यादा फ़ायदा हो जाएगा ?"

तब अपनी आवाज़ बदलकर वह अपने मन की सच्ची बात कहने लगा, "देखो, मेरा इन सब बातों से तिल-भर भी संबंध नहीं। किसी तरह भी देखो, हमारी अवस्था में कोई अंतर नहीं पड़ता। प्रत्येक आदमी को अपने निजी काम की फिक्र करनी चाहिए। पहले मैंने व्यर्थ के कामों में, जिनसे मेरा कोई संबंध नहीं था, काफ़ी सिर खपाया। आज मैं तीस वर्ष का हूं और मेरे पास अपना कहने को खाली एक पुवाल का बिछौना है। मैं अब बच्चा नहीं हूं और अब मुझे भी अपना आगा-पीछा सोचना पड़ता है। इसलिए मुझे तंग मत करो।"

"हम तुम्हें तंग कहां करते हैं ? ठेकेदार ने ही हम सबको परेशान कर रखा है।" स्कार्पोन ने जवाब दिया।

बाल्डीसेरा ने कहा, "बिलकुल ठीक है। मुझसे अधिक शांत और मौनप्रिय दूसरा कोई नहीं मिलेगा। लेकिन अब न तो क़ानून है और न व्यवस्था, न सरकार है और न न्याय। अब निजी काम की फिक्र करने का समय नहीं रहा है। अब कोई भी शांतिपूर्वक नहीं रह सकता। यदि न्याय की रक्षा करनेवाले रात में आकर तुम्हारे गांव की औरतों के साथ बलात्कार करते हैं, तो क्या तुम खड़े रहकर यह कहोगे कि इनमें से एक भी मेरी बहू-बेटी नहीं है ? यदि न्याय के रक्षक तुम्हारी धरती और पानी छीन लेते हैं और तुम्हें काम करने से रोकते हैं तो क्या तुम यह कहोगे कि मेरा इनसे कोई वास्ता नहीं है ?"

बेरार्डो सिर हिलाता हुआ चुपचाप सुनता रहा। वह इन तर्कों को अच्छी तरह से जानता था। उसने स्वयं ही जनरल बाल्डीसेरा के सामने सैकड़ों बार इस तरह के तर्क रखे थे। लेकिन अब वह पहले की तरह बच्चा नहीं रहा था। अब वह अकेला फक्कड़ नहीं रहा था और इसलिए पहले की तरह ख़ुशी-ख़ुशी अपना-जीवन और अपनी आज़ादी दांव पर नहीं लगा सकता था। अब उसे अपने साथ दूसरे के बारे में भी सोचना पड़ता था। एल्वीरा के साथ पहली रात बिताने के बाद से ही उसके विचारों में ज़बर्दस्त परिवर्तन हो गया था। जबकि सारा गांव बेरार्डो के सिद्धांतों का पक्षपाती हो गया था, ऐन उसी समय उसने उनका परित्याग कर दिया।

"सुनो," वह बोला, "मैं बिलकुल साफ़ कह देना चाहता हूं। तुम्हारे पानी

और तुम्हारी ज़मीन के लिए जेल जाने की मेरी बिलकुल इच्छा नहीं है। मेरी अपनी समस्याएं ही मुझे परेशान करने को काफ़ी हैं।"

स्कार्पोन और बाल्डीसेरा उठकर चले गए।

"बेरार्डो डर गया है।" स्कार्पोन ने बाहर जाकर प्रतीक्षा में खड़े हुए युवकों से कहा। उसने यह इतनी ज़ोर से कहा कि हम सब सुन लें।

बेरार्डो फांटामारा के युवकों का आदर्श था। और वे उसके साथ ख़ुशी-ख़ुशी मौत के मुंह में भी जाने को तैयार हो जाते।

और यह स्पष्ट दीखता था कि उसके बिना कुछ भी नहीं हो सकेगा।

एल्वीरा इस बीच बिलकुल चुपचाप अपने बिस्तरे पर पड़ी रही। वह पहले से अधिक विवर्ण हो गई थी। इस झगड़े के समय उसने क्षणभर के लिए भी अपनी आंखें बेरार्डो पर से नहीं हटाई थीं। पहले तो इस संदेह से कि बेरार्डो मज़ाक़ कर रहा है, वह उसे कुतूहल से, तब विस्मय से और यह निश्चय हो जाने पर कि उसके कथन में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है, वह उसे भय और चिंता से देखने लगी थी। दूसरों की उपस्थिति में उसे उसको रोकने का साहस नहीं हुआ। लेकिन बाल्डीसेरा और स्कार्पोन के चले जाने पर वह अपने को अधिक न रोक सकी और उसे झिड़कने लगी, "यदि मेरी वजह से तुम ऐसा व्यवहार कर रहे हो, तो तुम्हें याद होना चाहिए कि आज से कुछ वर्ष पहले मैं तुम्हारी ओर इसीलिए आकर्षित हुई थी कि तुम्हारा बहस करने का ढंग दूसरों से न्यारा था।"

जब उसने पाया कि एल्वीरा भी उसके विरुद्ध है तो बेरार्डो पूरी तरह से अपने क्रोध को दबा न सका और उसके मुंह से कोई बहुत कड़ी बात निकल ही जाती, लेकिन उसी समय चुपचाप बिना बिदा तक मांगे चला गया।

जब मैं घर पहुंचा तो आधी रात बीत चुकी होगी। मैंने अपने लड़के से कहा, "कुछ भी हो, कल सबेरा होने से पहले ही तुम रवाना हो रहे हो। इसलिए लेट जाओ और नींद ले लो।"

हम सब सोने का प्रयत्न या आंखें मूंदकर सोने का बहाना करने लगे थे। लेकिन नींद किसी को भी नहीं आ रही थी। अभी हम सब जाग ही रहे थे कि कोई दो बजे एकाएक गिरजाघर के घंटे की आवाज़ सुनाई दी। घंटे का पहला और दूसरा ठोका बिलकुल स्पष्ट था, लेकिन उसके बाद वाले पहले ठोकों की प्रतिध्वनि से मालूम हुए।

मेरी पत्नी ने डरकर पूछा, "क्यों, तुमने सुना ?"

मैंने जवाब में कहा, "देवीमाता होंगी। चलो, सो जाओ।"

वह कोई ठीक जवाब नहीं था। हम तीनों सांस रोके सुनते रहे, लेकिन और कुछ नहीं सुनाई दिया।

शायद आधे घंटे बाद हमने दो या तीन ठोके और सुने, जो पहलेवालों से काफ़ी धीमे थे।

मेरी स्त्री बिलकुल ही डर गई और उसने फिर पूछा, "क्यों, तुमने सुना ?"

मैंने कहा, "आंधी होगी, चलो, सो जाएं।"

लेकिन हवा बिलकुल शांत थी और आंधी नहीं हो सकती थी। इसके सिवा, तेज़-से-तेज़ दक्षिणी आंधी ने भी कभी हमारे गिरजाघर के घंटे नहीं बजाए थे।

थोड़ी देर बाद हमने फिर एक ठोका सुना और वह इतना धीमा था कि यदि हम ध्यानपूर्वक सुनते न होते तो सुनाई नहीं पड़ता।

कुछ कहने की खातिर ही मैंने कहा, "उल्लू होगा।"

"उल्लू गिरजाघर का घंटा कैसे बजा सकता है ?"

"यदि उल्लू नहीं है तो फिर नेवला होगा।"

"गिरजाघर के मीनार में नेवला कहां से आएगा ?"

"अगर नेवला नहीं है तो फिर कोई डाकिन होगी।" मैं और जवाब ही क्या देता ?

फांटामारा में उस समय बहुत कम लोग सोए होंगे। और उन घंटियों के अकारण बज उठने से जो पड़े-पड़े जाग रहे थे, शायद हमारी ही तरह अटकलें लगाकर मन को समझा रहे होंगे। लेकिन सभी को अपनी-अपनी फ़िक्र पड़ी थी और कोई भी उठकर यह देखने नहीं गया कि गिरजाघर की मीनार में कौन है।

आगे जो कुछ हुआ, वह तुम्हें मेरा लड़का बताएगा।

नौ

दूसरे दिन सबेरे चार बजे मैं और बेरार्डो फांटामारा से शहर, रोम की गाड़ी पकड़ने निकले।

बेराडों उदास था। उसने मेरे अभिवादन तक का जवाब नहीं दिया। पर मैंने उस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मैं यात्रा के ठीक प्रारंभ में ही किसी तरह की अप्रियता नहीं चाहता था।

"क्या तुमने रात में घंटे की आवाज़ सुनी थी ?" वार्तालाप आरंभ करने के इरादे से मैंने उससे पूछा। मैं मानो हवा से बातें कर रहा था। बाढ़ माता की देहरी के पास पहुंचने से पहले मैंने फिर प्रयत्न किया।

"क्यों, क्या रात में पानी बरस रहा होगा ?" लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

वह लंबे डग मारता हुआ तेजी से चल रहा था और मुझे उसका साथ बनाए रखने के लिए भागना पड़ता था। शहर में घुसते ही हमने रेलगाड़ी की सीटी सुनी। हम उसे पकड़ने दौड़े, पर वह मालगाड़ी थी और हमारी गाड़ी आने में अभी काफ़ी देर थी।

हम कोई आध घंटे मुसाफ़िरखाने में बैठे होंगे कि फाटक पर राफेल स्कार्पोन दिखाई दिया।

बेरार्डो ने उसे नहीं देखने का बहाना किया। वह उसकी ओर पीठ फिरा दीवाल पर टंगी हुई एक सूचना पढ़ने लगा। लेकिन स्कार्पोन सीधा उसके पास आया और बोला, "त्योफिलो फांसी लगाकर मर गया है।"

बेरार्डो ने उसकी ओर देखा भी नहीं।

स्कार्पोन कहता ही गया, "जनरल बाल्डीसेरा ने गले में रस्सी बांधे उसे मीनार की सीढ़ियों पर पाया। उसका शरीर तब तक ठंडा नहीं हुआ था। वह अवश्य ही रात-भर रस्से में लटका रहा होगा।"

बेरार्डो ने अपना सिर बिना घुमाए ही कहा, "ईश्वर उसकी आत्मा को शांति दे !"

"मैं डॉन अबाक्च्यो के यहां गया था।" मानो स्कार्पोन को बेरार्डो की उपेक्षा पर विश्वास नहीं हो रहा था। "मैं डॉन अबाक्च्यो के घर से ही आया हूं। पहले तो उसने मुझे इतना जल्दी जगा देने के लिए ख़ूब गालियां दीं और तब साथ चलकर उसकी आत्मा को पाप-मुक्त करने से इनकार कर दिया। मैंने उससे पूछा, "जिसने आजीवन गिरजा की सेवा की, ऐसे गिरजाघर के रखवाले को तुम अंतिम आशीर्वाद देने से मना ही कैसे कर सकते हो ?"

"फांसी लगाकर आत्म-हत्या करनेवाला सीधा नर्क में जाता है और यदि वह गिरजाघर का रखवाला है तो साक्षात् रौरव नर्क में।" डॉन अबाक्च्यो ने जवाब दिया।

बेरार्डो अविचलित ही रहा।

उसने एक बार और कहा, "उसकी आत्मा को शांति मिले।"

स्कार्पोन बोलता ही रहा, "हम त्योफिलो को गिरजाघर के ठीक बीच में रखनेवाले हैं। यदि पादरी नहीं आता है, तो हम उसके बिना ही काम चला लेंगे। यदि वह कड़ाबीनवालों को भेजता है तो हम उन्हें रोकेंगे। हम त्योफिलो को गिरजाघर के ठीक बीच में चौबीस घंटों तक रखा रहने देंगे, जिससे ईसा, देवीमाता, सैन रोक्को, सेंट एन्थोनी, जोसेफ़, सैन बेरार्डो और दूसरे देवी-देवता उसे देख सकें। वे देख लेंगे कि हम कैसी कठिनाइयों के बीच आ फंसे हैं।"

बेरार्डो ने दुहराया, "उसकी आत्मा को शांति मिले !"

हमारी गाड़ी आ पहुंची।

एकाएक स्कार्पोन ने कहा, "मत जाओ !"

बेरार्डो ने साश्चर्य पूछा, "क्यों ?"

स्कार्पोन ने दुहराया, "मत जाओ।"

बेरार्डो गाड़ी की ओर बढ़ा। मैं उसके पीछे और मेरे पीछे व्याकुलता से सिर हिलाता हुआ स्कार्पोन आ रहा था। वह बोला, "त्योफिलो के लिए कड़ाबीनवाले आ रहे होंगे ! बेरार्डो, तुम मत जाओ।"

लेकिन हम नहीं रुके।

सारी यात्रा हमने चुपचप ही की। कोई कुछ न बोला। बेरार्डो यात्रा-भर मेरे सामने बैठा हुआ खिड़की के बाहर देखता रहा। मैं गौर से उसकी ओर देख रहा था। एकदम मेरी समझ में आ गया कि वह अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए कुछ भी उठा न रखेगा। कोई शंका उसके मार्ग में बाधक नहीं हो सकती। अपनी कामना-सिद्धि के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के वह मुझे खिड़की से बाहर भी फेंक देता। डराने को उसके जबड़े ही काफ़ी थे। मैंने मन-ही-मन सोचा कि यदि इसे भूख लगी, तो यह मुझे कच्चा ही चबा जाएगा।

रोम पहुंचकर हम पेनीटेंट थीफ (पश्चात्तापी चोर) की सराय में ठहरे। इस सराय पर कैलवेरी के तीन क्रासवाला एक चिह्न बना हुआ था। खाली नाम पर से तुम यह मत समझ बैठना कि इस सराय के नाम का संबंध ईसा की दाहिनी ओर शूली पर चढ़ाए जानेवाले उस सुप्रसिद्ध चोर से होगा जिसने मरने से पहले ईसा को पहचान लिया था और जिसे यह वरदान मिला था कि 'आज तू मेरे साथ स्वर्ग में जाएगा।' वास्तव में सराय का यह नाम उसके स्वामी के कारण था। पोर्टाप्या के नायक की भांति इसका स्वामी भी अनेक बार सज़ा भुगतकर बुढ़ापे में फासिस्टों

के हत्थे चढ़ गया था और नए शासन के विरोधियों पर प्युनिटिव हमलों में सम्मिलित हो-होकर सहकारी भंडार-गृहों और ट्रेड-यूनियनों को लूटने में निष्णात हो गया था। उसकी सेवाएं इतनी अधिक प्रशंसित हुईं कि एक राष्ट्रीय उत्सव पर स्वयं पुलिस प्रधान ने उसे 'पेनीटेंट थीफ' (पश्चात्तापी चोर) की उपाधि प्रदान की थी।

दूसरे दिन बड़े सबेरे हम वाया वेंटी सेटेंबर के एक दफ़्तर में कड़ी मज़दूरी का काम पाने की आशा से गए।

दरबान ने हमें तीसरी मंजिल पर जाने के लिए कहा। वहां पर बहुत-से आदमी खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। हम भी उनमें जा खड़े हुए। दोपहर को जब हमारी बारी आई तो हमें पता चला कि हम तीसरी नहीं, चौथी मंजिल पर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

दूसरे दिन फिर हम तीसरी मंजिल पर गए। वहां पर अकेले हम दोनों तीन घंटे तक एक बेंच पर बैठे प्रतीक्षा करते रहे। कई लोग हमारे सामने से होकर निकल गए, पर किसी ने हमारी ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। अंत में हमें पांचवीं मंजिल पर जाने के लिए कहा गया। वहां दो घंटे प्रतीक्षा करने के बाद हमें कोर्सा वितोरिया में एक पता बतलाया गया। तीसरा दिन इस तरह बीत गया।

कोर्सा वितोरिया के दफ्तर में उन्होंने हमसे हमारे परवानों के बारे में पूछा।

हमने आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया, "कैसे परवाने ?"

तब हमें एक खिड़की पर आने के लिए कहा गया जहां पर एक कारकून ने हमारे परवाने तैयार किए और उन पर बारह महीनों के बारह टिकट लगा दिए।

कारकून ने हमसे पैंतीस लीरा मांगे।

"पैसा, हमेशा पैसा," बेरार्डो भिन्नाया। चाकू की पैंतीस चोटों से भी हमें इतनी अधिक वेदना न हुई होती। हमने पैंतीस लीरा दे दिए।

वहां से हम फिर उसी पहलेवाले दफ़्तर में गए और बोले, "ये हैं हमारे परवाने।"

हमें जवाब मिला, "बहुत ठीक। कल एंप्लायमेंट एक्सचेंज जाना और वहां नए काम निकालने की सरकारी योजनाओं पर काम पाने के लिए बेकार और उम्मीदवार बनकर नाम लिखाना और दस्तख़त करना।

इस तरह चौथा दिन समाप्त हुआ।

इतना तो अवश्य कहना पड़ेगा कि बेरार्डो ने यह सब बड़ी शांति से किया। उसे सफलता की पूरी-पूरी आशा थी।

वह मुझसे बार-बार कहता था, "काम मिलने में जितनी ही अधिक कठिनाई

होगी, उसके मिल जाने पर हम उतना ही अधिक कमाएंगे।"

दोपहर के बाद जब सभी दफ़्तर बंद हो जाते, बेरार्डो मुझे शहर में घुमाने ले जाता था।

पहली बार जब हम एक इमारत के पास से, जिसके ऊपर 'बैंक' लिखा था, निकले तो बेरार्डो उत्तेजित होकर चिल्ला पड़ा—देखो, देखो !

बेरार्डो मोहित-सा कुछ क्षणों तक उसकी ओर ताकता रहा। तब उसने धीरे-से मेरे कान में कहा, "ठेकेदार को सब रुपए यहीं से मिलते हैं।"

परंतु थोड़ी दूर आगे हमें दूसरे, तब तीसरे और तब चौथे बैंक मिले। कुछ देर बाद हमने गिनना ही छोड़ दिया। यह बतलाना कठिन था कि उनमें से ठेकेदार की कौन-सी थी ? रोम के मध्य में जहां हमें सेंटपीटर्स देखने की आशा थी, सिवा बैंकों के और कुछ नहीं मिला।

हर एक नए बैंक के समीप पहुंचने पर बेरार्डो चिल्ला उठता था, "देखो ! देखो !" एक से एक बढ़कर शानदार और बड़ा था। हरएक के आस-पास आदमियों और मोटर-गाड़ियों के आवागमन का तांता बंधा था।

बेरार्डो आश्चर्य प्रकट करते थकता ही न था।

एक सांझ हमने अपनी सराय के बाहर एक बड़ा-सा झुंड जमा देखा। एक फ़ौज़ी घास-गाड़ी उलट गई थी और दीवार के सहारे बगल से पड़ी थी। बहुत-से लोग मिलकर उसे सीधा करने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन जैसी कि अक्सर शहरी झुंडों की आदत है, वे लोग बिना कुछ काम किए शोर ही अधिक मचा रहे थे।

बेरार्डो भीड़ चीरता हुआ अंदर घुसा, अपना कोट-टोपी उतारा, घुटनों के बल रेंगकर गाड़ी के नीचे गया और सारा वजन पीठ पर उठा लिया। सब लोगों के विस्मय और प्रशंसा के बीच उसने गाड़ी को धीरे-धीरे उठाकर फिर पहियों पर खड़ा कर दिया।

इस घटना से बेरार्डो का पुराना बातूनीपन फिर कुछ हद तक लौट आया। उस सांझ वह मुझसे बोला, "बैंकों की शक्ति नष्ट करने के लिए डॉना ज़िज़ोला का सेंट एन्थोनी की प्रतिमा के आगे दो मोमबत्तियां रोज जलाना क्या एक बेहूदापन नहीं है ?"

मैं समझ गया कि बेरार्डो स्कार्पोन के साथवाले वाद-विवाद को, जो यात्रा के प्रारंभ में हुआ था, फिर शुरू करना चाहता है। लेकिन मेरी मनोदशा किसी तरह का वाद-विवाद करने जैसी नहीं थी। वह बोलता ही रहा।

"जब तक तुम जवान हो, जान-जोखिम के काम ठीक हैं। आग में मूंगफलियां सेंकना तो ख़ैर बुद्धिमानी है, परंतु ठेकेदार का घर जला देने से आखिर क्या फ़ायदा ?"

वह बोलना चाहता था, इसलिए मैंने उसे टोका नहीं। वह बोलता ही रहा।

"क्या तुम नहीं देखते कि इसमें वीरता की कोई आवश्यकता नहीं ? स्कार्पोन भले ही समझ ले कि मैं डर गया हूं, लेकिन यह झूठ है। दूसरों से अधिक कमाई करने के लिए मैं अपने प्राणों की बाजी लगा दूंगा। मैं अनुभव करता हूं कि मुझमें काम करने की वह शक्ति है, जो अभी तक किसी में नहीं पाई गई होगी। वे कल हमें काम पर रख लेंगे, और जब हम आरंभ करेंगे, तो तुम चकित रह जाओगे, और दूसरे भी और खुद मुकादम भी चकित हो जाएगा।"

उसकी बकझक रोकने के इरादे से मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि त्योफिलो का अंतिम-संस्कार कैसे हुआ होगा ? टोकने से वह खीझ गया और गुस्से में भरकर बोला, "मैं तुमसे कहता हूं कि वीरता की इसमें किसी तरह की कोई आवश्यकता नहीं, और न शक्ति ही आवश्यक है। क्या ठेकेदार ने हमारे विरुद्ध शक्ति का उपयोग किया था ? नहीं। उसने वीरता और शक्ति से नहीं, अपने दिमाग़ से काम लिया था। अपनी अकल के ज़ोर पर ही उसने हमसे नाला ले लिया। उसने भी कहां लिया, फांटामारावालों ने स्वयं होकर दे दिया। पहले उन्होंने सरकार के नाम एक अर्जी पर दस्तख़त करवाए, फिर प्रत्येक को तीन चौथाई और तब दस लस्टरवाली चालाकी बीच में घुसेड़ दी। ठेकेदार से और दूसरी आशा ही क्या की जा सकती थी ? उसने हर तरह से पूरी क़ानूनी कार्रवाई की और अपने स्वार्थों का पहले ख़याल रखा।"

बेरार्डो के दृष्टिकोण में इस हद तक परिवर्तन हो गया था।

वह अपने हार्दिक विचार प्रकट करता हुआ आगे बोला, "ज़मीन की क़ीमतें अवश्य ही बहुत गिर जाएंगी। नाले के बिना ज़मीन का दाम कम हो जाएगा। उस पर खेती करने का ढंग भी बदल देना पड़ेगा।"

घर जाकर वह जो ज़मीन ख़रीदना चाहता था, वह अभी से उसके ध्यान में थी।

पांचवें दिन हम काम पाने के लिए एंप्लायमेंट एक्सचेंज गए।

हमसे पूछा गया कि तुम किस प्रांत से आए हो ?

"एक्विला से।" हमने जवाब दिया।

"तब तुम्हें एक्विला एक्सचेंज में नाम लिखाना चाहिए।"

"एक्विला एक्सचेंज कहां है ?"

कारकून ठहाका मारकर हंस पड़ा। उसने हमारा प्रश्न दूसरों को सुनाया और तब सारा दफ़्तर ठहाके लगाने लगा।

हंसी रुकने के बाद और इतनी हंसी से आंख में आए आंसू पोंछने के बाद वह कारकून हमसे बोला, "एक्विला एंप्लायमेंट एक्सचेंज एक्विला में है।"

लेकिन इटली में भ्रमण करने की हमारी ज़रा-भर भी इच्छा नहीं थी।

बेरार्डो ने ज़ोर देकर कहा, "अब तक हम बहुत-से दफ्तरों में फिर, आए हैं। हम रोम में काम की तलाश में आए हैं, घूमने-फिरने नहीं।

परंतु हमारा घूमना-फिरना बाक़ायदा जारी रहा।

माननीय डॉन एचिली पार्ज़ीज़ा नामक एब्रुजी का एक वकील पेनीटेंट थीफ की सराय में रहता था। बिना समय गंवाए हमने उससे मदद मांगी। छठे दिन उसने हमें अपने शयन-कक्ष में, जो हमारे बराबरवाला और हमारे कमरे की ही तरह अंधेरा, संकरा, गंदा और अस्त-व्यस्त था, मुलाकात के लिए बुलाया। डॉन एचिली पार्ज़ीज़ा बिस्तरे पर लेटा हुआ था। वह दमे का रोगी एक फटे-हाल बूढ़ा था। दस दिन से उसने हजामत नहीं बनवाई थी। हमसे मिलने के लिए वह एक पीला सूट, सफ़ेद कपड़े के जूते, घास की एक टोप पहने, छाती पर कांसे का तमगा लगाए, लकड़ी की कुरेदनी से दांत खोद रहा था। बिस्तरे के नीचे ऊपर तक भरा हुआ एक पीकदान रखा था।

डॉन पार्ज़ीज़ा ने यह कहकर कि 'सलाह की फीस दस लीरा हैं', वार्तालाप आरंभ किया।

मैंने हताश होकर जवाब दिया, "अच्छा, ठीक है।"

"फ़ीस पेशगी देनी पड़ती है।" उसने कहा।

हमने दस लीरा दे दिए।

"प्रत्येक के लिए दस-दस लीरा।"

हमने उसे दस लीरा और दिए।

तब वह बूढ़ा अपने बिस्तर पर से उठा और एक भी शब्द बोले बिना कमरे से बाहर चला गया। हमने उसे गलियारे में खांसते हुए सुना। खांसी धीरे-धीरे सीढ़ियां उतरते और बिल्कुल नीचे जहां पेनीटेंट थीफ बैठा था, कुछ क्षण रुकते सुनाई दी। सड़क के पार सामनेवाली सराय में बूढ़े के घुसते ही खांसी की आवाज़ आनी बिलकुल बंद हो गई।

कोई एक घंटे तक प्रतीक्षा करने के बाद खांसी की आवाज़ फिर सुनाई पड़ी।

हमने एक बार फिर उसे सड़क पार करते, क्लान्तिपूर्वक सीढ़ियां रेंगते और हमारे दरवाज़े के बाहर क्षणभर ठिठकते सुना। तब एक रोटी, लाल शराब की आधी बोतल और कवाब का एक आधा टुकड़ा लिए बूढ़ा भीतर आया। फिर बिस्तरे पर लेट जाने के बाद पाज़ींज़ा हमसे बोला, "तुम्हारा मामला बहुत ही बिगड़ा हुआ है। हमने अभी तक उसे यह भी नहीं बतलाया था कि हम किसलिए आए थे।"

बहुत देर तक चुपचाप विचार करने के बाद उसने हमसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रक़म बाक़ी बची है ?"

हमने पाई-पैसा सब कुछ निकालकर रख दिया। कुल चौदह लीरा निकले।

निराश होकर वकील ने कहा, "तुम्हारा मामला निरर्थक ही नहीं, एकदम गया-बीता है।" एक बार फिर गौर से विचार करने के बाद उसने हमसे पूछा, "क्या तुम फांटामारा से कुछ और रुपया मंगा सकते हो ?"

"क्यों नहीं ?" बेरार्डो ने जवाब दिया, यद्यपि वह खूब जानता था यह बिलकुल असंभव है।

"और एक मुर्गी का बच्चा ? बस एक या दो ? और थोड़ी-सी पनीर ? और मेरी खांसी के लिए थोड़ा-सा शहद ? क्यों ?" बूढ़े ने कहा।

"हां, हां; अवश्य।" बेरार्डो ने शीघ्रता से उत्तर दिया, यद्यपि उसने अपनी उम्र-भर शहद नहीं देखा था।

वकील ने कोई चालीसेक पीले गंदे दांत दिखाकर हंसते हुए कहा, "तुम्हारा मामला बिलकुल साफ़ है।"

तब बेरार्डो ने उसे हमारी परिस्थिति समझाई।

डॉन पाज़ींज़ा उठा, अपनी छड़ी जो किसी पुरानी छतरी का निकाला हुआ हत्था था, तलाश की और उसे हवा में हिलाते हुए बोला, "मेरे साथ चलो।"

हम उसके साथ हो लिए। पहला मुकाम डाकघर पर हुआ।

डॉन पाज़ींज़ा ने यह तार लिखा :

"दो सौ लीरा, सात पौंड पनीर, दो पौंड शहद, कुछ चूज़े भेजो।"

उसने पूछा, "तुम दोनों में से ज़्यादा मालदार कौन है ? किस पते पर भेजूं ?"

बेरार्डो ने, जिसका पिता उसके बचपन में ही मर गया था, जवाब दिया, "मेरे पिता विन्सेंज़ो वॉयला के पते पर।"

डॉन पाज़ींज़ा तार देने ही वाला था कि बेरार्डो ने उसका कंधा थपथपाकर पूछा, "क्यों साहब, आपको शफ़तालू पसंद नहीं हैं क्या ?"

"खूब पसंद हैं। वे खांसी में बहुत मुफीद होते हैं।"

इसलिए तार में सात पौंड शफ़तालू और जोड़े गए। वकील ने तार की नकल कर ली। तब हमसे बोला, "तार का महसूल चुकाकर साथ चलो।"

तार का महसूल चुकाकर हम उसके साथ हो लिए। दूसरा मुकाम फासिस्ट एंप्लायमेंट एक्सचेंज पर हुआ, जहां से हम पहले दिन बैरंग लौटा दिए गए थे। डॉन पार्ज़ीज़ा हमें गलियारे में खड़ा छोड़कर भीतर चला गया। एक खिड़की की राह वह हमें अंदर एक अफ़सर से बोलता और ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाता हुआ दिखाई दिया। उसने अफ़सर को वह तार दिखलाया जो फांटामारा भेजा गया था और उसमें अंगुली से महत्त्व की बातें दिखलाईं। अफ़सर को तार में कुछ आपत्ति दिखाई दी, क्योंकि हमारा वकील एकदम ढीला पड़ गया था। भागे-भागे आकर उसने हमसे पूछा, "फांटामारा का पनीर खाने का होता है या पकाने का ?"

"ताजा ख़ाने के और बासी हो जाने पर पकाने के काम आता है।" बेरार्डो के इस उत्तर से वकील को पूर्ण संतोष हो गया और उसने जाकर अफ़सर के सामने यही बात दुहराई।

अब कोई बाधा नहीं थी, क्योंकि डान पार्ज़ीज़ा ने बाहर आकर हमसे कहा, "सिलसिला लग गया है। एंप्लायमेंट एक्सचेंज को आवश्यक कागज़-पत्र, जन्म का प्रमाण-पत्र, पुलिस-रेकार्ड और तुम्हारे अच्छे चाल-चलन के प्रमाण-पत्र चाहिए। उनके आते ही तुम्हारा नाम बेकारों के रजिस्टर में दर्ज कर लिया जाएगा। उसके बाद काम मिलेगा। एंप्लायमेंट एक्सचेंजवाले स्वयं तुम्हें बुला भेजेंगे।"

रोम में आने के सातवें दिन हमारी जेब में केवल चार लीरा बचे थे।

दो रोटियां ख़रीदने के बाद हमारे पास कानी कौड़ी भी नहीं बची।

बेरार्डो अपनी हिम्मत बनाए रखने के लिए मुझसे कहता रहता था, "एंप्लायमेंट एक्सचेंज से समाचार आने में अब अधिक देर नहीं हो सकती।"

हम अब सराय से भी बाहर नहीं निकलते थे कि कहीं हमारी अनुपस्थिति में एंप्लायमेंट एक्सचेंज का बुलावा न आ जाए। और फिर भूख के मारे हममें घूमने-फिरने की शक्ति भी नहीं रही थी।

ज़रा-सा खटका होते ही हम दरवाज़े की ओर झपटते थे।

डाकिए को देखते ही हम झपटकर नीचे भागते, जहां पेनीटेंट थीफ़ बैठता था।

माननीय पार्ज़ीज़ा भी हमारी तरह ही उत्सुक था। अंतर केवल इतना था कि हम जहां काम की प्रतीक्षा में उत्सुक थे, वह बेरार्डो के पिता की ओर से आनेवाले मनीआर्डर और सामान की प्रतीक्षा में। दिन-भर हम तीनों बिस्तरे में पड़े रहते थे

और ज़रा-सी आवाज़ होते ही झपटकर नीचे भागते थे। वापस ऊपर आते समय एक-दूसरे को कोसना प्रतिदिन बढ़ता जाता था।

डॉन पाज़ींज़ा बेरार्डो से कहता, "तुम्हारा बाप बहुत ही हृदयहीन है। तुम्हें केवल दो सौ लीरा भेजने में ही उसने इतना समय कैसे लगा दिया ?"

बेरार्डो जवाब देता, "कुछ काम है भी या नहीं ? यदि काम है, तो हमें बुलाते क्यों नहीं ? यदि काम नहीं है, तो फिर इतनी रस्में किसलिए ?"

"सामान के मामले में तो देर होना स्वाभाविक है और यह समझ में भी आता है। पार्सल, और खासकर जब उनमें बिगड़ सकनेवाला माल हो, तो हमेशा देर में पहुंचते हैं। लेकिन मनीआर्डर तो उसी दिन आ जाना चाहिए था। बेरार्डो तुम्हारा बाप महास्वार्थी सूअर है।"

बेरार्डो अपनी हांकता, "जन्म-पत्री का काम से भला क्या संबंध ? यदि एक आदमी काम तलाश करता है तो बिलकुल साफ़ है कि वह पैदा हुआ है। पैदा होने से पहले, नहीं तो भला काम ढूंढ़ेगा ही कौन ?"

तीन दिन तक उपवास और प्रतीक्षा करने के बाद मैंने और बेरार्डो ने डाकिए के आने पर नीचे भागना भी छोड़ दिया।

हम सबेरे से सांझ तक बिस्तरे में पड़े रहते थे और खाली स्नान-गृह में जाकर नल से पानी पीने के लिए उठते थे।

डॉन पाज़ींज़ा हमसे कहीं अधिक धैर्यवान् और आशावादी था। दिन में तीन बार प्रत्येक डाक पर हम उसकी खांसी बिस्तरे से उठते, कमरा छोड़ते, धीरे-धीरे उतरकर नीचे जाते और थोड़ी देर बाद थककर ऊपर चढ़ते और दरवाज़े के छेद के आगे आकर रुकते हुए सुनते थे। तब वह बूढ़ा फांटामारा को गालियां देता सुनाई पड़ता था। कांपती हुई आवाज़ में वह कहता, "बेरार्डो वॉयला, तुम्हारा बाप सूअर है। तुम्हारा बाप मेरे विनाश का कारण है। तुम्हारे बाप के कारण मुझे मरना पड़ेगा। तुम्हारे बाप की वजह से ही मुझे खाना खाए आज तीन दिन हो गए। सब उसी का दोष है।"

बेरार्डो जवाब नहीं देता था। उसने वही पहलेवाली चुप्पी साध ली थी। वह एक भी शब्द बोले बिना घंटों छत की ओर ताका करता था।

मैं कहता, "हम क्या करेंगे ? बिना कुछ खाए तो हम अधिक दिन तक रह नहीं सकते।"

लेकिन बेरार्डो जवाब नहीं देता था।

उपवास के चौथे दिन हमारे लिए एक अप्रत्याशित रोमांचकारी घटना हुई।

कोई पांच बजे का समय होगा। हमने डॉन पार्ज़ीज़ा और पेनीटेंट थीफ़ को ख़ुशी से चिल्लाते हुए सीढ़ियां चढ़ते सुना।

वकील गा रहा था :

कहां हैं विजय के स्वर्णिम पंख ?
रोम का दास वह है नियति से...

वे हमारे कमरे के द्वार को बिना खटखटाए ही धक्का देकर अंदर चले आए। पेनीटेंट थीफ़ बेरार्डो के नाम का एक तार उछाल रहा था, और डॉन पार्ज़ीज़ा मदिरा की दो बोतलें लिए था।

वकील ने शोर मचाया, "बेरार्डो वॉयला, तुम्हारा बाप बहुत अच्छा आदमी है। मनीआर्डर आ गया है !"

बेरार्डो ख़ुशी से बावला होकर विस्मयपूर्वक बोला, "सचमुच ! उसे कदापि यह विश्वास नहीं हुआ कि मनीआर्डर उसके बाप ने, जिसे मरे बीस वर्ष हुए, भेजा है। लेकिन चार दिन तक उपवास करने के बाद तुम किसी भी बात पर विश्वास करने को तैयार हो जाओगे।"

उधर वकील मदिरा की बोतल खोलने में लगा था, इधर बेरार्डो ने तार लिया, खोला, पढ़ा, हमारी ओर देखा और उसे मोड़कर चुपचाप जेब में रख लिया।

मैंने पूछा, "क्या है ?"

बेरार्डो ने जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा एकदम बदल गया। आंखें लाल हो आईं। फांटामारा से रवाना होने के बाद मेरी जान में प्रथम बार ही भावावेग का उस पर इतना स्पष्ट असर हुआ था।

जहां तक हो सकता था, मित्रतापूर्ण ढंग से मैंने एक बार फिर पूछा, "क्यों, क्या है ?"

बेरार्डो एक भी शब्द नहीं बोला और बिस्तरे पर लंबा हो गया। डॉन पार्ज़ीज़ा और पेनीटेंट थीफ़ हैरान होकर वापस चले गए। लेकिन वे अपने साथ मदिरा की दोनों बोतलें ले जाना नहीं भूले थे। मैं बेरार्डो का विश्वास प्राप्त करने उसी बिस्तर पर उसकी बगल में लेट गया और बड़ी देर तक चुपचाप पड़ा रहा। तब मैंने उससे एक बार फिर पूछा, "क्यों, क्या है ? क्या हो गया है ? क्या कोई मर गया है ?"

लेकिन उसने बिलकुल ही जवाब नहीं दिया। मैं समझ गया कि फांटामारा में कोई-न-कोई मर गया है।

उसी सांझ आठ बजे हमारे बगलवाले कमरे में—मैं तुमसे कह चुका हूं कि

उसमें डॉन पाज़ींज़ा रहता था—एकाएक कुछ गोल-माल हुआ। साथ ही हमारे कमरे का दरवाज़ा खुला और डॉन पाज़ींज़ा दीख पड़ा। वह भीतर नहीं आया, वहीं खड़े-खड़े चिल्लाया, "फासिस्ट एंप्लायमेंट एक्सचेंज के प्रधान अधिकारी अभी मुझसे मिलने आए थे। तुम्हारे कागज़ात आ गए हैं। पॉडेस्टा के दस्तख़तोंवाले तुम्हारे प्रमाण पत्रों में लिखा है, "राष्ट्रीय दृष्टिकोण से चाल-चलन बिलकुल ही बुरा है।" ऐसे प्रमाण-पत्र की सिफारिश से तुम्हें काम नहीं मिल सकता। ऐसा प्रमाणपत्र होने से तुम्हें कभी भी काम नहीं मिल सकता। इसके सिवा पुलिस को सूचना दे दी गई है।"

वह ज़ोर से किवाड़ ठेलकर चला गया।

पांच मिनट बाद दरवाज़ा फिर खुला। इस बार पेनीटेंट थीफ था। वह बोला, "तुम्हारे कमरे में दूसरा किराएदार आनेवाला है। बस, आधे घंटे में चले जाओ।"

जब हमने सराय छोड़ी तो अंधेरा हो गया था।

"अब हम क्या करेंगे ?" मैंने बेरार्डो से पूछा। लेकिन वह भी क्या जवाब देता ?

भूख से मेरे पांव बहुत कमजोर हो गए थे और सिर दर्द करने लगा था। प्रतिक्षण मुझे लगता था कि मैं बेहोश हो जाऊंगा। सड़क पर आने-जानेवाले हमें घूरते थे। हमें देखकर इस तरह कतराकर एक ओर हट जाते थे मानो हमसे डरते हों। बेरार्डो का दिखावा भी सचमुच ही डरावना था।

अनजाने ही हम स्टेशन के समीप तक निकल आए। वहां पर बहुत-सी पुलिस और सैनिक और कड़ाबीनवाले थे जो चौक में प्रत्येक आने-जानेवाले को रोककर पूछ-ताछ कर रहे थे। वे मोटरें रोककर उनकी भी तलाशी ले रहे थे। विस्मयपूर्वक हमारी ओर देखने के बाद एक युवक हमारे सामने आ खड़ा हुआ।

"नमस्ते।" उसने बेरार्डो से कहा।

बेरार्डो ने सशंकित होकर उसकी ओर देखा और कोई उत्तर नहीं दिया।

युवक बोलने लगा, "मैं तुम्हारे ही बारे में सोच रहा था। यदि तुम मुझे यहां नहीं मिल जाते तो कल तुम्हारे लिए मैं फांटामारा जाने ही वाला था।"

बेरार्डो ने कहा, "मेरे पास एक कानी-कौड़ी भी नहीं है। यदि तुम धोखा देना चाहते हो तो किसी और को तलाशो।"

युवक हंसने लगा। वह आधा विद्यार्थी और आधा कामगर लगता था। वह लंबा और दुबला था। उसके कपड़े साफ-सुथरे पर तड़क-भड़कवाले नहीं थे। उसके बोल-चाल और दिखावे में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी।

उसने बेरार्डो से पूछा, "पिछली बार जब तुम अवेज़ानो गए थे तो उसकी तुम्हें याद है न ? लाल बालोंवाला एक पुलिस जासूस, जिसकी दाढ़ी पर घाव का निशान था, तुम्हें और फांटामारा के दूसरे लोगों को एक आमोद-गृह में ले गया था ? याद है न ? जिसने तुम्हें उससे सावधान किया था, उसे भूल गए ?"

बेरार्डो ने उसे ख़ूब अच्छी तरह देखा और तब पहचान लिया।

जब मैंने देखा कि बेरार्डो अवसर निकल जाने दे रहा है, तो मैंने उस युवक से कहा, "हमें भोजन करने के लिए कुछ पैसे दो।"

अवेज़ानोवाला वह युवक हमें एक कॉफी-घर में ले गया और सूअर का गोश्त तथा अंडे लाने को कहा।

बेरार्डो ने शंकित होकर पूछा, "क्या यह हमारे लिए है ? दाम कौन देगा ? हमारे पास तो कुछ भी नहीं है।"

उसे विश्वास दिलाने के लिए युवक ने गल्ले पर जाकर पेशगी दाम चुकाए। इस बीच बेरार्डो ने मेरी ओर देखा, मानो कहना चाहता हो, "यह आदमी अवश्य ही पागल होना चाहिए।"

कुछ खा चुकने के बाद बेरार्डो ने उस युवक से पूछा, "ये सैनिक और कड़ाबीनवाले सब क्या करने में लगे हुए हैं ?"

"भेदी आदमी को पकड़ने की आए दिन की धूम-धमाल है।" युवक ने उत्तर दिया, परंतु हम कुछ समझ नहीं सके।

उस युवक ने हमें समझाया, "कुछ समय से भेदी आदमी के नाम से पुकारे जानेवाले एक अज्ञात व्यक्ति ने सार्वजनिक शांति और सुरक्षा ख़तरे में डाल रखी है। विशेष न्यायालय के सामने प्रत्येक मुकदमे में भेदी आदमी का उल्लेख हुआ है। वह गुप्त रूप से पैम्फ़लेट—पर्चे—छापता और बांटता है। ग़ैरक़ानूनी पर्चे और पत्रिकाएं रखने के अपराध में जो-जो भी पकड़े गए उन सभी ने स्वीकार किया है कि वे उन्हें भेदी आदमी से मिले थे। शुरू-शुरू में भेदी आदमी थोड़े-से बड़े कारखानों में ही काम करते थे, तब शहर के उपनगरों और बारकों में। तब एक बार वह विश्वविद्यालय में भी दीख पड़ा था। एक सबेरे एक ही साथ वह कई विभिन्न स्थानों पर देखा गया था और उसी दिन उसके सीमा-प्रांत पर भी देखे जाने की रिपोर्ट है। इटली के दक्ष जासूस उसके पीछे छोड़े गए हैं, लेकिन वह अभी तक उनके हाथ नहीं आया। वे छः हज़ार गिरफ्तारियां कर चुके हैं और बार-बार सरकार ने विश्वास किया कि भेदी आदमी पकड़ लिया गया है। लेकिन थोड़े-से व्यवधान के बाद गुप्त छापाखाना फिर से अपना काम शुरू कर देता है और विशेष

न्यायालय के कागज़ों में पुनः भेदी आदमी दिखाई देने लगता है। इधर कुछ समय से ऐसा मालूम पड़ता है कि वह एब्रुजी में ही है।"

"एब्रुजी में ?" बेरार्डो ने उत्सुकता से पूछा।

"सल्मोना, प्रेज़ा, अवेज़ानो और दूसरे-दूसरे स्थानों में भी। जहां कहीं वह दिखाई पड़ता है वहां के किसान विद्रोह करते हैं, और जहां कहीं किसान विद्रोह करते हैं वहां वह अवश्य पहुंचता है।"

"लेकिन वह है कौन ? क्या वह शैतान तो नहीं है ?" बेरार्डो ने पूछा।

अवेज़ानोवाले युवक ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "शैतान भी हो सकता है।"

"अगर कोई उसे केवल फांटामारा का रास्ता-भर बतला दे।" बेरार्डो बोला।

उस आदमी ने शांतिपूर्वक जवाब दिया, "वह पहले से ही जानता है।"

उस क्षण एक पुलिस सार्जेंट और सैनिकों के एक दस्ते ने कॉफी-घर में प्रवेश किया और हमारे पास आए।

उन्होंने परवाने और परिचय-पत्र मांगे।

सैनिक कॉफी-घर की तलाशी लेने लगे और पुलिस सार्जेंट एंप्लायमेंट एक्सचेंस से मिले हमारे कागज़-पत्र और हमारे साथवाले युवक के कागज़ात और परिचय-पत्र और दूसरे बहुत से कागज़-पत्र देखने लगा।

हमारे कागज़ात बराबर थे और पुलिस सार्जेंट जा ही रहा था कि सैनिक कपड़े में लपेटी हुई एक पार्सल लिए दौड़े आए, जो उन्हें 'हैट स्टैंड' के नीचे पड़ी मिली थी ! पार्सल के अंदर की चीज़ों ने सिपाही और सैनिकों को क्रोधोन्मत्त कर दिया। वे चिल्लाते हुए हमारी ओर झपटे, "यह पार्सल किसकी है ? इसे वहां किसने पटका ?"

हमारी सफाई की प्रतीक्षा किए बिना ही वे लोग हमें गिरफ़्तार कर पुलिस थाने ले गए।

बेरार्डो यह सोचकर कि पार्सल में चोरी की चीज़ें थीं और वे हमें चोर समझकर थाने ले जा रहे थे, रास्ते-भर चिल्लाता गया, "हम चोर नहीं हैं। तुम्हें शर्म आनी चाहिए ! चोर तुम हो ! हम लुटे हुए ग़रीब लोग हैं, चोर नहीं। फासिस्ट एंप्लायमेंट एक्सचेंज वाले चोर हैं, उन्होंने हमारे पैंतीस लीरा चुरा लिए। डॉन पाज़ींज़ा चोर है—उसने हमारे बीस लीरा ले लिए। हम चोर नहीं हैं। ठेकेदार चोर है !"

कोतवाली पर शहर भर में हुई गिरफ्तारियों का तांता लग रहा था।

अवेज़ानेवाले युवक ने बेरार्डो को कान में समझाया—भेदी आदमी की तलाश अभी तक चल रही है। तब बेरार्डो की समझ में आ गया कि हम चोरी के लिए

नहीं पकड़े गए हैं और वह चुप हो गया।

कुछ रस्मों के बाद हम एक कोठरी में जिसमें पहले से ही दो और कैदी थे बंद कर दिए गए। मैंने और बेरार्डो ने एक दूसरे को संतोष की दृष्टि से देखा। कम-से-कम हमारे सिर पर एक छत तो थी और दूसरे दिन खाने को भी कुछ-न-कुछ तो मिलने ही वाला था। बाक़ी भविष्य के बारे में सोचने को काफ़ी समय पड़ा था।

कोठरी के आधे हिस्से में ज़मीन से थोड़ा ऊंचा कंक्रीट का एक चबूतरा बना हुआ था, जो बिस्तरे के काम आता था। कोने में एक छेद भी था, जिसका उपयोग बिलकुल स्पष्ट था।

दोनों क़ैदी जो पहले से ही कोठरी में थे, अपने घड़ी किए हुए कोटों का सिरहाने लगाए दूसरे कोने में हाथ-पांव फैलाए पड़े थे। मैंने तत्काल ही उनका अनुसरण किया और अपना कोट सिरहाने लगा कर कंक्रीट पर लेट गया। अवेज़ानोवाला युवक और बेरार्डो कोठरी में चहलक़दमी करते हुए उत्सुकतापूर्वक बातें करने लगे। अवेज़ानोवाला युवक उन दो आदमियों की उपस्थिति के कारण फुसफुसाहट में बोल रहा था, लेकिन काफ़ी उत्तेजित होने के कारण बेरार्डो उतना धीमे नहीं बोल सक रहा था। इसलिए मैं जो कुछ बेरार्डो बोलता था वही सुन सका।

"यह भेदी आदमी वाला क़िस्सा मेरी समझ में नहीं आता। क्या भेदी आदमी शहर का रहनेवाला है या किसान ? यदि वह शहराती होकर एब्रुज़ी जाता है तो अवश्य ही उसका कोई दूसरा मतलब होना चाहिए..."

"लेकिन शहरवाले ख़ुशहाल होते हैं। क्योंकि वे किसानों का शोषण करते हैं। हां, मैं जानता हूं कि शहर में भी ग़रीब लोग हैं। पेपिनो गोरियानो को बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं और पार्ज़ीज़ा वकील भी कुछ मखमली गद्दों पर वहीं लोट रहा है। लेकिन वास्तव में ये एब्रुज़ी से आकर शहर में बसनेवाले लोग हैं।"

कई बार बेरार्डो भी जब फुसफुसाने का प्रयत्न करता तो मेरा सुनने का सिलसिला टूट जाता था, पर उनके हाव-भाव से मैं समझ जाता कि उसका और अवेज़ानोवाले युवक का मतैक्य नहीं हो रहा है। बेरार्डो यद्यपि कई बार अपनी आवाज़ निस्संदेह धीमी कर देता था, परंतु कभी-कभी उत्तेजित होकर इतने ज़ोर से बोलने लगता था कि हमारी कोठरी में के दोनों क़ैदी ही नहीं, पास-पड़ोस की कोठरियों में बंद दूसरे लोग भी शायद सुन लेते होंगे—

"तुम कहते हो कि कॉफ़ी-घर में मिले पार्सल के अंदर समाचार-पत्र थे ?

क्या छपे हुए पर्चे ? काग़ज़ों का ऐसा पार्सल है ही किस योग्य ?'

युवक भला ही नहीं, धैर्यवान भी था। वह बेरार्डो को धीरे-धीरे बोलने के लिए कहता, और बेरार्डो स्वीकार भी कर लेता, परंतु शीघ्र ही वह फिर ज़ोर-ज़ोर से बोलने लग जाता था, "लेकिन शहरवाले संपन्न हैं, और किसान नहीं। शहरवाले अच्छा खाते-पीते हैं और उन्हें कर भी नहीं देने पड़ते। शहरवाले बिना कुछ काम किए ही काफ़ी पैसा कमा लेते हैं। लोगों को पीटने के लिए बीस लीरा रोज़ और पीटे जाने का कोई डर नहीं। वे हमसे कपड़ों, जूतों और टोपियों के लिए कितना दाम वसूल करते हैं, ज़रा इसी ओर देखो...। हम किसान कीड़ों की तरह हैं। सब हमारा शिकार करते हैं। सब हमें पांवों-तले रौंदते हैं। सब हमें धोखा देते हैं। डॉन सर्कोस्टांज़ा तक हमारे विरुद्ध हो गया है, डॉन सर्कोस्टांज़ा तक।"

अवेज़ानोवाला युवक मन लगाकर सुन रहा था।

वह बड़बड़ाया, "यह तो बहुत ही बुरा है। क्या सचमुच ही ऐसा है ? क्या सभी किसान तुम्हारी ही तरह सोचते हैं ?"

थोड़ी देर बाद बेरार्डो फिर कहने लगा, "मेरी समझ में नहीं आता कि शहरवाले अकारण ही पर्चे छापकर किसानों को क्यों देने लगे ? न मेरी यह समझ में आता है कि भेदी आदमी अपना काम छोड़कर दूसरों की समस्याओं में क्यों सिर खपाता है ? या वह काग़ज़ी तो नहीं है और अपना काग़ज़ बेचने के लिए तो अख़बार नहीं न छापता है ?"

"और ये जेल जानेवाले जिनके बारे में तुम मुझे कह रहे हो, क्या सब-के-सब पागल तो नहीं हैं ? यदि नहीं, तो उनका उद्देश्य क्या है ? और वे जिनके बारे में तुमने कहा कि सरकार द्वारा गोलियों से उड़ा दिए गए—उनका उद्देश्य क्या था ? क्या गोलियां खाना ही उनका उद्देश्य और उनका काम था ?"

अवेज़ानोवाला युवक समझ चुका था कि बेरार्डो ये सब शंकाएं स्वयं अपने आपसे कर रहा है। अकेले अपने बारे में सोचने और काम पाने और ज़मीन ख़रीदने की बेरार्डो की सभी आशाएं लुप्त हो गईं थीं। सब मार्ग अवरुद्ध थे। पॉडेस्टा ने हमें राष्ट्रीय दृष्टिकोण से बहुत बुरा करार दिया था और इसलिए सब रास्ते रुक गए थे। यही कारण होना चाहिए कि बेरार्डो फिर अपने पुराने तरीक़े से और इस बार अधिक दृढ़ता से सोचने लगा था। अवेज़ानोवाले युवक के सामने वह जो शंकाएं रख रहा था, वे उसकी अंतिम शंकाएं थीं।

धीरे-धीरे दूसरे देशों और रूस के बारे में बातें होने लगीं और मैंने बेरार्डो को कहते सुना, "रूस ? मुझे सच-सच बतलाओ। क्या सचमुच रूस नाम की ऐसी

कोई जगह भी है जिसके बारे में लोग-बाग इतनी सारी बातें करते हैं ? रूस के बारे में बातें तो सभी करते हैं, लेकिन अभी तक वहां गया कोई नहीं। किसान अमेरिका, अफ्रीका, फ्रांस सर्वत्र जाते हैं, लेकिन रूस अभी तक कोई नहीं गया।"

बेरार्डो कुछ मामलों में बिलकुल अडिग था—जैसे, अब आज़ादी की बात छिड़ी तो उसने पूछा, "बोलने की आज़ादी ? हम वकील नहीं हैं। छापने (प्रेस) की आज़ादी ? हम मुद्रक नहीं हैं। तुम काम मिलने की आज़ादी के बारे में, सबको खेत मिलने की आज़ादी के बारे में, बात क्यों नहीं करते ?"

इस समय मुझे अनजाने ही नींद आ गई होगी। मैं कुछ घंटों तक सोता रहा हूंगा कि बेरार्डो ने मुझे जगाया। वह मेरे पैताने युवक की बगल में बैठा हुआ था।

उन्हें तब तक जागते और बातें करते हुए देखकर मुझे आश्चर्य हुआ।

बेरार्डो ने मुझसे कहा, "क्षमा करना, लेकिन मैं तुम्हें अधिक समय तक जागता नहीं रखूंगा। क्या तुम्हें प्रिंस टोर्लोनिया के बारे में सच्ची कहानी मालूम है ?"

मैंने जवाब दिया, "मेरा मन नहीं है। राजकुमारों के बारे में सब सच्ची कहानियां मेरे लिए एक-सी हैं। मुझे सोने दो।"

"मुझे तुम्हें कह देना चाहिए कि तथाकथित राजकुमार टोर्लोनिया न तो एक राजकुमार ही है और न उसका नाम टोर्लोनिया है।"

"तुम सपना तो नहीं देख रहे हो ?"

"मैं तुम्हें बतला देना चाहता हूं कि जिस कथित राजकुमार टोर्लोनिया को किसान भूस्वामी समझकर पूजते हैं, वह एक फ्रांसीसी रेजीमेंट के साथ सौ वर्ष पहले इटली आया था। वह राजकुमार तो नहीं ही था, परंतु उसके नाम के आगे-पीछे डॉन पार्ज़ीज़ा की तरह कोई सींग-पूंछ तक नहीं थी। वह शराब और कवाब बेचनेवाला था। उसका नाम टोर्लोनिया नहीं, टोर्लोन था। वह एक फ्रांसीसी सटोरिया था। उसने लड़ाई का सट्टा किया, उसने नमक का सट्टा किया, उसने पादरियों और पिडमांटेसी से रुपए कमाए। उसने दाएं-बाएं सब तरफ लूट मचाई और ड्यूक बना दिया गया और तब राजकुमार..."

"तुम सपना तो नहीं देख रहे हो ?" मैंने बेरार्डो से पूछा लेकिन बेरार्डो मेरी ओर से मुड़कर अवेज़ानोवाले युवक से बातें करने लग गया था। अब दोनों में कोई विरोध नहीं था। बेरार्डो के बोलने और हाव-भाव पर से प्रकट होता था कि उसकी सभी शंकाओं का समाधान हो गया है। वह फिर वही पुराना बेरार्डो हो गया था।

टोर्लोनिया के बारे में उसकी कही बातें मुझे परी की कहानी जैसी लगीं परंतु पहलेवाला बेरार्डो परी की ऐसी कहानियों का बहुत शौकीन था।

वे बातें कर ही रहे थे कि मैं फिर ऊंघ गया। जब फिर मेरी आंख खुली तो सबेरा हो गया था। बेरार्डो बंद पिंजड़े में शेर की तरह कोठरी में चक्कर लगा रहा था। अवेज़ानोवाला युवक मेरे बग़ल में लेटा हुआ था, लेकिन उसे नींद नहीं आई थी। वह बिलकुल मेरे पास ही, मानो मेरे जागने की प्रतीक्षा करता हुआ लेटा था।

उसने मेरे कान में कहा, "तुम्हें बेरार्डो पर विश्वास है ?"

"हां !" मैंने उसे जवाब दिया।

युवक बोला, "प्रत्येक किसान को उस पर विश्वास करना चाहिए। फांटामारा में तुम प्रत्येक को उस पर विश्वास करने के लिए कहना। वह एक असाधारण आदमी है। यह उसका सौभाग्य ही है कि उसे उन सब कठिनाइयों में से होकर गुजरना पड़ा। मुझे विश्वास है कि सारी इटली में उसके जैसा एक भी किसान नहीं है। फांटामारा में तुम लोगों से यह कहना। तुम बेरार्डो का कहना मानना। आज या कल में तुम दोनों अवश्य ही छोड़कर घर भेज दिए जाओगे। मेरा भाग्य जुदा हो सकता है। यदि मैं तुम्हें अभी न बतला सकूं, तो बुरा मत मानना। बेरार्डो फांटामारा में तुमसे सब कह देगा। पहला काम है बेरार्डो और राफेल स्कार्पोन में समझौता करवाना। बाक़ी बेरार्डो जानता है।"

आठ बजे पुलिसवाले हमारे लिए एक टीन कॉफी लाए। बेरार्डो ने अपनी चहल-कदमी रोककर वार्डर से कहा, "मैं इसी समय पुलिस अधिकारी से बात करना चाहता हूं।"

"तुम्हारी बारी आने तक प्रतीक्षा करो।" वह जवाब देकर चला गया।

अवेज़ानोवाले युवक ने भी ये शब्द सुने और बेरार्डो की ओर डरी हुई आंखों से देखने लगा। उसे उससे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई, परंतु विश्वासघात का डर उसकी आंखों में बना हुआ था।

नौ बजे हम तीनों पुलिस अधिकारी के सामने पेश किए गए।

बेरार्डो ने आगे बढ़कर कहा, "साहब, मैं सब कुछ बता देने को तैयार हूं।"

पुलिस अधिकारी ने कहा, "शुरू करो।"

"स्टेशन के पासवाले कॉफी-घर में मिली वर्जित पर्चों का पार्सल मेरा था। वे पर्चे मैंने किसानों में बंटवाने के लिए छपवाए थे। भेदी आदमी मैं हूं।"

दस

तो भेदी आदमी आखिर पकड़ ही लिया गया।

उसकी गिरफ़्तारी के समाचार सुनकर पत्रकारों, फासिस्ट प्रधानों और ऊंचे सरकारी अफ़सरों की भीड़ थाने पर, जहां वह बंद था, इकट्ठी होने लगी। तो भेदी आदमी किसान था।

पुलिस उसे शहर में ढूंढ़ रही थी, पर शहर का एक भी निवासी क्या उनसे छिपा था ? एक-एक के सही-सिक्कोंवाली सूची, निगरानी और जानकारी उनके पास थी। खासकर सरकार के विरोधी की तो पूरी तरह से सही-सिक्कों वाली सूची, निगरानी और जानकारी थी। पर किसान ? किसान को कौन जानता है ? किसानों को जाननेवाली सरकार इटली में भी है ? और भला वे एक-एक किसान के नाम की सही-सिक्कोंवाली सूची, निगरानी और जानकारी रख ही कैसे सकते थे ?

तो भेदी आदमी एक किसान निकला। जब तक बेरार्डो कोठरी से बाहर इस या उस अफ़सर के सामने ले जाने को निकाला जाता था, जो उससे कुछ पूछना या उसे देखना-मात्र चाहता था। सतर्कता के लिए बेरार्डो, मैं और अवेज़ानोवाला युवक रात के समय तीन कोठरियों में अलग-अलग बंद कर दिए जाते थे। लेकिन कुछ दिनों तक दिन के समय विशेष पूछ-ताछ करने के लिए वे हम तीनों को एक साथ लाते थे।

पुलिस अधिकारी बेरार्डो से बहुत-सी बातें मालूम करना चाहता था। वह गुप्त छापाखाने का ठिकाना, मुद्रक का नाम, पता और यदि हो तो, इस काम से उसके अन्य साथियों की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहता था। लेकिन बेरार्डो कोई जवाब नहीं देता था। बेरार्डो यह बतलाने को कि मैं कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हूं, इतनी ज़ोर से ओठ काटता कि खून निकल आता था।

हर एक तफतीश पर उसकी हालत बुरी होती गई। पहली तफतीश के समय उसकी दाहिनी आंख के नीचे केवल एक नीला निशान था, लेकिन बाद-बाद में तो चोटों के कारण उसे पहचान सकना भी मुश्किल हो गया था। ओठ, नाक, कान, भौंह सर्वत्र चोट के निशान थे। लेकिन वह फिर भी नहीं बोलता था। वह पुलिस अधिकारी के एक भी सवाल का जवाब नहीं देता था। जब वह अपने फटे हुए ओंठ अधिक समय तक बंद नहीं रख सकता था तो पुलिस अधिकारी को अपनी

चुप्पी जताने के लिए ज़ोर से दांत खींच लेता था।

एक दिन मैं भी 'विशेष तफतीश' के लिए ले जाया गया। एक तहखाने में ले जाकर मेरे दोनों हाथ चमड़े के पट्टे से पीठ पीछे बांधकर मुझे लकड़ी की एक मेज़ पर पटक दिया। तब मानो मेरी पीठ पर आग-सी बरसने लगी, मानो मेरी पीठ में छेद बनाकर अंगारे उंड़ेले जाने लगे, मानो मेरी पीठ फाड़कर एक अथाह गड्ढा बनाया जाने लगा।

जब मुझे होश आया तो मेरे मुंह से ख़ून निकलकर मेज़ पर बह रहा था। मेरा गला जल रहा था, इसलिए मैं उसे जबान से चाट गया।

दूसरे दिन अवेज़ानोवाला वह आदमी छोड़ दिया गया।

मैं और बेरार्डो एक ही काल-कोठरी में एक और आदमी के साथ, जो पुलिस के भेदिए-सा लगता था, बंद कर दिए गए। मैंने अपना संदेह बेरार्डो के कान में कहा, लेकिन उसने जवाब दिया, "कोई हर्ज नहीं। मुझे जो कुछ कहना था, मैं पहले ही कह चुका हूं।"

लेकिन जब मैंने यह कहा कि अवेज़ानोवाला आदमी रिहा कर दिया गया है तो वह बोला, "हमें भी छुटकारे का कोई उपाय सोचना चाहिए। यदि जल्दी ही समाप्त हो जाए तो यह खेल बुरा नहीं है।"

खेल शुरू करना बहुत सरल था, लेकिन उसे समाप्त करना इतना सरल नहीं था।

बेरार्डो के कहने पर कि उसका पहलेवाला बयान झूठा था, पुलिस अधिकारी ने हंसते हुए यह कहकर उसे फिर काल-कोठरी में बंद कर दिया कि तुम जो कुछ जानते हो, सच-सच बतला दो, नहीं तो काफ़ी तकलीफ उठानी पड़ेगी।

उसी सांझ बेरार्डो फिर दूसरी तरह की विशेष तफतीश के लिए बुलाया गया। बेरार्डो की विशेष तफतीश बहुत आतंकमयी होती थी। बेरार्डो सामना करता था। वह बिना मारे मार खाने को तैयार नहीं था। उसके हाथ-पांव बांधने को आठ-नौ वार्डर लगते थे। उस सांझ उसने ऐसा बहाना किया मानो बिना मुक़ाबला किए ही यंत्रणा सह लेगा। लेकिन जब एक वार्डर झुका हुआ रस्सी से उसके घुटने बांध रहा था तो उसने उछलकर इतने ज़ोर से उसकी गुद्दी में दांत गड़ा दिए कि छुड़ाने के लिए बेरार्डो के जबड़ों पर दूसरे वार्डरों को हथौड़े चलाने पड़े। अंत में वे उसे हाथ-पांव से टांगकर इस तरह कोठरी में लाए जैसे सलीब पर से उतारने के बाद ईसा को ले गए थे।

दूसरे दिन सबेरे बेरार्डो ने मुझसे कहा, "वह बाहर है और मैं यहां भीतर।

आखिर तो वह हृदय से भी शहरवाला ही है। वह बाहर गुलछर्रे उड़ा रहा है और मैं उसके लिए यहां अपनी जान दे रहा हूं। मैं सब कुछ क्यों न कह दूं ? सब कुछ, जो मैं जानता हूं और जो मैं नहीं जानता और केवल ख़याल कर सकता हूं और इसके सिवा जिसका मैं ख़याल तक नहीं कर सकता, वह भी क्यों न कह दूं ?"

(जिस क़ैदी को हम भेदिया समझते थे, उसने अपने कान खड़े किए।) दूसरी बार जब हम पुलिस अधिकारी के सामने बुलाए गए तो मैंने सोचा कि बेरार्डो जेल से छूटने के लिए अवेज़ानोवाले आदमी ने उससे जो कुछ कहा था वह सब कह देगा। मैं तय नहीं कर पाया था कि उसका ऐसा करना उसके हक़ में बुद्धिमानी होगी या नहीं।

"तुम सच-सच बतलाने को तैयार हो ?" पुलिस अधिकारी ने उससे पूछा।

"हां।" बेरार्डो ने जवाब दिया।

पुलिस अधिकारी ने उसके सामने एक अख़बार किया, जिसमें बड़े-बड़े अक्षरों में यह शीर्षक था :

"बेरार्डो वॉयला ज़िंदाबाद !"

"गिरफ़्तार होने के दिन से आज तक पुलिस की ओर से तुम्हारे साथ जो बर्ताव हुआ, उसकी अच्छी जानकारी गुप्त-रूप से छपे हुए इस समाचार-पत्र में दी हुई है। जब कि तुम सब कुछ स्वीकार करने को तैयार हुए हो तो पहले यहीं से शुरू करो कि तुमने काल-कोठरी से इस गुप्त अख़बार को समाचार कैसे भेजे।"

बेरार्डो ने कोई जवाब नहीं दिया।

"इस अख़बार में कोई फांटामारा के बारे में बहुत कुछ है। एक नाले का बहाव बदलने का ज़िक्र है, एक चरागाह का उल्लेख है, फ्युसिनो समस्या का उल्लेख है, किसी त्योफिलो की आत्महत्या का उल्लेख है, और किसी एल्वीरा की मृत्यु का और दूसरी बहुत-सी बातों का उल्लेख है। इससे प्रकट होता है कि फांटामारा के किसी निवासी के सिवा इसे और कोई नहीं लिख सकता। अच्छा तो अब यह बतलाओ कि तुमने काल-कोठरी में इस गुप्त अख़बार को समाचार कैसे भेजे !"

बेरार्डो ने जवाब नहीं दिया। वह पुलिस अधिकारी के हाथवाले उस अख़बार की ओर, जिसमें उसका और एल्वीरा का नाम और बड़े शीर्षकों में 'बेरार्डो ज़िंदाबाद !' था, स्तब्ध होकर ताकने लगा।

अधिकारी ने बार-बार कहा, "मुंह तो खोल, भले आदमी !"

बेरार्डो ने कहा, "मैं नहीं बतला सकता। मर भले ही जाऊं।"

पुलिस अधिकारी उसे समझाने-बुझाने लगा। लेकिन बेरार्डो का मन कहीं और था। वह न तो पुलिस अधिकारी को ही देख रहा था और न सुन ही रहा था। वह इस आदमी की तरह जिसने दान-पत्र लिख दिया हो और मरने को तैयार हो, फिर अपनी काल-कोठरी में भेज दिया गया।

उस रात हम दोनों में कोई न सोया।

बेरार्डो ने हाथों से इस तरह सिर थाम रखा था मानों फटा ही जाता हो। वह सब कुछ बतला देने का निर्णय करता। तब बदल देता। फिर इरादा करता फिर बदल देता। वह हाथों में इस तरह सिर थामे था कि कहीं फट न जाए। मैं जेल में क्यों सड़ूं ? जेल में तीस वर्ष की उम्र में प्राण क्यों दूं ? विश्वास के लिए ? एक आदर्श के लिए ? लेकिन मैंने राजनीति में भाग लिया ही कब था ? इसी तरह कई घंटे बीत गए। बेरार्डो वॉयला अपने आप से और मुझसे बोलता रहा जबकि कोठरी में का तीसरा आदमी कान लगाकर प्रत्येक शब्द सुनता रहा। उसके अंदर एक संघर्ष हो रहा था।

वह कहने लगा, "मेरे विश्वासघात करने से सब कुछ नष्ट हो जाएगा। मेरे विश्वासघात से फांटामारा का सदा के लिए सर्वनाश हो जाएगा। यदि मैं विश्वासघात करता हूं तो फिर से ऐसा अवसर आने के लिए शताब्दियां लग जाएंगी। और यदि मुझे मरना पड़े ?...तो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए मरनेवाला मैं पहला किसान होऊंगा। दूसरे किसान के लिए, किसानों की एकता के लिए, मरनेवाला पहला किसान !"

यह उसकी सबसे बड़ी खोज थी। इन शब्दों ने मानो उसकी आंखों पर से पट्टी हटा दी। ऐसा लगा कि मानो हमारी कोठरी में एकाएक प्रकाश भर गया हो।

"एकता," वह कहने लगा। "एकता क्या है ? क्या तुमने कभी यह शब्द सुना था ? यह एक नया शब्द है। एकता। यह है—मिल-जुलकर रहना, सोचना और काम करना। यह है—शक्ति। यह है—स्वाधीनता। यह है—ज़मीन (बिना लगान की)। तुमने कभी यह शब्द सुना था ? कैसी सीधी-सी बात है ? तुम यह शब्द अवश्य ही फांटामारा ले जाना। यदि मैं मर जाऊं"—उसने मुझसे कहा—"तो तुम्हीं यह शब्द फांटामारा ले जाना। वहां तुम सबसे कहना एकता—सबसे पहले राफेल स्कबार्पोन से और तब दूसरे लोगों से, माइकेल ज़ोम्पा, जनरल बाल्डीसेरा, पांज़ियो

रनाक्च्यो और बाक़ी सबसे कहना। एकता। किसानों के आपसी द्वेष का अंत होना चाहिए। किसानों और मज़दूरों के बीच द्वेष का अंत हो। हममें केवल एक ही चीज़ की खामी है, वह है—एकता। बाक़ी सब अपने आप आ जाएगा।"

दो दिन बाद मैं पुलिस अधिकारी के सामने बुलाया गया, जो असाधारणतया नम्र था।

उसने मुझसे कहा, "कल रात बेरार्डो बॉयला ने आत्महत्या कर ली। निराशा में उसने अपनी कोठरी के जंगले से लटककर फांसी लगा ली। इसकी सत्यता में तो संदेह नहीं, परंतु कोई गवाह नहीं है। एक गवाह नितांत आवश्यक है। क्या तुम इस आशय के लेखी बयान पर हस्ताक्षर करने को तैयार हो कि कल रात बेरार्डो ने खुद फांसी लगा ली ? अगर हस्ताक्षर कर दोगे तो तुम अविलंब रिहा कर दिए जाओगे।

बेरार्डो के मरने का सुनते ही मैं फूट-फूटकर रोने लगा।

अधिकारी ने एक लिखित बयान तैयार किया और मैंने बिना पढ़े ही उस पर दस्तख़त कर दिए। तब मुझे पुलिस प्रधान के दफ़्तर में ले गए।

"क्या मरा हुआ बेरार्डो वॉयला तुम्हारा मित्र था ?" उसने मुझसे पूछा।

"जी हां।"

"क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक अक्सर आत्महत्या करने की सोचा करता था ?"

"जी हां।"

"क्या तुम स्वीकार करते हो कि हाल ही मृतक को प्रेम-संबंधी एक भयंकर निराशा का सामना करना पड़ा था ?"

"जी हां।"

"क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक और तुम एक ही कोठरी में बंद किए गए थे और जब तुम सो रहे थे, जंगले की एक छड़ से फांसी लगा ली थी ?"

"जी हां।"

तब उसने मुझसे एक लिखित बयान पर दस्तख़त करवाए और मुझे जाने दिया।

वहां से मैं 'न्याय-महल' की न्याय-मूर्ति के समक्ष पहुंचाया गया।

न्याय-मूर्ति ने मुझसे पूछा, "क्या मृतक बेरार्डो वॉयला तुम्हारा मित्र था ?"

"जी हां।"

"क्या तुम स्वीकार करते हो कि हाल ही में मृतक को प्रेम-संबंधी भयंकर

निराशा का सामना करना पड़ा था ?"

"जी हां।"

"क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक और तुम एक कोठरी में बंद किए गए और जब तुम सो रहे थे, जंगले की एक छड़ से फांसी लगा ली थी ?"

"जी हां।"

उसने भी मुझसे एक लिखित बयान पर दस्तख़त करवाए और मुझे जाने दिया।

दोपहर को मेरी रिहाई हुई। मैं पहरे में स्टेशन लाया गया और यात्रा करने के अनिवार्य परवाने देकर अवेज़ानोवाली रेलगाड़ी में बैठा दिया गया। अब बाक़ी का हाल तुम्हें मेरे पिताजी सुनाएंगे।"

"अभी मेरे लड़के ने तुमसे जो कहा उसमें से कुछ हम उसके फांटामारा आने से पहले ही भेदी आदमी से मालूम कर चुके थे।

किसानों का अपना पत्र—किसानों का पहला पत्र छापने के लिए भेदी आदमी से हमें मिले हुए छापने के पत्थर और दूसरे सामान के आसपास हम कोई पंद्रह-बीस आदमी जमा हुए ही थे कि ठीक उसी समय मेरा लड़का आ पहुंचा। एक लकड़ी की पेटी में, ढक्कन के नीचे लीथोग्राफ जैसा एक छापे का पत्थर और तेजाब और स्याही थी, जिनसे तुम सफ़ेद कोरे काग़ज़ पर कोई-सी भी हाथ की लिखावट छाप सकते थे और मनचाही प्रतियां निकाल सकते थे।

सड़क के बीच, सासनिरा की मेज़ पर वह छापे का पत्थर रखे, जैसा कि मैंने तुम्हें बतलाया, हम क़रीब पंद्रह आदमी उसके आस-पास जमा होकर पत्र की रूप-रेखा के बारे में बहस कर रहे थे।

वहां पोर्टाप्या का नायक था। उसकी लिखावट हम सबमें साफ़ थी और वही सफ़ेद कोरे काग़ज़ पर लिखनेवाला था। जनरल बाल्डीसेरा भी, जो व्याकरण और हिज्जे जानता था, वहां था। राफेल स्कार्पोन भी वहां था, जिसे भेदी आदमी ने छापे के पत्थर का उपयोग करना समझाया था। और वहां मेरे और सासनिरा के सिवा एंटोनियो ब्रास्योला, पास्केल सिपोला, सिरोज़ि रोंडा, विंसेंज़ो स्कॉर्ज़ा, ग्यासिंटो बार्लेट्टा ग्योवानी टेस्टोन, एनाक्लेटो दर्ज़ी, एल्बर्टो सेकोन और माइकेल ज़ोम्पा थे।

हमारी पहली बहस पत्र के नाम के बारे में थी।

पोर्टाप्या का नायक शहर के पत्रों का-सा नाम जैसे 'संदेश', आदि सुझाने लगा था; लेकिन राफेल स्कार्पोन ने उसे मंजूर नहीं किया।

उसने कहा, हम किसी की नक़ल नहीं करेंगे। यह अच्छी बात नहीं है।

उसने एक बहुत ही अच्छा अर्थ-गम्भीर नाम सुझाया, 'सत्य' और सबकी तरफ़ देखा।

लेकिन किसी ने उसे भी नहीं माना।

उसने कहा यह क्या है ? सत्य को कौन कम्बख्त जानता है ?

माइकेल ने जवाब दिया, "हम नहीं जानते, पर हम जानना चाहते हैं।"

स्कार्पोन ने पूछा, "और जब जान लोगे तो क्या करोगे—भाजी बनाओगे या शहद लगाकर चाटोगे ?"

यह था उसके बहस करने का ढंग।

जनरल बाल्डीसेरा को दूसरा अच्छा विचार सूझा : 'न्याय'।

स्कार्पोन ने कहा, "तुम तो पागल हो। क्या न्याय सदा हमारे विरुद्ध नहीं रहा है ?"

उसके कहने का मतलब समझने के लिए तुम्हें ध्यान में रखना चाहिए कि हमारे लिए हमेशा 'न्याय' का मतलब था कड़ाबीनवाले। न्याय के हाथों पड़ने का मतलब था, कड़ाबीनवालों के हाथों पड़ना। न्याय के हक में सहायता करने का अर्थ था कड़ाबीनवालों को ख़बर देनेवाले और उनके भेदिए बनना।

बूढ़े मोची ने अधीर होकर कहा, "मेरा मतलब सच्चे न्याय से है। सबके लिए समान न्याय।"

राकेल स्कार्पोन ने जवाब दिया, "वह तुम्हें स्वर्ग में मिलेगा।"

इसका कोई जवाब नहीं था। पत्र के नाम के लिए सासनिरा का प्रस्ताव था 'किसानों का शंखनाद', लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

स्कार्पोन ने कहा, "हम क्या करें ?"

नायक ने कहा, "हमें एक अच्छा-सा नाम खोज निकालना चाहिए। तुम्हीं कुछ सुझाओ।"

"मैं तो पहले ही कह चुका हूं—'हम क्या करें ?' "

उसके तीन बार दुहराने पर तब हमारी समझ में आया कि स्कार्पोन का पत्र के नाम के लिए प्रस्ताव ही वास्तव में 'हम क्या करें ?' था। हम विस्मय से एक दूसरे का मुंह देखने लगे।"

नायक ने कहा, "लेकिन यह कोई नाम नहीं है। हमें पत्र के ऊपर ख़ूबसूरत लिखावट में लिखने के लिए एक नाम चाहिए। समझे न ?"

"बहुत अच्छा, तो तुम्हारी ख़ूबसूरत लिखावट में पत्र के ऊपर की ओर लिखो

'हम क्या करें ?' और यह हो जाएगा तुम्हारा नाम।" स्कार्पोन ने कहा।

नायक ने आपत्ति की, "लेकिन यह एक हास्यास्पद नाम है। यदि हमारे पत्र की एक प्रति रोम जाएगी तो वे लोग हंसेंगे।"

राफेल स्कार्पोन का मिजाज बिगड़ गया। यह पत्र किसानों का पहला पत्र होनेवाला था, किसानों के लिए और किसानों द्वारा लिखा जानेवाला पहला किसान-पत्र। रोमवाले इसके बारे में कुछ भी सोचें, इस बात की उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी।

बाल्डीसेरा स्कार्पोन के विचारों से सहमत हो गया, इसलिए उसका प्रस्ताव मंजूर कर लिया गया।

इस बीच नायक अनिच्छा-पूर्वक बैठकर पत्र का नाम लिखने लगा। और हम बाक़ी के लोग पहले लेख के बारे में बहस करने लगे।

माइकेल ज़ोम्पा ने कहा, "पहला लेख होना चाहिए : 'उन्होंने बेरार्डो वायला को मार डाला।' इसे तुम सभी मंज़ूर करोगे।"

स्कार्पोन ने इसे मंजूर कर लिया, लेकिन वह इसे यों चाहता था :

"उन्होंने बेरार्डो वॉयला को मार डाला। हम क्या करें ?"

माइकेल ने बतलाया, " 'हम क्या करें ?' तो पहले ही अख़बार के नाम में आ गया है।"

स्कार्पोन ने कहा, "एक बार काफ़ी नहीं है। हमें इसे हर बार दुहराना चाहिए। यदि हम इसे नहीं दुहराते हैं, तो नाम व्यर्थ है। 'हम क्या करें ?' प्रत्येक लेख में दुहराया जाना चाहिए। 'उन्होंने हमारा पानी छीन लिया है। हम क्या करें ?' आया तुम्हारी समझ में ? 'पादरी हमारे मुर्दे नहीं दफ़नाता। हम क्या करें ?' 'वे क़ानून के नाम पर हमारी औरतों के साथ बलात्कार करते हैं। हम क्या करें ?' 'डान सर्कोस्टांज़ा दोगला है। हम क्या करें ?'

तब स्कार्पोन का भाव हमारी समझ में आया और हम राजी हो गए।

बेरार्डो के नाम के बारे में भी एक छोटी-सी बहस हुई। बाल्डीसेरा का कहना था कि वॉयला दो 'ल' से लिखा जाना चाहिए, पर माइकेल ज़ोम्पा के विचार से एक ही 'ल' काफ़ी था। लेकिन नायक ने यह कहकर बहस समाप्त कर दी कि वह इस खूबी से लिख सकता है जिसमें पढ़नेवालों की समझ में न आएगा कि एक 'ल' है या दो।

जैसे ही मैंने देखा कि अब किसी चीज़ पर बहस करना बाक़ी नहीं है तो मैं अपने लड़के के साथ एकांत में समय बिताने घर चला गया क्योंकि मैं उसे खो

ही चुका था और वह एक तरह से नया जन्म लेकर ही मेरे पास लौट आया था।

जब स्कार्पोन मेरे पास हमारे पत्र 'हम क्या करें ?' की करीब तीस प्रतियां लेकर आया तो रात काफ़ी बीत चुकी थी। वह चाहता था कि मैं उन्हें सैन बेनेदेतो, जहां मेरे कई परिचित थे, जाकर बांट आऊं। दूसरे किसान भी अगले दिन दूसरे-दूसरे गांवों में पत्र बांटने जा रहे थे। कुल मिलाकर कोई पांच सौ प्रतियां छापी गई थीं।

मेरी स्त्री का परिवार सैन बेनेदेतो में रहता है, और हम तीनों ने वहां जाकर जेल से अपने पुत्र की रिहाई का उत्सव मनाना तय किया। वहां जाकर ही हमारी रक्षा हुई।

दूसरे दिन दोपहर के बाद हम सैन बेनेदेतो के लिए रवाना हुए। पत्र बांटने में मुझे आधा घंटा लगा। उस रात हमने अपना ब्यालू सैन बेनेदेतो में ही किया और नौ बजते-बजते फांटामारा की ओर चल दिए। हम आधी दूर आए होंगे कि हमें दूर से गोलियों की आवाज़ सुनाई दी।

"आज कौन-से संत का दिन है ?" मेरी पत्नी ने यह जानने के लिए कि गोलियों की आवाज़ कौन-से गांव से आ रही है, पूछा।

वह कौन-से संत का दिन था, यह अनुमान करना कठिन था। संत लुई का दिन कभी से बीत गया था और संत एन के दिन को अभी काफ़ी देर थी।

मैंने कहा, "अरे, आवाज़ तो फांटामारा से आ रही है।"

स्थानीय शहर की ओर से आता हुआ मैनाफोर्नो का एक गाड़ीवान उसी क्षण उधर से गुजरा।

"हेई, तुम फांटामारावासी !" वह बिना रुके ही चिल्लाया, "फांटामारा में लड़ाई हो रही है।"

हम चलते ही गए।

"लड़ाई ? लड़ाई क्यों ?" हमने एक दूसरे से पूछा।

"फांटामारा के लोगों की आपस में एक दूसरे से लड़ाई ? यह असंभव है।" हमने एक दूसरे से कहा।

तो क्या ठेकेदार फांटामारा के लोगों से युद्ध कर रहा है ? पर क्यों ?

जब-तब गोलियां रुक जाती थीं और फिर चलने लगती थीं। जैसे-जैसे हम समीप पहुंचते गए, साफ़ मालूम पड़ने लगा कि गोलियों की आवाज़ फांटामारा से आ रही है और वह आवाज़ राइफलों की थी।

"हम क्या करें ?" हमने एक दूसरे से पूछा।

यही प्रश्न स्कार्पोन ने पूछा था। "हम क्या करें ?"

प्रश्न पूछने की अपेक्षा उत्तर देना कहीं कठिन था। साथ ही हम चलते भी गए।

पेसिना और फांटामारा की सड़कों के चौराहे पर हमें पास्केल सिपोला मिला।

"तुम कहां जा रहे हो ? फांटामारा ? तुम पागल तो नहीं हो ?" पैसिना की ओर भागकर जाते हुए उसने चिल्लाकर हमसे कहा।

हम पास्केल सिपोला के पीछे-पीछे भागने लगे।

"लेकिन फांटामारा में क्या हो रहा है ? ये गोलियां क्यों चल रही हैं ?" मैं उसके पीछे चिल्लाया।

उसने जवाब दिया, "यह लड़ाई है ! यह लड़ाई है। किसानों के ख़िलाफ़ लड़ाई है—अख़बार के ख़िलाफ़ लड़ाई है।"

"दूसरे सब लोग क्या हुए ?"

"जो भाग सके, भाग गए। जो बचकर निकल सके, बच निकले।"

सिपोला ने बिना रुके जवाब दिया।

मेरे लड़के ने पूछा, "क्या स्कार्पोन बच निकला ?"

सिपोला ने क्रास का चिह्न बनाते हुए कहा, "परमात्मा उसकी आत्मा को शांति दे।"

"क्या बेनेर्डी सेंटो बच निकला ?"

सिपोला ने क्रास का चिह्न बनाते हुए कहा, "परमात्मा उसकी आत्मा को शांति दे।"

"और पॉज़ियो पिलाटो ?"

"वह पहाड़ों के ऊपर निकल भागा।"

"और माइकेल ज़ोम्पा ?"

"उसने ओर्ठोना की सड़क पकड़ी।"

"और जनरल बाल्डीसेरा ?"

"परमात्मा उसकी आत्मा को शांति दे।"

इसी समय हमने घोड़ों के टापों की आवाज़ अपनी ओर आती सुनी। संभवतः कड़ाबीनवाले पेसीना से फांटामारा जा रहे थे।

बचने के लिए हम खेतों में घुस गए। अंधेरे में पास्केल सिपोला कहीं खो गया। उसके बांद हमने आज तक उसके बारे में नहीं सुना।

और न हमने किन्हीं दूसरों के बारे में ही—जो मर गए थे या जो भाग निकले

थे, और न हमने हमारे मकान और न हमारी ज़मीन के बारे में ही कुछ सुना।

अब हम यहां हैं। भेदी आदमी ने देश से निकलने में हमारी सहायता की। लेकिन हम अधिक समय तक विदेश में भी नहीं रह सकते। हम क्या करें ?

इतने लंबे संघर्ष और व्यथा और आंसुओं के बाद, चोटों और रक्तपातों, घृणा और निराशा के बाद हम क्या करें ? आख़िर क्या करें ?

●●●

विश्व कथा-साहित्य

विश्व कथा-साहित्य देश में पहली बार पुस्तक प्रकाशन जगत में क्रांति का सूत्रपात कर रहा है । इसके अंतर्गत निरंतर सुनियोजित ढंग से प्रकाशित विश्व के महान् लेखकों के अमर उपन्यास और कहानियों के साथ उनकी प्रेरक जीवन-कथा व उच्चस्तरीय कला-पक्ष सहित ये कृतियां प्रत्येक पाठक व पुस्तकालय की अमूल्य निधि बन जाएंगी ।

नाच के बाद (रूसी) **टॉल्सटॉय** 45/-

इस पुस्तक में टॉल्सटॉय के दो विश्व चर्चित उपन्यास 'दो हुस्सार' और 'इवान इल्यीच की मृत्यु' तथा एक कहानी 'नाच के बाद' संकलित हैं । टॉल्सटॉय दुनिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कथा-साहित्यकार थे । इनकी बराबरी का कथा-शिल्पी कोई नहीं ।

कूप और काल (अमरीकी) **एडगर एलन पो** 45/-

अमेरिका के महान् कथा-शिल्पी एडगर अलन पो की विश्व चर्चित आठ चुनी हुई कहानियों का संकलन । प्रत्येक कहानी अद्भुत रहस्य और रोमांच में डूबी और अचरज में डाल देने वाली ।

एक अनजान औरत का ख़त (जर्मनी) **स्टीफ़ेन ज़्विग** 45/-

विश्व के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'ए लेटर फ्रॉम एन अननोन वूमेन' के हिंदी रूपांतर 'एक अनजान औरत का ख़त' के साथ दो अन्य बहुचर्चित कथा-रचनाएं संकलित हैं । जर्मनी के सबसे अधिक पढ़े जाने वाले विशिष्ट रचनाकार का अनूठा संकलन ।

इंसान या शैतान (ब्रिटिश) **स्टीवेंसन** 45/-

विश्व विख्यात उपन्यास 'डॉ. जेकिल एण्ड मिस्टर हाइड' के हिंदी रूपांतर के साथ दो अन्य लघु उपन्यास । 'इंसान या शैतान' सदियों तक याद रखी जानेवाली अमर कृति ।

राशोमोन (जापानी) **रियूनोसुके अकूतागावा** 45/-

इस पुस्तक में 'राशोमोन' जैसी विश्व चर्चित कहानी के अतिरिक्त पांच अन्य सुप्रसिद्ध कहानियां तथा एक अनूठा लघु उपन्यास 'काप्पा' संकलित हैं । 'राशोमोन' पर विश्व विख्यात फिल्म बनी और पुरस्कृत भी हुई ।

हीरे का हार (फ़्रांस) **मोपासां** 50/-

फ़्रांस के सर्वाधिक प्रसिद्ध कथाकार मोपासां की विश्व चर्चित कहानी 'हीरे का हार' तथा एक संपूर्ण मार्मिक उपन्यास 'एक औरत की ज़िंदगी' । मोपासां, जिनकी अपनी ज़िंदगी भी मर्मस्पर्शी थी ।

रिक्शावाला (चीनी) **लाओ श** 60/-

चीन के महान् उपन्यासकार लाओ श का सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय उपन्यास । हाथ-रिक्शा खींचने और सवारियां ढोने पर विवश एक कम उम्र रिक्शावाले की करुण कथा ।

एमेके : एक रूहानी प्रेम-गाथा (चेक) **जोसेफ़ श्कवोरेस्की** 40/-

चेक रिपब्लिक के सर्वाधिक विवादास्पद लेखक जोसेफ़ श्कवोरेस्की का विश्व चर्चित उपन्यास । एक जिप्सी युवती की अद्‌भुत प्रेम-गाथा, जो क्लासिक गुणों से सम्पन्न है ।

वासना (रूसी) **दॉस्तोएवस्की** 45/-

विश्व के शिखर उपन्यासकार दॉस्तोएवस्की की लेखनी से उपजा यादगार उपन्यास । इसे पढ़ना वास्तव में ऐसे कुलीन घरानों की ज़िंदा तस्वीरें देखना है, जो हर तरह से अपने स्वार्थों और वासनाओं में डूबे रहते हैं ।

अपनी छाया (ब्रिटिश) **ऑस्कर वाइल्ड** 45/-

अंग्रेज़ी साहित्य में शेक्सपीयर के बाद सबसे बड़े रचनाकार ऑस्कर वाइल्ड का दुनिया-भर में चर्चित अकेला उपन्यास, जो मनुष्य के पाप के बारे में साबित करता है कि उसकी छाया कभी-न-कभी अवश्य पड़ती है ।

यौवन की आंधी (फ़्रांस) **पियरे लुई** 45/-

फ़्रांस के अन्यतम रसवादी लेखक का उपन्यास, जिसने तमाम जगह हलचल मचा दी । ऐलेक्ज़ेंड्रिया की एक बेहद हसीन वेश्या के जीवन की मोहक कहानी, जिसकी बुनावट बिल्कुल गाथाओं की तरह है ।

छलना (रूसी)	गोर्की	45/-

कथा-साहित्य के पितामह की एक अमर रचना 'छलना'। मछुआरों की बस्ती की एक सुंदर युवती की अनूठी कहानी, जो एक बूढ़े आदमी के साथ रहती है, उसके बेटे को छलती है, पर अंत में सारे नाते तोड़ किसी और के साथ चली जाती है।

मेरा पहला प्यार (रूसी)	तुर्गनेव	45/-

दुनिया के प्रथम श्रेणी के उपन्यासकार तुर्गनेव का प्रेम उपन्यास है 'मेरा पहला प्यार'। इसमें एक और मार्मिक प्रेम कथा है 'आस्या'। पाठकों के लिए दो कालजयी कृतियां।

छोटा राजकुमार (फ्रांस)	आंत्वान द सेंतेक्ज़्युपेरी	50/-

बीसवीं शताब्दी के फ्रांस के सर्वाधिक सम्मानित लेखक की अमर रचना। लेखक द्वारा बनाए 46 चित्र। विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनूदित। फ्रेंच सरकार द्वारा लेखक की रचनाओं की विशेष कापीराइट सुरक्षा।

पुराना नौकर (युगोस्लाव)	इवान चैंकर	50/-

पूर्व युगोस्लाविया के आधुनिक साहित्य के प्रमुख रचनाकार का अमर उपन्यास 14 चित्रों सहित। न्याय पाने के लिए बूढ़े नौकर यर्नै की अद्‌भुत संघर्ष कथा।

इग्नाज़ियो सिलोनी

फ़ांटामारा

इटली के अन्यतम उपन्यासकार इग्नाज़ियों सिलोनी ने आरंभ से ही आम आदमी की तकलीफ़ और उसके संघर्ष के लिए आवाज़ भी उठाई और उनके बारे में लिखा भी। 'फ़ांटामारा' इसी क्रम की कृति है, जो विश्व क्लासिक का दर्जा रखती है।

'फ़ांटामारा' एक गांव था। बहुत पुराने ढंग का। जहां ग़रीबी और बेचारगी चीख़ रही थी। खंडहरनुमा गिरजाघर के चारों ओर पुराने, बेडौल, आंधी-पानी से पिटे कवेलू की छतों वाले टूटे-फूटे झोंपड़े। इनमें लोग और जानवर एक साथ रहते गिजबिजाते थे। वहां एक राजकुमार ने शोषण और अत्याचार का जंजाल फैला रखा था। कुछ किसान तो गांव छोड़ कर विदेश ही चले गए। बाक़ी लोगों के लिए वही कड़ी मेहनत, अध-पेट रोटी और शरीर पर चिथड़े। कभी कुछ नहीं बदलता था वहां, पर एक दिन परिवर्तन की धारा फूट पड़ी, फिर क्या हुआ, इसे जानिए 'फ़ांटामारा' के पृष्ठों से।

सिलोनी लेखक ही नहीं सक्रिय राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने इटली में फ़ासीवाद का जमकर विरोध किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वापिस इटली लौट आए और राजनैतिक पार्टी के नेता चुने गए।

[redacted]

48/-

हिन्द पॉकेट बुक्स

ISBN 81-216-0459-1